कामन्दकीय नीतिसार - इन्द्रियजयप्रकरणम्

(Kāmandakīya Nītisāra – Indriyajayaprakaraṇam)



लेखक: Anand Singh Dhami

प्रस्तुतकर्ता: *Indian Philosophy & Ethics*

विषय क्षेत्र: भारतीय दर्शन, भारतीय नीतिशास्त्र, राजधर्म, सुशासन, नेतृत्व अध्ययन, राज्यशास्त्र, भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिक दर्शन एवं सार्वजनिक प्रशासन।

संक्षिप्त परिचय: यह लेख कामन्दकीय नीतिसार के प्रथम सर्ग "इन्द्रियजयप्रकरणम्" का समालोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें मूल संस्कृत श्लोक, *IAST* लिप्यंतरण, शब्दार्थ, भावार्थ तथा आधुनिक संदर्भ सहित विश्लेषण दिया गया है। यह सामग्री विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों तथा भारतीय दर्शन, नेतृत्व एवं शासन अध्ययन में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए तैयार की गई है।

ऑनलाइन लेख: *https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/07/kamandak-nitisara-indriyajaya.html*

© Anand Singh Dhami | Indian Philosophy & Ethics | Educational & Research

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग १ भारतीय राजनीति, नेतृत्व, आत्म-अनुशासन और सुशासन का ऐसा अद्वितीय ग्रंथ है, जिसमें केवल राजाओं के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन-प्रबंधन के गहरे सिद्धांत दिए गए हैं। यदि आप जानना चाहते हैं कि आत्म-विजय से राष्ट्र-विजय तक का मार्ग क्या है, तो यह प्रथम सर्ग एक संपूर्ण मार्गदर्शक है। आचार्य कामन्दक ने अपने गुरु चाणक्य के विशाल 'अर्थशास्त्र' को सरल, सुंदर और याद रखने योग्य पद्यों (श्लोकों) में ढाला, ताकि व्यस्त राजा और प्रशासक इस ज्ञान को सहजता से आत्मसात कर सकें।

आज के दौर में नेतृत्व, प्रशासन और आत्म-प्रबंधन की अवधारणाएँ बिखरी हुई हैं। लोग सफलता के पीछे भागते हैं, परंतु संतुलन, नैतिकता और आत्म-अनुशासन को भूल जाते हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्तिगत जीवन में असंतोष, सामाजिक संबंधों में दरार और आध्यात्मिक पतन होता है।

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग १ हमें वही मार्ग दिखाता है जो हजारों वर्ष पहले भारतीय ऋषियों ने खोजा था – आत्म-जय से लेकर राज्य-जय तक का पूरा सफर। हम कामन्दकीय नीतिसार के प्रथम सर्ग (इन्द्रियजयप्रकरणम्) के श्लोक १-६० का क्रमवार अध्ययन, मूल पाठ, IAST लिप्यंतरण, सरल अर्थ और गहन विश्लेषण करेंगे। साथ ही, इन सिद्धांतों को आज के पारिवारिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन से जोड़कर देखेंगे।

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग १ का यह विस्तृत अध्ययन हमें भारतीय राजनीति शास्त्र के उस स्वर्णिम काल में ले जाता है, जब नीति, न्याय और आत्म-अनुशासन सुशासन के आधारस्तंभ थे। आचार्य कामन्दक ने अपने गुरु चाणक्य के विशाल 'अर्थशास्त्र' को सरल, सुंदर और यादरखने योग्य पद्यों (श्लोकों) में ढाला, ताकि व्यस्त राजा और प्रशासक इस ज्ञान कोसहजता से आत्मसात कर सकें। इस महा-लेख में हम इस अमर ग्रंथ के प्रथम सर्ग, जिसे 'इन्द्रियजयप्रकरणम्' भी कहा जाता है, के श्लोक १-६० का वैचारिक प्रवाह, मूल पाठऔर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे।

ग्रंथ परिचय – एक नज़र में

विषय	विवरण
ग्रंथ	कामन्दकीय नीतिसार
सर्ग	प्रथम – इन्द्रियजयप्रकरणम्
कुल श्लोक	60
रचयिता	आचार्य कामन्दक
रचनाकाल	गुप्त काल (लगभग 5वीं–7वीं शताब्दी ई.)
मूल आधार	आचार्य चाणक्य का अर्थशास्त्र
शैली	पद्य (मुख्यतः अनुष्टुप् छंद)
मुख्य विषय	इन्द्रियजय, नेतृत्व, राज्यशास्त्र, सप्तांग सिद्धांत, त्रिवर्ग, षड्रिपु, आत्म-अनुशासन

विषय	विवरण
आधुनिक प्रासंगिकता	Leadership, Governance, Public Administration, Self-Management, Emotional Intelligence
भाषा	संस्कृत (मूल), हिंदी (अनुवाद एवं व्याख्या)
पढ़ने का समय	लगभग 25 मिनट
उपयुक्त पाठक	विद्यार्थी, शोधार्थी, UPSC अभ्यर्थी, नेतृत्व एवं नीति में रुचि रखने वाले पाठक

इस लेख में आप क्या सीखेंगे

- **सप्तांग राज्य** – शासन के 7 अंग और उनका आधुनिक समकक्ष
- **इन्द्रियजय** – आत्म-नियंत्रण का विज्ञान और मन पर विजय
- **त्रिवर्ग** – धर्म, अर्थ और काम का संतुलन
- **षड्रिपु** – 6 आंतरिक शत्रु और उनसे बचने के उपाय
- **20 गुण** – एक आदर्श नेता के गुण (बौद्धिक + नैतिक)
- **निर्मनस्कता** – मानसिक शांति और एकाग्रता का मार्ग
- **आधुनिक उपयोग** – Leadership, Mindfulness, Financial Management, Governance

मंगलाचरण और गुरु चाणक्य की महिमा – क्यों है यह इतना महत्वपूर्ण?

कामन्दकीय नीतिसार के मंगलाचरण में क्या है?

कामन्दकीय नीतिसार के मंगलाचरण में आचार्य कामन्दक न्यायप्रिय राजा की वंदना करते हैं, फिर अपने गुरु विष्णुगुप्त (चाणक्य) की महिमा का वर्णन करते हैं। वे चाणक्य के अद्वितीयज्ञान, स्वावलंबन और नंद वंश को नष्ट कर चंद्रगुप्त मौर्य को साम्राज्य दिलाने के ऐतिहासिककार्यों का स्मरण करते हैं। यह गुरु-परंपरा के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

ग्रंथ की शुरुआत आचार्य कामन्दक अपने आराध्य और गुरु चाणक्य (विष्णुगुप्त) की स्तुति औरउनके महान ऐतिहासिक कार्यों के स्मरण के साथ करते हैं। यहकेवल परंपरा नहीं, बल्कि एकगहरा संदेश है – किसी भी ज्ञान-परंपरा का आधार उसके गुरुओं के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धाहै।

क्या आप जानते हैं? कामन्दक का ऐतिहासिक काल निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। अधिकांशविद्वान उन्हें गुप्त काल (लगभग ५वीं-७वीं शताब्दी) का मानते हैं, जबकि कुछ उन्हें चाणक्य कासमकालीन मानते हैं। यह लेख ऐतिहासिक दावों से बचते हुए वैचारिक विश्लेषण पर केंद्रित है।

ईश्वर और न्यायप्रिय राजा की वंदना – क्या संदेश छिपा है?

मूल पाठ (संस्कृत):

यस्य प्रभावाद् भुवनं शाश्वते पथि तिष्ठति ।

देवः स जयति श्रीमान् दण्डधारो महीपतिः ॥१॥

IAST:

yasya prabhāvād bhuvanaṃ śāśvate pathi tiṣṭhati |

devaḥ sa jayati śrīmān daṇḍadhāro mahīpatiḥ ||1||

शब्दार्थ:

- **यस्य** – जिसका
- **प्रभावात्** – प्रभाव / सामर्थ्य / न्याय-व्यवस्था के कारण
- **भुवनम्** – यह संसार / समाज / राज्य
- **शाश्वते पथि** – सनातन (शाश्वत / स्थायी / मर्यादित) मार्ग पर
- **तिष्ठति** – स्थिर रहता है / अडिग रहता है
- **देवः** – देवता के समान पूजनीय
- **सः** – वह (राजा)
- **जयति** – विजयी होता है
- **श्रीमान्** – ऐश्वर्य / समृद्धि / लक्ष्मी से युक्त
- **दण्डधारः** – न्याय-दण्ड धारण करने वाला (शासक)
- **महीपतिः** – पृथ्वी का स्वामी, राजा

भावार्थ: नीतिसार के अनुसार, कामन्दक इस श्लोक के माध्यम से एक सच्चे राजा केस्वरूप का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि जिस राजा के प्रभाव और न्याय व्यवस्था के कारणसमाज सुव्यवस्थित, सुरक्षित और मर्यादित रहता है, वह राजा साक्षात् ईश्वर के समानपूजनीय है।

'दण्डधारः' शब्द विशेष महत्व रखता है – यह केवल दंड देने की व्यवस्था नहीं, बल्कि अनुशासन, मर्यादा, न्याय और सुरक्षा की समग्र अवधारणा है। जब राजा अपने दण्ड (अनुशासन/न्याय) को धारण करता है, तो समाज शाश्वत मार्ग पर चलता है।

आधुनिक संदर्भ: आज के लोकतांत्रिक युग में भी यह सिद्धांत उतना ही प्रासंगिक है। एकन्यायपूर्ण शासन व्यवस्था, पारदर्शी न्यायपालिका और सक्षम प्रशासन ही समाज कोअराजकता, अपराध और भ्रष्टाचार से बचा सकता है।

आचार्य चाणक्य के वंश और ज्ञान का परिचय – कौन थे ये महान विद्वान?

मूल पाठ (संस्कृत):

वंशे विशालवंश्यानाम् ऋषीणाम् इव भूयसाम् ।

अप्रतिग्राहकाणां यो बभूव भुवि विश्रुतः ॥२॥

जातवेदा इवार्चिष्मान् वेदान् वेदविदां वरः ।

योऽधीतवान् सुचतुरश् चतुरोऽप्य् एकवेदवत् ॥३॥

IAST:

vaṃśe viśālavaṃśyānām ṛṣīṇām iva bhūyasām |

apratigrāhakāṇāṃ yo babhūva bhuvi viśrutaḥ ||2||

jātavedā ivārciṣmān vedān vedavidāṃ varaḥ |

yo'dhītavān sucaturaś caturo'py ekavedavat ||3||

शब्दार्थ (श्लोक २-३):

- **वंशे विशालवंश्यानाम्** – विशाल और महान वंश वालों के
- **ऋषीणाम् इव** – ऋषियों के समान
- **अप्रतिग्राहकाणाम्** – जो दान / भेंट स्वीकार नहीं करते (स्वावलंबी, निष्काम)
- **यः बभूव भुवि विश्रुतः** – जो पृथ्वी पर प्रसिद्ध हुए
- **जातवेदाः इव अर्चिष्मान्** – अग्निदेव के समान तेजस्वी
- **वेदान् वेदविदां वरः** – वेदज्ञों में श्रेष्ठ
- **अधीतवान् सुचतुरः** – अत्यंत कुशलता से अध्ययन किया
- **चतुरः अपि एकवेदवत्** – चारों वेदों को ऐसे पढ़ा मानो एक ही वेद हो

भावार्थ: नीतिसार के अनुसार, कामन्दक अपने गुरु चाणक्य के व्यक्तित्व का अत्यंतउत्कृष्ट चित्रण करते हैं। 'अप्रतिग्राहक' शब्द विशेष महत्व रखता है – चाणक्य स्वयं कभीकिसी से भेंट या दान नहीं लेते थे, वे पूर्णतः स्वावलंबी और निष्पक्ष थे।

यही कारण था कि वे नंद राजा के दरबार से अपमानित होकर निकल गए और बिना किसीसंसाधन के अकेले अपनी बुद्धि के बल पर चंद्रगुप्त को सम्राट बनाया। चारों वेदों को एकसमान रूप से आत्मसात करने की उनकी क्षमता उनकी असाधारण बुद्धि का प्रमाण है।

आधुनिक संदर्भ: आज के युग में *'स्वावलंबन'* और 'निष्पक्षता' के ये गुण दुर्लभ होते जा रहे हैं। एक सच्चा नेता वही होता है जो स्वयं पर निर्भर हो, किसी का दबाव या स्वार्थ न रखता हो, और अपनी बुद्धि व क्षमता से लक्ष्य प्राप्त करता हो।

नंद वंश का नाश और चंद्रगुप्त का राज्याभिषेक – कैसे हुआ यह ऐतिहासिक परिवर्तन?

मूल पाठ (संस्कृत):

यस्याभिचारवज्रेण वज्रज्वलनतेजसः ।

पपातामूलतः श्रीमान् सुपर्वा नन्दपर्वतः ॥४॥

एकाकी मन्त्रशक्त्या यः शक्त्या शक्तिधरोपमः।

आजहार नृचन्द्राय चन्द्रगुप्ताय मेदिनीम् ॥५॥

IAST:

yasyābhicāravajreṇa vajrajvalanatejasaḥ |

papātāmūlataḥ śrīmān suparvā nandaparvataḥ ||4||

ekākī mantrasaktyā yaḥ śaktyā śaktidharopamaḥ |

ājahāra nṛcandrāya candraguptāya medinīm ||5||

शब्दार्थ:

- **अभिचारवज्रेण** – अभिचार (नीति / मंत्र / योजना) रूपी वज्र से
- **पपात अमूलतः** – जड़ से गिरा दिया / उखाड़ दिया
- **श्रीमान् सुपर्वा नन्दपर्वतः** – वैभवशाली नंद वंश
- **एकाकी** – अकेले
- **मन्त्रशक्त्या** – मंत्र / योजना / बुद्धि की शक्ति से
- **शक्तिधरोपमः** – कार्तिकेय के समान पराक्रमी
- **नृचन्द्राय** – मनुष्यों में चंद्रमा के समान श्रेष्ठ
- **चन्द्रगुप्ताय** – राजा चंद्रगुप्त मौर्य को
- **मेदिनीम्** – पूरी पृथ्वी / सम्पूर्ण राज्य

भावार्थ: ये दो श्लोक भारतीय इतिहास के सबसे नाटकीय और प्रेरणादायक अध्यायों में से एक का वर्णन करते हैं। नीतिसार के अनुसार, आचार्य चाणक्य ने अकेले अपनी बुद्धि और नीति-कौशल के बल पर पूरे नंद साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंका और चंद्रगुप्त को सम्राट बनाया।

'एकाकी' शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है – चाणक्य के पास कोई सेना नहीं थी, कोई खजाना नहीं था। केवल उनकी बुद्धि, योजना, संकल्प और नीति-शक्ति थी। यह दिखाता है कि सच्ची शक्ति बाहरी संसाधनों में नहीं, बल्कि आंतरिक क्षमता में होती है।

क्या आप जानते हैं? 'एकाकी' शब्द इस बात का प्रतीक है कि एक व्यक्ति अपनी बुद्धि, योजना और नेतृत्व क्षमता से पूरे संगठन, समाज या देश को बदल सकता है। महात्मा गाँधी, मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला – सभी अकेले शुरू हुए, पर अपने विचारों, सत्यनिष्ठा और साहस के बल पर उन्होंने विशाल आंदोलन खड़े कर दिए।

आचार्य विष्णुगुप्त को साष्टांग नमन – क्यों पूजनीय हैं ये गुरु?

मूल पाठ (संस्कृत):

नीतिशास्त्रामृतं श्रीमान् अर्थशास्त्रमहोदधेः ।

य उद्दध्रे नमस् तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे ॥६॥

IAST:

nītiśāstrāmṛtaṃ śrīmān arthaśāstramahodadheḥ |

ya uddadhre namas tasmai viṣṇuguptāya vedhase ||6||

शब्दार्थ:

- **नीतिशास्त्रामृतम्** – नीतिशास्त्र रूपी अमृत
- **अर्थशास्त्रमहोदधेः** – अर्थशास्त्र रूपी महान महासागर से
- **यः उद्दध्रे** – जिन्होंने (उस अमृत को) निकाला / उद्धृत किया
- **विष्णुगुप्ताय** – आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य) को
- **वेधसे** – सृष्टिकर्ता (ब्रह्मा) के समान

भावार्थ: कामन्दक अपने गुरु चाणक्य को 'वेधस' (ब्रह्मा) के समान कहते हैं – जैसे ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की, वैसे ही चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' रूपी महासागर का मंथन करके 'नीतिशास्त्र' रूपी अमृत निकाला। यह श्लोक गुरु-शिष्य परंपरा की गहराई और कृतज्ञता का प्रतीक है।

इस भाग की मुख्य सीख

गुरु-परंपरा ज्ञान की नींव है – किसी भी ज्ञान-परंपरा का आधार गुरु के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा है।

स्वावलंबन सबसे बड़ा बल है – चाणक्य ने अकेले अपनी बुद्धि से साम्राज्य स्थापित किया; सच्ची शक्ति बाहरी संसाधनों में नहीं, बल्कि आंतरिक क्षमता में होती है।

न्याय ही राज्य की आत्मा है – जो राजा न्यायपूर्ण शासन करता है, वह ईश्वर के समान पूजनीय होता है।

ग्रंथ का उद्देश्य और सुशासन के स्तंभ – क्या है इसकी प्रासंगिकता?

कामन्दकीय नीतिसार का मुख्य उद्देश्य क्या है?

कामन्दकीय नीतिसार का मुख्य उद्देश्य चाणक्य के विशाल अर्थशास्त्र को सरल, संक्षिप्त और स्मरणीय श्लोकों में प्रस्तुत करना है। यह व्यस्त शासकों के लिए एक 'नीति-सार' (Executive Summary) के रूप में कार्य करता है, जो छोटा होते हुए भी गहरे अर्थ से युक्त है। इसमें नेतृत्व, सुरक्षा और अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत समाहित हैं।

यहाँ कामन्दक यह समझाते हैं कि व्यस्त राजाओं के लिए इस संक्षिप्त नीति की आवश्यकता क्यों है और एक योग्य नेता समाज के लिए क्यों अनिवार्य है।

संक्षिप्त और गहरे अर्थ का ग्रंथ – क्यों चुनी गई यह शैली?

मूल पाठ (संस्कृत):

दर्शनात् तस्य सुदृशो विद्यानां पारदृश्वनः ।

राजविद्याप्रियतया सङ्क्षिप्तग्रन्थम् अर्थवत् ॥७॥

IAST:

darśanāt tasya sudṛśo vidyānāṃ pāradṛśvanaḥ |

rājavidyāpriyatayā saṅkṣiptagrantham arthavat ||7||

शब्दार्थ:

- **दर्शनात्** – दर्शन करने से / अध्ययन करके
- **तस्य** – उस (आचार्य चाणक्य) के
- **सुदृशः** – उत्तम दृष्टि वाले / सूक्ष्मदर्शी विद्वान
- **विद्यानाम्** – विद्याओं / शास्त्रों (राजनीति, अर्थशास्त्र आदि) की
- **पारदृश्वनः** – पारंगत / जिसने विद्याओं के गहनतम रहस्य को पार कर लिया हो
- **राजविद्याप्रियतया** – राजविद्या (शासन-कला / राजनीति) के प्रति विशेष प्रेम / अनुराग होने के कारण
- **सङ्क्षिप्तग्रन्थम्** – संक्षिप्त (लघु) ग्रंथ
- **अर्थवत्** – अर्थयुक्त / सारगर्भित / अत्यंत महत्वपूर्ण अर्थों से भरपूर

भावार्थ: कामन्दक यहाँ 'टू द पॉइंट' (सारगर्भित) बात करने की वकालत करते हैं। नीतिसार के अनुसार, उन्होंने व्यस्त शासकों के लिए एक ऐसा 'नीतिसार' तैयार किया जो छोटा (सङ्क्षिप्त) है, लेकिन ज्ञान से भरपूर (अर्थवत्) है। यह 'कम में अधिक' का सिद्धांत है।

आधुनिक संदर्भ: आज के व्यस्त जीवन में हम सभी के पास समय सीमित है। एक अच्छा नेता, शिक्षक या संचारकर्ता वही है जो जटिल विषय को सरल, संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सके।

राजनीति के दो मुख्य स्तंभ – उपार्जन और पालन क्या हैं?

मूल पाठ (संस्कृत):

उपार्जने पालने च भूमेर् भूमीश्वरं प्रति ।

यत् किञ्चिद् उपदेक्ष्यामो राजविद्याविदां मतम् ॥८॥

IAST:

upārjane pālane ca bhumer bhūmīśvaraṃ prati |

yat kiñcid upadekṣyāmo rājavidyāvidāṃ matam ||8||

शब्दार्थ:

- **उपार्जने** – अर्जन करने में / संसाधन जुटाने में
- **पालने** – पालन / संरक्षण / विकास करने में
- **भूमेः** – पृथ्वी / राज्य की
- **भूमीश्वरम्** – राजा / भू-स्वामी
- **प्रति** – के प्रति / के लिए
- **यत् किञ्चित्** – जो कुछ
- **उपदेक्ष्यामः** – उपदेश देंगे / बताएंगे
- **राजविद्याविदाम्** – राजविद्या के ज्ञाताओं का
- **मतम्** – मत / सिद्धांत

भावार्थ: कामन्दक राजनीति के दो मूलभूत आयामों को स्पष्ट करते हैं – *'उपार्जन'* (अर्जन/अधिग्रहण) और 'पालन' (संरक्षण/विकास)। कोई भी राज्य, संगठन, व्यवसाय या परिवार इन दोनों कार्यों के बिना नहीं चल सकता। पहले संसाधन अर्जित करो (उपार्जन), फिर उनकी रक्षा, संरक्षण और विकास करो (पालन)।

आधुनिक संदर्भ: परिवार में 'उपार्जन' का अर्थ है कमाना, आय के स्रोत बनाना, घर बनाना। 'पालन' का अर्थ है परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार और खुशी का ध्यान रखना। दोनों का संतुलन ही सफल और सुखी जीवन की कुंजी है।

नेतृत्व की अनिवार्यता – बिना नेता की नाव क्यों डूब जाती है?

क्या आप जानते हैं? नीतिसार के अनुसार, प्राकृतिक अकाल से भी ज्यादा भयानक 'प्रशासनिक अकाल' या 'अराजकता' होती है। समृद्धि बढ़ाने (वर्धन) की तुलना में सुरक्षा करना (रक्षण) कहीं अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि यदि सुरक्षा व्यवस्था नष्ट हो जाए, तो बाकी सब कुछ मौजूद होते हुए भी नष्ट हो जाता है।

मूल पाठ (संस्कृत):

नयनानन्दजननो जनानां जनितोत्सवः ।

ह्लादयत्येष चन्द्रार्कौ चन्द्र इव महार्णवम् ॥९॥

IAST:

nayanānandajanano janānāṃ janitotsavaḥ |

hlādayatyeṣa candrārkau candra iva mahāṃavam ||9||

शब्दार्थ:

- **नयनानन्दजननः** – आँखों को आनंद देने वाला
- **जनानाम्** – लोगों / प्रजा का
- **जनितोत्सवः** – उत्सव उत्पन्न करने वाला
- **ह्लादयति** – आनंदित करता है
- **एषः** – यह (नेता / राजा)
- **चन्द्रार्कौ** – चंद्र और सूर्य को
- **चन्द्रः** – चंद्रमा
- **इव** – के समान
- **महार्णवम्** – महासागर को

भावार्थ: यह श्लोक एक सुंदर रूपक प्रस्तुत करता है। नीतिसार के अनुसार, जैसे पूर्णिमा का चंद्रमा समुद्र में ज्वार उत्पन्न करता है, वैसे ही एक सच्चा, लोक-कल्याणकारी नेता अपनी प्रजा में आनंद, उत्साह, विश्वास और ऊर्जा का संचार करता है।

मूल पाठ (संस्कृत)

नाविको यथा नौकां प्रक्षिप्य सलिलार्णवे ।

सुखमुत्तारयत्येनां तथा राजा प्रजाः सुखम् ॥१०॥

स राजा राजसूयाद्यैर्यज्ञैर्यज्वा जनार्दनः ।

इह लोके परे चैव सुखी स्यात् किमुतान्यथा ॥११॥

IAST:

nāviko yathā naukāṃ prakṣipya salilāṃave |

sukhamuttārayatyenāṃ tathā rājā prajāḥ sukham ||10||

sa rājā rājasūyādyairyajñairyajvā janārdanaḥ |

iha loke pare caiva sukhī syāt kimutānyathā ||11||

शब्दार्थ:

- **नाविकः** – नाविक / कर्णधार (कप्तान)

- **यथा** – जैसे
- **नौकाम्** – नाव को
- **प्रक्षिप्य** – डालकर / चलाकर
- **सलिलार्णवे** – जल-समुद्र में
- **सुखम्** – सुखपूर्वक
- **उत्तारयति** – पार करा देता है
- **तथा** – उसी प्रकार
- **राजा** – राजा
- **प्रजाः** – प्रजा को
- **राजसूयाद्यैः** – राजसूय आदि यज्ञों से
- **यज्वा** – यज्ञ करने वाला
- **जनार्दनः** – जनों का कल्याण करने वाला
- **इह लोके** – इस लोक में
- **परे** – परलोक में
- **किमुत** – और क्या (अर्थात निश्चित रूप से)

भावार्थ: यह अत्यंत प्रभावशाली रूपक है। जैसे समुद्र में नाव को बिना नाविक के छोड़ दो तो वह डूब जाती है, वैसे ही समाज या संगठन बिना एक योग्य नेता के अराजकता, भ्रम, संघर्ष और विनाश की ओर अग्रसर होता है। नाविक का काम है – रास्ता दिखाना, संकटों से बचाना, सही दिशा में चलाना, और सबको सुरक्षित किनारे तक पहुँचाना।

मूल पाठ (संस्कृत)

रक्षणाद् वार्तमूलत्वाद् वार्ताया दण्डधारणात् ।

धारयत्येष लोकं वै बिभ्रद् दण्डं प्रजापतिः ॥१२॥

वर्धनाद् रक्षणं श्रेयो लोकेऽस्मिन्नात्मवान् नृपः ।

अरक्ष्यमाणा नश्येयुः समृद्धा अपि वा प्रजाः ॥१३॥

निवार्य शत्रून् शिशिरान् वर्षान् ग्रीष्मांश्च पार्थिवः ।

नियच्छेद् वृत्तिम् एषां स्ववश्यां सुखकारिकाम् ॥१४॥

IAST:

rakṣaṇād vārtamūlatvād vārtāyā daṇḍadhāraṇāt |

dhārayatyeṣa lokaṃ vai bibhrad daṇḍaṃ prajāpatiḥ ||12||

vardhanād rakṣaṇaṃ śreyo loke'sminnātmavān nṛpaḥ |

arakṣyamāṇā naśyeyuḥ samṛddhā api vā prajāḥ ||13||

nivārya śatrūn śiśirān varṣān grīṣmāṃśca pārthivaḥ |

niyacched vṛttim eṣāṃ svavaśyāṃ sukhalikārikām ||14||

शब्दार्थ:

- **रक्षणात्** – रक्षा करने के कारण
- **वार्तमूलत्वात्** – अर्थव्यवस्था के मूल होने के कारण
- **वार्तायाः** – अर्थव्यवस्था की
- **दण्डधारणात्** – दंड (अनुशासन/न्याय) धारण करने से
- **धारयति** – धारण करता है
- **एषः** – यह (राजा)
- **लोकम्** – लोक / समाज
- **बिभ्रत्** – धारण करते हुए
- **दण्डम्** – दंड
- **प्रजापतिः** – प्रजापति (ब्रह्मा) के समान

श्लोक १३ – सुरक्षा > विकास

शब्दार्थ:

- **वर्धनात्** – वृद्धि / विकास से
- **रक्षणम्** – रक्षा / सुरक्षा
- **श्रेयः** – श्रेष्ठ / अधिक उत्तम
- **लोकेऽस्मिन्** – इस लोक / संसार में
- **आत्मवान्** – धैर्यवान / स्थिरबुद्धि
- **नृपः** – राजा
- **अरक्ष्यमाणाः** – रक्षा न किए जाने पर
- **नश्येयुः** – नष्ट हो जाते हैं
- **समृद्धाः** – समृद्ध / संपन्न
- **प्रजाः** – प्रजा

श्लोक १४ – आपदा प्रबंधन

शब्दार्थ:

- **निवार्य** – रोककर / दूर करके
- **शत्रून्** – शत्रुओं को
- **शिशिरान्** – सर्दी (शीत) को

- **वर्षान्** – वर्षा (बारिश) को
- **ग्रीष्मान्** – गर्मी (ग्रीष्म) को
- **पार्थिवः** – राजा / पृथ्वीपति
- **नियच्छेत्** – नियंत्रित करे
- **वृत्तिम्** – आजीविका / जीवन-यापन
- **एषाम्** – इन (प्रजा) की
- **स्ववश्याम्** – अपने वश में
- **सुखकारिकाम्** – सुखकारिणी (सुख देने वाली)

भावार्थ: नीतिसार के अनुसार, कामन्दक नेतृत्व के तीन महत्वपूर्ण सिद्धांत बताते हैं:

पहला: देश की सुरक्षा (रक्षण) राजा के अधीन होती है, और देश की अर्थव्यवस्था (वार्ता) उस सुरक्षा पर टिकी होती है। सुरक्षा और न्याय व्यवस्था के बिना कोई अर्थव्यवस्था नहीं चल सकती।

दूसरा: प्राकृतिक आपदा से भी ज्यादा भयानक 'प्रशासनिक अकाल' या 'अराजकता' होती है। समृद्धि बढ़ाने (वर्धन) की तुलना में सुरक्षा करना (रक्षण) कहीं अधिक श्रेष्ठ है। क्योंकि यदि सुरक्षा व्यवस्था नष्ट हो जाए, तो बाकी सब कुछ – धन, संपत्ति, सुविधाएँ – मौजूद होते हुए भी नष्ट हो जाता है।

तीसरा: एक सक्षम राजा/नेता न केवल मानवीय शत्रुओं से रक्षा करता है, बल्कि प्राकृतिक विपत्तियों से भी अपनी प्रजा की रक्षा करता है – वह आपदा प्रबंधन, राहत, बुनियादी ढाँचे की व्यवस्था करता है।

आधुनिक संदर्भ: कोविड-19 महामारी ने स्पष्ट कर दिया कि जिन देशों की स्वास्थ्य सुरक्षा, प्रशासनिक व्यवस्था और नेतृत्व मजबूत था, वे संकट से बेहतर ढंग से निपट सके। सुरक्षा, न्याय, बुनियादी सुविधाएँ – ये विकास की पूर्व-शर्तें हैं, बाद की नहीं।

इस भाग की मुख्य सीख

'कम में अधिक' का सिद्धांत – जटिल विषयों को सरल, संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना ही सच्ची विद्वता है।

उपार्जन और पालन – दोनों अनिवार्य – पहले संसाधन अर्जित करो, फिर उनकी रक्षा, संरक्षण और विकास करो। दोनों का संतुलन ही सफलता की कुंजी है।

सुरक्षा, समृद्धि से श्रेष्ठ है – प्राकृतिक आपदा से भी भयानक 'प्रशासनिक अकाल' है। सुरक्षा और न्याय व्यवस्था के बिना कोई अर्थव्यवस्था नहीं चल सकती।

न्याय, धर्म, सप्तांग राज्य और वित्तीय प्रबंधन – क्या है सुशासन का आधार?

सप्तांग राज्य क्या है?

सप्तांग राज्य सिद्धांत के अनुसार राज्य सात अंगों से मिलकर बनता है – स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश, बल और सुहृत्। इनमें से किसी एक अंग की कमजोरी पूरे राज्य को प्रभावित करती है। इसलिए सभी सात अंगों का संतुलित विकास आवश्यक माना गया है। यह सिद्धांत आधुनिक शासन और संगठन प्रबंधन पर भी लागू होता है। शासन का परम लक्ष्य क्या होना चाहिए और राज्य किन अंगों से मिलकर बनता है, इसकी विस्तृत चर्चा यहाँ की गई है।

'त्रिवर्ग' की सिद्धि – धर्म, अर्थ और काम का संतुलन कैसे बनाएं?

मूल पाठ (संस्कृत)

धर्मार्थकामान् युक्तः सन् त्रिवर्गान् साधयेद् वशी ।

यो न धर्माद् विचलति स एनान् साधयेन्नृपः ॥१५॥

IAST:

dharmārthakāmān yuktaḥ san trivargān sādhayed vaśī |

yo na dharmād vicalati sa enān sādhayennṛpaḥ ||15||

शब्दार्थ:

- **धर्मार्थकामान्** – धर्म, अर्थ और काम को
- **युक्तः** – संतुलित / युक्त
- **त्रिवर्गान्** – त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) को
- **साधयेत्** – सिद्ध करे / प्राप्त करे
- **वशी** – वश में / संयमी
- **यः** – जो
- **धर्मात्** – धर्म / नीति से
- **विचलति** – विचलित होता है
- **सः** – वह
- **एनान्** – इन (तीनों) को
- **नृपः** – राजा

भावार्थ: *'त्रिवर्ग'* (धर्म, अर्थ और काम) भारतीय दर्शन का मूलभूत सिद्धांत है। **धर्म** – नैतिकता, सत्य, न्याय, कर्तव्य; **अर्थ** – धन, संसाधन, समृद्धि; **काम** – इच्छाएँ, भोग, सुख, आनंद। कामन्दक स्पष्ट कहते हैं कि इन तीनों का संतुलन ही सच्चा सुख, सफलता और समृद्धि है।

आधुनिक संदर्भ: आज के भौतिकवादी युग में हम अक्सर केवल 'अर्थ' (पैसा, करियर) पर ध्यान देते हैं और 'धर्म' (ईमानदारी, नैतिकता, परिवार के प्रति कर्तव्य) को भूल जाते हैं। नीतिसार का संदेश है – धर्म को आधार बनाओ, अर्थ अर्जित करो, और काम का आनंद लो, पर इन तीनों में संतुलन रखो।

राज्य का सप्तांग सिद्धांत – सात अंग कौन-कौन से हैं?

धर्म की सर्वोच्चता

मूल पाठ:

धर्म एव हि राजेन्द्र धर्मे राज्यं प्रतिष्ठितम् ।

धर्मात् प्रजाः सुखं जीवन्ति धर्मो रक्षति पार्थिवान् ॥१६॥

IAST:

dharma eva hi rājendra dharme rājyaṃ pratiṣṭhitam / dharmāt prajāḥ sukhaṃ jīvanti dharmo rakṣati pārthivān ||16||

शब्दार्थ:

- **धर्मः** – धर्म / न्याय / नैतिकता
- **राजेन्द्र** – हे राजश्रेष्ठ
- **धर्मे** – धर्म पर
- **राज्यम्** – राज्य
- **प्रतिष्ठितम्** – स्थापित / टिका हुआ
- **धर्मात्** – धर्म के कारण
- **प्रजाः** – प्रजा
- **सुखम्** – सुखपूर्वक
- **जीवन्ति** – जीवित रहती हैं
- **रक्षति** – रक्षा करता है
- **पार्थिवान्** – राजाओं की

भावार्थ: यह श्लोक "राज्य की आत्मा" को परिभाषित करता है। कामन्दक कहते हैं कि राज्य की नींव धर्म (न्याय, सत्य, कर्तव्य और नैतिकता) है। जब तक राजा धर्म का पालन करते हुए शासन करता है, तब तक राज्य सुरक्षित और स्थिर रहता है। धर्म के कारण ही प्रजा सुखपूर्वक जीवन बिताती है, और अंततः यही धर्म राजा की भी रक्षा करता है। धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, कर्तव्यपालन और सत्यनिष्ठा का समग्र रूप है। यदि राजा धर्म से विचलित होता है, तो राज्य की नींव हिल जाती है, और प्रजा को दुःख भोगना पड़ता है।

आधुनिक संदर्भ: आज के लोकतंत्र में 'धर्म' का स्थान 'संविधान', 'न्यायपालिका' और 'शासन की नैतिकता' ने ले लिया है। यह सिद्धांत हमें बताता है कि:

- जो सरकारें संविधान की मर्यादा और न्याय व्यवस्था को कमजोर करती हैं, वे अंततः अपना विनाश स्वयं बुलावा लेती हैं।
- भ्रष्टाचार, अन्याय और भेदभाव (अधर्म) जिस समाज में जड़ें जमा लेते हैं, वहाँ प्रजा असंतुष्ट हो जाती है और राज्य अस्थिर हो जाता है।
- आधुनिक शासन में पारदर्शिता (Transparency), उत्तरदायित्व (Accountability) और नियमों की सर्वोच्चता (Rule of Law) – यही 'धर्म' हैं। जो नेता इनका पालन करता है, वह जनता का विश्वास जीतता है और दीर्घायु प्राप्त करता है।

राजा के व्यक्तित्व का प्रभाव

मूल पाठ:

यथा राजा तथा प्रजा स्याद् यथा राजा तथा जनः ।

सुखं दुःखं यशोऽकीर्तिर् राज्ञो राज्यं तदाश्रयम् ॥१७॥

IAST:

yathā rājā tathā prajā syād yathā rājā tathā janaḥ |

sukhaṃ duḥkhaṃ yaśo'kīrtir rājño rājyaṃ tadāśrayam ||17||

शब्दार्थ:

- **यथा** – जैसा
- **राजा** – राजा
- **तथा** – वैसी ही
- **प्रजा** – प्रजा
- **जनः** – लोग
- **सुखम्** – सुख
- **दुःखम्** – दुःख
- **यशः** – यश / प्रतिष्ठा
- **अकीर्तिः** – अपयश / बदनामी
- **राज्ञः** – राजा की
- **राज्यम्** – राज्य
- **तदाश्रयम्** – उसी (राजा) पर आश्रित

भावार्थ: यह श्लोक 'दर्पण सिद्धांत' (Mirror Principle) है। कामन्दक कहते हैं कि राजा (नेता) जैसा होता है, प्रजा (अनुयायी/समाज) वैसी ही बन जाती है। राज्य का सुख, दुःख, प्रतिष्ठा और बदनामी – ये सब सीधे राजा के व्यक्तित्व, आचरण और विचारों पर निर्भर करते हैं। यदि राजा ईमानदार, अनुशासित और दयालु है, तो पूरी प्रजा उसी मार्ग पर चलती है; परन्तु यदि राजा अहंकारी, भ्रष्ट या आलसी है, तो पूरा राज्य विषाक्त हो जाता है। यहाँ 'प्रजा' का अर्थ केवल जनता ही नहीं, बल्कि मंत्री, कर्मचारी और परिवार भी है। नेतृत्व की सबसे बड़ी सीख – "जैसा नेता, वैसा संगठन"।

आधुनिक संदर्भ: आज के कॉर्पोरेट जगत, राजनीति और सामाजिक संस्थाओं में इसे "Organizational Culture" (संगठनात्मक संस्कृति) कहा जाता है:

- किसी भी कंपनी का CEO या टीम लीडर जैसा व्यवहार करता है, पूरी टीम वैसी ही बन जाती है। यदि नेता समयनिष्ठ, ईमानदार और विनम्र है, तो कर्मचारी भी उसी आदर्श का अनुसरण करते हैं (बिना कहे)।
- यदि नेता अहंकारी, भ्रष्ट या कामचोर है, तो संगठन में भ्रष्टाचार, टालमटोल और अराजकता पनपती है – चाहे कितने भी सख्त नियम क्यों न हों।
- राजनीति में, राष्ट्र का प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री जैसा आचरण रखता है, वैसी ही उसकी सरकार और पार्टी की छवि बनती है, और अंततः जनता भी उसी दिशा में प्रेरित होती है।
- परिवार में, माता-पिता स्वयं अनुशासित होंगे तो बच्चे बिना कहे सीख जाते हैं; यदि वे स्वयं झूठ बोलते हैं, तो बच्चे भी झूठ बोलना सीख जाते हैं। यही 'यथा राजा तथा प्रजा' का सार्वकालिक सत्य है।

मूल पाठ (संस्कृत)

स्वाम्य् अमात्यश् च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् ।

एतावद् उच्यते राज्यं सत्त्वबुद्धिव्यपाश्रयम् ॥१८॥

IAST:

svāmy amātyaś ca rāṣṭraṃ ca durgaṃ kośo balaṃ suhṛt |

etāvad ucyate rājyaṃ sattvabuddhivyapāśrayam ||18||

शब्दार्थ:

- **स्वामी** (स्वाम्य्) – राजा / शासक
- **अमात्यः** (अमात्यश्) – मंत्री / सलाहकार
- **च** – और
- **राष्ट्रम्** (राष्ट्रं) – राष्ट्र / प्रजा एवं भूमि
- **च** – और
- **दुर्गम्** (दुर्गं) – दुर्ग / किला / सीमा-सुरक्षा
- **कोशः** (कोशो) – कोश / खजाना / राजस्व
- **बलम्** (बलं) – बल / सेना / रक्षा-तंत्र
- **सुहृत्** – सुहृत् / मित्र / सहयोगी राष्ट्र
- **एतावत्** – इतना (ये सब)
- **उच्यते** – कहा जाता है
- **राज्यम्** – राज्य
- **सत्त्वबुद्धिव्यपाश्रयम्** – सत्त्व (साहस / पराक्रम) और बुद्धि (विवेक / ज्ञान) पर आश्रित / आधारित

भावार्थ: यह श्लोक राज्य के सात अंगों (सप्तांग) की स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत करता है। कामन्दक बताते हैं कि राज्य केवल राजा या भूमि मात्र नहीं है, बल्कि यह सात जीवंत अंगों (स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश, बल, सुहृत) का सम्मिलित रूप है। इनमें से किसी एक अंग की कमजोरी पूरे राज्य को अस्थिर कर सकती है।

इन सात अंगों का आधार 'सत्त्व' (साहस / पराक्रम) और 'बुद्धि' (विवेक / ज्ञान) है। केवल कोश (धन) होना, या केवल बल (सेना) होना पर्याप्त नहीं है – उनका सही उपयोग करने के लिए साहस और बुद्धि का होना अनिवार्य है। बिना बुद्धि के धन और बल विनाशकारी हो सकते हैं, और बिना साहस के विवेक निर्णय-हीन हो जाता है।

आधुनिक संदर्भ: यह सप्तांग मॉडल आज के किसी भी संगठन (कॉर्पोरेट), लोकतांत्रिक शासन या स्टार्टअप पर सटीक बैठता है:

क्र.सं.	सप्तांग	पारंपरिक अर्थ	आधुनिक समकक्ष
1.	**स्वामी**	राजा / शासक	राष्ट्रपति / प्रधानमंत्री / CEO
2.	**अमात्य**	मंत्री / सलाहकार	मंत्रिमंडल / प्रशासन / बोर्ड

क्र.सं.	सप्तांग	पारंपरिक अर्थ	आधुनिक समकक्ष
3.	**राष्ट्र**	जनता + भूमि	नागरिक, संस्कृति, भौगोलिक क्षेत्र
4.	**दुर्ग**	किला / सीमाएँ	सशस्त्र बल, सीमा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा
5.	**कोष**	खजाना / राजस्व	बजट, राजस्व, वित्तीय संसाधन
6.	**बल**	सेना / रक्षा	सशस्त्र बल, पुलिस, रक्षा तंत्र
7.	**सुहृत् या मित्र**	मित्र राष्ट्र	कूटनीतिक संबंध, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

विशेष बात यह है कि कामन्दक 'सत्त्व' (पराक्रम/साहस) और 'बुद्धि' (विवेक/ज्ञान) को इन सात अंगों का आधार मानते हैं। केवल संसाधन होना पर्याप्त नहीं – उनका सही उपयोग करने के लिए साहस और बुद्धि दोनों की आवश्यकता है।

मूल पाठ (संस्कृत)

सप्ताङ्गस्यापि राज्यस्य सततोत्थित एव यः ।

करोत्युपचयं सोऽन्ते राजा राज्यं च रक्षति ॥१९॥

IAST:

saptāṅgasyāpi rājyasya satatotthita eva yaḥ |

karotyupacayaṃ so'nte rājā rājyaṃ ca rakṣati ||19||

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात कहते हैं – केवल सप्तांग (सात अंग) होना ही पर्याप्त नहीं है। भले ही राज्य के पास सभी सात अंग (स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश, बल, सुहृत) मौजूद हों, परंतु यदि राजा/नेता 'सततोत्थित' (सदा सजग, सक्रिय और उद्योगी) नहीं है, तो वे सात अंग भी बेकार हैं।

'सततोत्थित' का अर्थ है – निरंतर जागरूक रहना, समय-समय पर स्वयं और अपनी व्यवस्था का आकलन करना, नए खतरों और अवसरों को पहचानना, और लगातार सुधार करते रहना। जो नेता ऐसा करता है, वही अंत में राज्य की वृद्धि (उपचय) करता है और उसकी रक्षा भी करता है।

यह श्लोक यह भी संकेत देता है कि नेतृत्व कोई एक बार का कार्य नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

आधुनिक संदर्भ (प्रासंगिकता): यह श्लोक आज के VUCA विश्व (Volatile, Uncertain, Complex, Ambiguous – अस्थिर, अनिश्चित, जटिल, अस्पष्ट) में अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **'Complacency' (प्रमाद/आत्मसंतोष) सबसे बड़ा शत्रु है:** आज के व्यवसाय, राजनीति और टेक्नोलॉजी में जो कंपनी या नेता 'सेटल' हो जाता है (यह सोचकर कि अब सब ठीक है), वह जल्द ही पिछड़ जाता है। कोडक, नोकिया, ब्लैकबेरी – ये सब अपने समय के सप्तांग-संपन्न (सभी संसाधनों से युक्त) थे, परंतु 'सततोत्थित' (निरंतर नवाचार) न रहने के कारण पीछे छूट गए।

2. **निरंतर सीखना (Continuous Learning) अनिवार्य है:** आज का नेता (चाहे CEO हो, प्रधानमंत्री हो, या स्कूल का प्रिंसिपल) तभी सफल होता है, जब वह नई तकनीकों, बदलते बाजार और सामाजिक बदलावों पर नज़र रखता है और उनके अनुसार खुद को ढालता है।
3. **सुरक्षा के लिए सक्रियता आवश्यक है:** 'रक्षति' (रक्षा) केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं, बल्कि साइबर सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, पर्यावरणीय सुरक्षा – सभी में निरंतर सजगता (Vigilance) आवश्यक है। 2020 में कोविड-19 ने स्पष्ट कर दिया कि जो देश/नेता सतर्क और त्वरित प्रतिक्रिया देने वाले थे, वे बच गए; जो प्रमाद में थे, वे पिछड़ गए।

वित्तीय प्रबंधन के चार चरण – राजवृत्त क्या है?

मूल पाठ (संस्कृत):

न्यायेनार्जनम् अर्थस्य रक्षणं वर्धनं तथा ।

सत्पात्रप्रतिपत्तिश् च राजवृत्तं चतुर्विधम् ॥२०॥

IAST:

nyāyenārjanam arthasya rakṣaṇaṃ vardhanaṃ tathā |

satpātrapratipattiś ca rājavṛttaṃ caturvidham ||20||

शब्दार्थ:

- **न्यायेन** – न्यायपूर्वक / उचित / नैतिक तरीके से
- **अर्जनम्** – अर्जन / कमाना / उपार्जन करना
- **अर्थस्य** – धन / संसाधनों का
- **रक्षणम्** – रक्षा / सुरक्षा / बचत करना
- **वर्धनम्** – वृद्धि / निवेश / बढ़ाना
- **तथा** – तथा / इसी प्रकार
- **सत्पात्रप्रतिपत्तिः** – सत् (योग्य / नेक) + पात्र (व्यक्ति / स्थान) + प्रतिपत्ति (सम्मान / दान / उपयोग) = धन का योग्य व्यक्तियों / कार्यों में सदुपयोग
- **च** – और
- **राजवृत्तम्** – राजा का वृत्त / कर्तव्य / आचरण
- **चतुर्विधम्** – चार प्रकार का / चार चरणों वाला

भावार्थ: यह श्लोक वित्तीय प्रबंधन का एक सार्वभौमिक, कालातीत और अत्यंत व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत करता है। कामन्दक कहते हैं कि एक राजा (या किसी भी व्यक्ति) का कर्तव्य है कि वह धन / संसाधनों का प्रबंधन चार चरणों में करे:

1. **आर्जन (Arjan / Earn):** पहला कदम धन अर्जित करना है। पर कामन्दक 'न्यायेन' (न्यायपूर्वक) शब्द पर जोर देते हैं – धन का स्रोत नैतिक, ईमानदार और उचित होना चाहिए। चोरी, भ्रष्टाचार, शोषण से अर्जित धन विनाश का कारण बनता है।
2. **रक्षण (Rakshan / Save):** अर्जित धन की रक्षा करना, उसे फिजूलखर्ची, चोरी, धोखाधड़ी या आपदा से बचाना। बचत, बीमा, सुरक्षित निवेश, और अनुशासित खर्च – ये रक्षण के साधन हैं।

3. **वर्धन (Vardhan / Invest & Grow):** धन को निवेश, व्यापार, ब्याज, या अन्य साधनों के माध्यम से बढ़ाना। केवल बचाकर रखना (मूसा-मूसा) पर्याप्त नहीं है; धन को फलित होना चाहिए, अन्यथा वह मुद्रास्फीति (Inflation) के कारण घट जाता है।

4. **सत्पात्र-प्रतिपत्ति (Satpatra Pratipatti / Donate/Wisely Spend):** अर्जित, सुरक्षित और बढ़ाए गए धन का योग्य कार्यों, योग्य व्यक्तियों, समाज कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य और धर्म (परोपकार) में सदुपयोग करना। यही धन को 'सार्थक' बनाता है और ख्याति दिलाता है।

यह चतुर्विध मॉडल – **आर्जन** → **रक्षण** → **वर्धन** → **सत्पात्र-प्रतिपत्ति** – राज्य, व्यवसाय और व्यक्तिगत जीवन – तीनों स्तरों पर लागू होता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के व्यक्तिगत वित्त (Personal Finance), कॉर्पोरेट वित्त (Corporate Finance), और सरकारी बजटिंग (Government Budgeting) – तीनों का आधार है:

1. **व्यक्तिगत वित्त:** आज का वित्तीय सलाहकार (Financial Advisor) भी यही कहता है – **Earn** → **Save** → **Invest** → **Donate / Spend wisely**। "न्यायेन" आज के Ethical Earning और Black Money से बचाव का संदेश देता है। "सत्पात्र-प्रतिपत्ति" आज के Philanthropy, CSR (Corporate Social Responsibility), और Donor Advised Funds से मेल खाती है।

2. **कॉर्पोरेट वित्त:** एक कंपनी पहले Revenue (आर्जन) कमाती है, फिर Cost Cutting और Risk Management (रक्षण) करती है, फिर Expansion और R&D (वर्धन) में निवेश करती है, और अंत में CSR और Community Development (सत्पात्र-प्रतिपत्ति) में योगदान देती है। यही Sustainable Business Model है।

3. **सरकारी वित्त:** सरकार Taxation (आर्जन) करती है, राजकोषीय अनुशासन (रक्षण) रखती है, बुनियादी ढाँचे और विकास (वर्धन) पर खर्च करती है, और कल्याणकारी योजनाओं (सत्पात्र-प्रतिपत्ति) – जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सब्सिडी – में धन लगाती है।

4. **"न्यायेन" का आधुनिक महत्त्व:** आज ESG (Environmental, Social, and Governance) मानकों में Ethical Earning (नैतिक कमाई) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। भ्रष्टाचार, टैक्स चोरी, या अनैतिक व्यापार से अर्जित धन दीर्घकालिक रूप से नष्ट हो जाता है (जैसे एनरॉन, सत्यम घोटाले)।

विनय (अनुशासन) – नीति का प्रथम आधार

मूल पाठ (संस्कृत):

विनयो नाम राज्ञोऽत्र प्रथमं शास्त्रलक्षणम् ।

अर्थानां प्राप्तिरक्षाभ्यां विनयोऽस्य प्रयोजनम् ॥२१॥

IAST:

vinayo nāma rājño'tra prathamaṃ śāstralakṣaṇam / arthānāṃ prāptirakṣābhyāṃ vinayo'sya prayojanam ||21||

शब्दार्थ:

- **विनयः** – विनय / नम्रता / आंतरिक अनुशासन / शिष्टाचार
- **नाम** – नामक / कहलाता है
- **राज्ञः** – राजा का
- **अत्र** – यहाँ / इस (नीति-शास्त्र) में
- **प्रथमम्** – प्रथम / पहला / सर्वप्रथम

- **शास्त्रलक्षणम्** – शास्त्र का लक्षण / मूलभूत आधार / परिभाषा
- **अर्थानाम्** – अर्थ / संसाधनों / धन की
- **प्राप्ति** – प्राप्ति / उपार्जन
- **रक्षाभ्याम्** – और रक्षा (दोनों)
- **विनयः** – विनय / अनुशासन
- **अस्य** – इस (राजा / नीति) का
- **प्रयोजनम्** – प्रयोजन / उद्देश्य / मूल लक्ष्य

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में नीति-शास्त्र के प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण आधार को स्पष्ट करते हैं – वह है 'विनय' (अनुशासन / नम्रता / आत्म-नियंत्रण)।

वे कहते हैं कि राजा (या किसी भी नेता) के लिए नीति-शास्त्र का सबसे पहला लक्षण 'विनय' है। पर 'विनय' का अर्थ केवल बाहरी नम्रता (बोलचाल में नरमी) नहीं है, बल्कि इसका गहरा अर्थ है – आंतरिक अनुशासन, इंद्रियों पर नियंत्रण, संयम, और आत्म-संयम। यही वह गुण है जो एक नेता को सामान्य व्यक्ति से अलग करता है।

इस विनय का व्यावहारिक प्रयोजन (उद्देश्य) क्या है? कामन्दक स्पष्ट कहते हैं – 'अर्थानां प्राप्तिरक्षाभ्याम्' अर्थात संसाधनों (धन, शक्ति, सम्मान) की प्राप्ति (अर्जन) और उनकी रक्षा (संरक्षण) करना।

तात्पर्य यह है कि बिना विनय (अनुशासन) के कोई व्यक्ति न तो सच्चा धन/समृद्धि अर्जित कर सकता है, और न ही उसे बनाए रख सकता है। अनुशासनहीन व्यक्ति अर्जित धन को भी मौज-मस्ती, अहंकार या फिजूलखर्ची में उड़ा देता है, जिससे उसका पतन हो जाता है।

यह श्लोक आंतरिक विकास (Self-Development) और बाहरी सफलता (External Success) के अटूट संबंध को रेखांकित करता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के कॉर्पोरेट, राजनीतिक, शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **'विनय' = Emotional Intelligence (EQ) का पहला स्तंभ – Self-Regulation:** आधुनिक मनोविज्ञान (डैनियल गोलेमैन) में भी 'आत्म-नियमन' (Self-Regulation) – यानी अपने आवेगों, क्रोध, और इच्छाओं पर नियंत्रण – को EQ का सबसे महत्वपूर्ण घटक माना गया है। जो लोग अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, वे संकटों में बेहतर निर्णय लेते हैं।

2. **'अर्थानां प्राप्ति' (संसाधनों की प्राप्ति):** आज की दुनिया में Career Growth, Wealth Creation, और Network Building – सबके लिए Discipline, Consistency, और Humility सबसे जरूरी हैं। अहंकारी और अविनयी व्यक्ति भले ही शुरुआत में चमकें, पर दीर्घकालिक सफलता विनम्र और अनुशासित व्यक्तियों को ही मिलती है (जैसे – सत्य नारायण नडेला बनाम कुछ अहंकारी सीईओ)।

3. **'रक्षा' (संरक्षण):** आज Wealth Management और Asset Protection उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी Wealth Creation। अविनयी व्यक्ति बिना सोचे-समझे निवेश, जुआ, या फिजूलखर्ची में धन गँवा देता है। जबकि विनीत एवं अनुशासित व्यक्ति बचत, बीमा और विवेकपूर्ण निवेश के माध्यम से अपनी सम्पत्ति की रक्षा करता है।

4. **राजनीति एवं प्रशासन:** सार्वजनिक जीवन में 'विनय' (गरिमा, संयम, शालीनता) किसी भी नेता की सबसे बड़ी पूँजी है। जो नेता संयमित, मर्यादित और विनम्र होते हैं, वे जनता का विश्वास अधिक समय तक बनाए रखते हैं; अहंकारी एवं उद्दंड नेता अपनी ही पार्टी/संगठन में अलग-थलग पड़ जाते हैं।

इंद्रिय-जय (आत्म-नियंत्रण) का रहस्य

मूल पाठ (संस्कृत):

इन्द्रियाणां जयो ह्येषां विनयस्य प्रयोजनम् ।

विनयेन विनीतात्मा लक्ष्मीं विन्दति शाश्वतीम् ॥२२॥

IAST:

indriyāṇāṃ jayo hyeṣāṃ vinayasya prayojanam | vinayena vinītātmā lakṣmīṃ vindati śāśvatīm ||22||

शब्दार्थ:

- **इन्द्रियाणाम्** – इंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा आदि) का
- **जयः** – जय / नियंत्रण / विजय / वश में करना
- **हि** – निश्चय ही (बल देने वाला अव्यय)
- **एषाम्** – इन (विनय / अनुशासन) का
- **विनयस्य** – विनय (नम्रता / आंतरिक अनुशासन) का
- **प्रयोजनम्** – प्रयोजन / सार / मूल उद्देश्य
- **विनयेन** – विनय / अनुशासन के द्वारा
- **विनीतात्मा** – विनीत (संयमित / अनुशासित) + आत्मा (मन / स्वभाव) वाला व्यक्ति
- **लक्ष्मीम्** – लक्ष्मी / समृद्धि / ऐश्वर्य / यश
- **विन्दति** – प्राप्त करता है / पाता है
- **शाश्वतीम्** – शाश्वत / स्थायी / चिरस्थायी / कभी न मिटने वाली

भावार्थ: यह श्लोक श्लोक २१ की कड़ी में आता है। जहाँ पिछले श्लोक में कामन्दक ने बताया कि 'विनय' (अनुशासन) का प्रयोजन संसाधनों की प्राप्ति और रक्षा है, वहीं इस श्लोक में वे 'विनय' की वास्तविक परिभाषा स्पष्ट करते हैं।

कामन्दक कहते हैं कि विनय (आत्म-अनुशासन) का सार और परिणाम है – 'इंद्रिय-जय' (इंद्रियों पर विजय/नियंत्रण)। जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों (आँख, कान, जीभ, त्वचा, नाक) को वश में कर लेता है, केवल वही सच्चा 'विनीत' (अनुशासित) है।

ऐसा विनीत, अनुशासित, संयमी व्यक्ति ही 'शाश्वत लक्ष्मी' (स्थायी समृद्धि, अटूट यश, और गहरा संतोष) को प्राप्त करता है। यहाँ 'लक्ष्मी' का अर्थ केवल धन नहीं है, बल्कि जीवन की समग्र समृद्धि – स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, ज्ञान, आत्म-संतोष – सब कुछ है।

मूल संदेश यह है कि बाहरी दुनिया को जीतने से पहले अपनी आंतरिक इंद्रियों को जीतना अनिवार्य है। जो इंद्रियों का दास है, वह क्षणिक सुखों में भटक जाता है; जो उनका स्वामी है, वह दीर्घकालिक, स्थायी सफलता पाता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के अतिउत्तेजक (overstimulating) डिजिटल युग में अत्यंत महत्वपूर्ण है:

1. **'इंद्रिय-जय' = Self-Control / Impulse Control:** आधुनिक मनोविज्ञान (Psychology) और न्यूरोसाइंस (Neuroscience) में 'Self-Regulation' (आत्म-नियमन) को सफलता का सबसे बड़ा भविष्यवक्ता (predictor) माना गया है। स्टैनफोर्ड का 'मार्शमैलो प्रयोग' (Marshmallow Test) साबित करता है कि जो बच्चे तात्कालिक आनंद (इंद्रिय-लोभ) को टाल सकते हैं, वे वयस्क होकर अधिक सफल, स्वस्थ और संतुष्ट होते हैं।
2. **डिजिटल लत (Digital Addiction) से बचाव:** आज सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म, गेम्स और वीडियो हमारी आँखों (रूप), कानों (शब्द), और मन (चंचलता) को बंधक बना लेते हैं। 'इंद्रिय-जय' का अर्थ है – 'डिजिटल

डिटॉक्स' (Digital Detox), निर्धारित समय पर स्क्रीन बंद करना, और फास्ट-फूड (जीभ-लोभ) से दूर रहना। जो व्यक्ति इन पर नियंत्रण रखता है, उसे मानसिक शांति, बेहतर स्वास्थ्य, और अधिक उत्पादकता (Productivity) प्राप्त होती है।

3. **'शाश्वत लक्ष्मी' = Sustainable Well-being:** आज का विज्ञापन उद्योग हमें क्षणिक सुख (Instant Gratification) – जैसे फास्ट फूड, चमकीले कपड़े, महँगे गैजेट्स – बेचता है। पर ये सुख क्षणिक होते हैं और अक्सर कर्ज, स्वास्थ्य समस्याएँ, और असंतोष लाते हैं। 'शाश्वत लक्ष्मी' (Sustainable Prosperity) नियमित बचत, स्वस्थ जीवनशैली, ईमानदारी, और गहन रिश्तों से आती है – जो 'इंद्रिय-जय' का ही परिणाम है।

4. **वैज्ञानिक प्रमाण (Scientific Backing):** वैज्ञानिक शोध (Goyal et al., JAMA Internal Medicine, 2014) ने सिद्ध किया है कि नियमित ध्यान (Meditation) और माइंडफुलनेस (Mindfulness) – जो 'इंद्रिय-जय' के ही आधुनिक रूप हैं – तनाव, चिंता और अवसाद को काफी हद तक कम करते हैं, और एकाग्रता, स्मृति और भावनात्मक संतुलन में सुधार करते हैं।

5. **राजनीति एवं व्यवसाय:** इतिहास गवाह है कि जो नेता (राजा, सीईओ, कमांडर) अपनी इंद्रियों (विलास, क्रोध, लालच) पर नियंत्रण रखते हैं, वे दीर्घकालिक साम्राज्य (कंपनी, देश) खड़े करते हैं। जो उनके दास होते हैं (जैसे नंद राजा, या एनरॉन के CEO), वे जल्दी नष्ट हो जाते हैं।

एक आदर्श लीडर के २० गुण – क्या आप में हैं ये?

मूल पाठ (संस्कृत)

शास्त्रं प्रज्ञा धृतिर्दाक्ष्यं प्रागल्भ्यं धारयिष्णुता ।

उत्साहो वाग्मिता दार्ढ्यमापत्क्लेशसहिष्णुता ॥२३॥

IAST:

śāstraṃ prajñā dhṛtirdākṣyaṃ prāgalbhyaṃ dhārayiṣṇutā |
utsāho vāgmitā dāḍhyamāpatkleśasahiṣṇutā ||23||

मूल पाठ (संस्कृत)

प्रभावः शुचिता मैत्री त्यागः सत्यं कृतज्ञता ।

कुलं शीलं दमः शौर्यं संपत्तिहेतवः स्मृताः ॥२४॥

IAST:

prabhāvaḥ śucitā maitrī tyāgaḥ satyaṃ kṛtajñatā |
kulaṃ śīlaṃ damaḥ śauryaṃ sampattihetavaḥ smṛtāḥ ||24||

शब्दार्थ:

(१) श्लोक २३ – १० बौद्धिक (Intellectual) गुण:

- **शास्त्रम्** – शास्त्र / सैद्धांतिक ज्ञान (Theoretical Knowledge / विद्या-पारंगतता)
- **प्रज्ञा** – विवेक / तीक्ष्ण बुद्धि / गहन समझ (Wisdom / Discernment)
- **धृतिः** – धैर्य / संकट में भी अडिग रहने की क्षमता (Patience / Composure)
- **दाक्ष्यम्** – कार्यकुशलता / निपुणता (Efficiency / Dexterity)
- **प्रागल्भ्यम्** – निडरता / आत्मविश्वास / वाक्पटुता (Confidence / Fearlessness)

- **धारयिष्णुता** – रहस्यों / गोपनीय बातों को छिपाने की शक्ति (Discretion / Confidentiality)
- **उत्साहः** – उत्साह / सदा ऊर्जावान रहना (Enthusiasm / Zeal)
- **वाग्मिता** – प्रभावशाली वाणी / वाक्पटुता (Oratory / Eloquence)
- **दार्ढ्यम्** – दृढ़ता / निर्णयों पर अडिग रहना (Firmness / Decisiveness)
- **आपत्क्लेशसहिष्णुता** – संकट-सहनशीलता / विपत्ति में धैर्य (Resilience / Endurance in crisis)

(२) श्लोक २४ – १० नैतिक (Moral / Character) गुण:

- **प्रभावः** – व्यक्तित्व का तेज / प्रभावशालिता / आकर्षण (Charisma / Influence)
- **शुचिता** – ईमानदारी / पारदर्शिता / पवित्रता (Integrity / Purity)
- **मैत्री** – सौहार्द / सहानुभूति / मित्रता (Friendliness / Empathy)
- **त्यागः** – त्याग / उदारता / दूसरों के लिए समर्पण (Sacrifice / Generosity)
- **सत्यम्** – सत्य / वचन के प्रति सच्चा रहना (Truthfulness)
- **कृतज्ञता** – कृतज्ञता / दूसरों के उपकार को मानना (Gratitude)
- **कुलम्** – उच्च संस्कार / मर्यादा / कुलीनता (Noble lineage / Good upbringing)
- **शीलम्** – सदाचार / अच्छा स्वभाव / शिष्टता (Character / Good conduct)
- **दमः** – मन और इच्छाओं का नियंत्रण (Self-restraint / Control over senses)
- **शौर्यम्** – साहस / वीरता (Courage / Valor)
- **संपत्तिहेतवः** – सम्पत्ति / सफलता / समृद्धि के कारण (हेतु) हैं
- **स्मृताः** – ये (गुण) कहे गए हैं / माने गए हैं

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक-युग्म में एक आदर्श राजा/नेता के २० गुणों की पूरी सूची प्रस्तुत करते हैं – १० बौद्धिक (मानसिक/बौद्धिक क्षमताएँ) और १० नैतिक (चारित्रिक/आचरण संबंधी गुण)।

इन २० गुणों का विशेष महत्व है:

1. **बौद्धिक गुण (श्लोक २३):** ये वे गुण हैं जो नेता को सोचने, समझने, योजना बनाने, निर्णय लेने और संकटों से निपटने में सक्षम बनाते हैं। ये उसकी 'क्षमता' (Competence) को दर्शाते हैं – जैसे शास्त्रज्ञान (ज्ञान), प्रज्ञा (विवेक), उत्साह (ऊर्जा), और आपत्क्लेशसहिष्णुता (संकट-सहनशीलता)।
2. **नैतिक गुण (श्लोक २४):** ये वे गुण हैं जो नेता के चरित्र, नैतिकता, और व्यवहार को परिभाषित करते हैं। ये उसकी 'विश्वसनीयता' (Character / Trustworthiness) को दर्शाते हैं – जैसे शुचिता (ईमानदारी), सत्य (सत्यनिष्ठा), मैत्री (सौहार्द), और त्याग (उदारता)।

कामन्दक का कहना है कि ये २० गुण ही 'संपत्तिहेतवः' (समृद्धि / सफलता / यश के मूल कारण) हैं। अर्थात, केवल बाहरी साधन (धन, सेना, मंत्री) पर्याप्त नहीं हैं; जब तक नेता में ये आंतरिक गुण (बौद्धिक + नैतिक) विद्यमान नहीं हैं, तब तक वह स्थायी सफलता नहीं पा सकता।

यह श्लोक 'Competence + Character = True Leadership' का प्राचीनतम सूत्र है। बिना बुद्धि के नैतिकता भोली होती है, और बिना नैतिकता के बुद्धि खतरनाक (धूर्त) होती है। दोनों का संतुलन ही आदर्श नेतृत्व है।

आधुनिक संदर्भ: यह २०-गुणों की सूची आज के Leadership Development, Personality Assessment, Emotional Intelligence (EQ), और Character Education से पूरी तरह मेल खाती है:

1. **बौद्धिक गुण (श्लोक २३) = Cognitive Abilities + IQ:** आधुनिक मनोविज्ञान में 'Fluid Intelligence' (प्रज्ञा, दाक्ष्य) और 'Crystallized Intelligence' (शास्त्र, धारयिष्णुता) को सफलता के लिए आवश्यक माना गया है। आज के CEO / नेता के लिए Strategic Thinking, Problem-Solving, Adaptability, और Resilience अत्यंत आवश्यक हैं। उदाहरण – स्टीव जॉब्स की 'प्रागल्भ्य' और 'उत्साह', चाणक्य की 'धारयिष्णुता'।

2. **नैतिक गुण (श्लोक २४) = Character + Emotional Intelligence (EQ):** आज के कॉर्पोरेट जगत में Integrity, Empathy, Transparency, और Gratitude को 'Soft Skills' नहीं, बल्कि 'Power Skills' कहा जाता है। Daniel Goleman का EQ मॉडल – Self-awareness, Self-regulation (दम), Motivation (त्याग/उत्साह), Empathy (मैत्री), Social Skills (प्रभाव/शौर्य) – इन्हीं नैतिक गुणों पर आधारित है।

3. **Competence (बौद्धिक) + Character (नैतिक) = Trust:** आधुनिक Leadership सिद्धांत कहता है कि 'Trust = (Credibility + Reliability + Intimacy) / Self-orientation'। इन २० गुणों में Credibility (प्रभाव, सत्य, शास्त्र), Reliability (दाक्ष्य, दार्ढ्य), और Intimacy (मैत्री, कृतज्ञता) आ जाते हैं – जो अहंकार (मान/मद) को कम करने पर और बढ़ते हैं।

4. **Personality Assessments (व्यक्तित्व परीक्षण):** आज की कंपनियाँ Big Five Personality Traits (OCEAN – Openness, Conscientiousness, Extraversion, Agreeableness, Neuroticism) और Psychometric Tests का उपयोग करती हैं। 'शास्त्र' और 'प्रज्ञा' Openness/Conscientiousness से, 'मैत्री' और 'शील' Agreeableness से, 'प्रागल्भ्य' और 'वाग्मिता' Extraversion से, और 'धृति' व 'आपत्क्लेशसहिष्णुता' Emotional Stability से संबंधित हैं।

5. **संकट-प्रबंधन (Crisis Management):** 'आपत्क्लेशसहिष्णुता' (Resilience) आज के VUCA विश्व में सबसे मांग वाला गुण है। कोविड-19, युद्ध, आर्थिक मंदी – इन सब में 'धृति', 'दार्ढ्य', और 'उत्साह' ही नेताओं को बचाते हैं।

कामन्दक के २० गुण (बौद्धिक + नैतिक):

१० बौद्धिक गुण (श्लोक २३)	१० नैतिक/मानवीय गुण (श्लोक २४)
१. शास्त्र (सैद्धांतिक ज्ञान)	**१. प्रभाव** (व्यक्तित्व का तेज)
२. प्रज्ञा (तीक्ष्ण बुद्धि/विवेक)	**२. शुचिता** (ईमानदारी/पारदर्शिता)
३. धृति (धैर्य/कठिन समय में शांति)	**३. मैत्री** (सौहार्द/सहानुभूति)
४. दाक्ष्य (कार्यकुशलता)	**४. त्याग** (टीम/प्रजा के लिए समर्पण)
५. प्रागल्भ्य (निडरता/आत्मविश्वास)	**५. सत्य** (वचनों के प्रति सच्चा होना)
६. धारयिष्णुता (रहस्यों को छिपाने की शक्ति)	**६. कृतज्ञता** (दूसरों के उपकार को मानना)

१० बौद्धिक गुण (श्लोक २३)	१० नैतिक/मानवीय गुण (श्लोक २४)
७. उत्साह (हमेशा ऊर्जावान रहना)	**७. कुल** (उच्च संस्कार/मर्यादा)
८. वाग्मिता (प्रभावशाली वाणी)	**८. शील** (सदाचार/अच्छा स्वभाव)
९. दार्ढ्य (निर्णयों पर दृढ़ता)	**९. दम** (मन और इच्छाओं का नियंत्रण)
१०. आपत्क्लेशसहिष्णुता (संकट-सहनशीलता)	**१०. शौर्य** (साहस/वीरता)

यह २०-गुणों की सूची आज के Leadership Development, Personality Assessment, Emotional Intelligence (EQ) और Character Education से काफी समानता रखती है।

लीड बाय एग्जांपल (अनुशासन का क्रमिक नियम)

मूल पाठ (संस्कृत):

आत्मानं प्रथमं राजा विनयेनोपपादयेत् ।

ततोऽमात्यांस् ततो भृत्यांस् ततः पुत्रांस् ततः प्रजाः ॥२५॥

IAST:

ātmānaṃ prathamaṃ rājā vinayenopapādayet /
tato'mātyāṃs tato bhṛtyāṃs tataḥ putrāṃs tataḥ prajāḥ //25//

शब्दार्थ:

- **आत्मानम्** – अपने आप को / स्वयं को
- **प्रथमम्** – पहले / सर्वप्रथम / सबसे पहले
- **राजा** – राजा / शासक / नेता
- **विनयेन** – विनय (अनुशासन / शिष्टता / संयम) के द्वारा
- **उपपादयेत्** – युक्त करे / संपन्न करे / सुसज्जित करे / स्थापित करे
- **ततः** – उसके बाद / तत्पश्चात्
- **अमात्यान्** – अमात्य / मंत्रियों / सलाहकारों को
- **ततः** – उसके बाद
- **भृत्यान्** – भृत्य / कर्मचारियों / सेवकों / अधीनस्थों को
- **ततः** – उसके बाद
- **पुत्रान्** – पुत्रों / वंशजों / परिवार-जनों को
- **ततः** – उसके बाद / अंत में

- **प्रजाः** – प्रजा / सामान्य जनता / नागरिकों को

भावार्थ: यह श्लोक 'नेतृत्व का सबसे बड़ा, सबसे प्राचीन और सबसे सार्वभौमिक सूत्र' प्रस्तुत करता है – 'लीड बाय एग्जांपल' (Lead by Example / अपने उदाहरण से नेतृत्व करना)।

कामन्दक स्पष्ट क्रम (क्रमागत नियम) बताते हैं – एक राजा / नेता को पहले अपने आप को अनुशासित (विनीत) करना चाहिए। उसके बाद ही, क्रमशः:

1. अमात्य (मंत्री / सलाहकार)
2. भृत्य (कर्मचारी / अधीनस्थ)
3. पुत्र (परिवार / वंशज)
4. प्रजा (सामान्य जनता)

इसका तात्पर्य यह है कि अनुशासन, आदर्श, और संस्कृति – ये सब 'ऊपर से नीचे' (Top-Down) आते हैं, 'नीचे से ऊपर' (Bottom-Up) नहीं। एक पिता यदि स्वयं झूठ बोलता है, तो वह अपने बच्चों को सत्य का उपदेश दे सकता है, पर वे बच्चे उसका अनुसरण नहीं करेंगे; वे उसका कर्म (आचरण) देखेंगे, न कि उसके वचन (उपदेश)।

इसका संदेश अत्यंत स्पष्ट है – बिना स्वयं को सुधारे, दूसरों को सुधारना असंभव है। बिना स्वयं को अनुशासित किए, किसी संगठन, परिवार, या राष्ट्र में अनुशासन स्थापित नहीं किया जा सकता। नेता का जीवन स्वयं एक 'खुली किताब' (Open Book) होनी चाहिए, जिसे देखकर दूसरे सीखें।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के कॉर्पोरेट जगत, राजनीति, शिक्षा, और पारिवारिक जीवन में पूर्णतः लागू होता है:

1. **"Walk the Talk" (जैसा कहो, वैसा करो):** आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत (Management Theory) का यह मूल मंत्र है। Simon Sinek कहते हैं – "Leadership is not about being in charge. It's about taking care of those in your charge." और यह तभी संभव है जब नेता स्वयं अनुशासित हो। यदि CEO देर से आता है और कर्मचारियों से समय पर आने की अपेक्षा करता है, तो वह विफल होता है। माइक्रोसॉफ्ट के सत्या नडेला ने जब 'ग्रोथ माइंडसेट' की बात की, तो उन्होंने स्वयं सबसे पहले विनम्रता और सीखने की मानसिकता दिखाई।

2. **परिवार (Family Dynamics):** माता-पिता अक्सर बच्चों को मोबाइल न देखने का उपदेश देते हैं, जबकि वे स्वयं घंटों स्क्रीन पर चिपके रहते हैं। बच्चे उनके आचरण (Behaviour) को कॉपी करते हैं, न कि उनके वचन (Words) को। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे ईमानदार, अनुशासित और संयमी बनें, तो स्वयं पहले वैसे बनिए।

3. **राजनीति और शासन:** एक प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, या जिला कलेक्टर का चरित्र और उनकी दिनचर्या, पूरी व्यवस्था की संस्कृति निर्धारित करती है। महात्मा गाँधी ने 'स्वराज' का आह्वान किया, परंतु इससे पहले उन्होंने स्वयं 'स्व-अनुशासन' (ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा) का पालन किया और अपने व्यक्तिगत जीवन को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए लाखों लोग उनके पीछे चले।

4. **संगठनात्मक संस्कृति (Organizational Culture):** किसी भी कंपनी की संस्कृति उसके संस्थापक या सीईओ के व्यक्तित्व का विस्तार होती है। यदि सीईओ भ्रष्ट है (फर्जी बिलिंग, टैक्स चोरी), तो पूरी कंपनी भ्रष्ट हो जाती है (एनरॉन, सत्यम)। यदि सीईओ ईमानदार और पारदर्शी है, तो पूरी कंपनी उस राह पर चलती है (टाटा ग्रुप, अमेज़न के शुरुआती दिन)।

5. **"अनुशासन का सोपान" (क्रमिकता):** श्लोक का एक और महत्वपूर्ण आधुनिक पहलू है – सुधार की प्रक्रिया। कोई नेता सीधे जाकर अंतिम छोर (प्रजा/जनता) को नहीं बदल सकता। पहले अपनी टीम (मंत्री/भृत्य), फिर परिवार (पुत्र) – इस क्रमिक प्रक्रिया (Gradual Process) से ही सामूहिक परिवर्तन संभव है। यही "Transformational Leadership" है।

विद्या और विनय का अटूट संबंध

मूल पाठ (संस्कृत):

विद्यया विनयो यस्य विनयेन दमः सह ।

दमेन धर्मसंयुक्तो राजा राज्यं सुखी भवेत् ॥२६॥

IAST:

vidyayā vinayo yasya vinayena damaḥ saha |
damena dharmasaṃyukto rājā rājyaṃ sukhī bhavet ||26||

शब्दार्थ:

- **विद्यया** – विद्या / ज्ञान / शिक्षा / विवेक के कारण
- **विनयः** – विनय / नम्रता / शिष्टाचार / आत्म-अनुशासन
- **यस्य** – जिस (राजा / व्यक्ति) के
- **विनयेन** – विनय / नम्रता / अनुशासन के द्वारा
- **दमः** – दम / इंद्रिय-नियंत्रण / मन-संयम / आत्म-संयम
- **सह** – साथ में / सह-स्थित / उत्पन्न होता है
- **दमेन** – संयम / नियंत्रण के द्वारा
- **धर्मसंयुक्तः** – धर्म (न्याय / कर्तव्य / नैतिकता) से युक्त / संपन्न
- **राजा** – राजा / शासक / नेता
- **राज्यम्** – राज्य को
- **सुखी** – सुखपूर्वक / आनंदपूर्वक
- **भवेत्** – होता है / रहता है / शासन करता है

भावार्थ: यह श्लोक आंतरिक विकास (Self-Development) की एक पूरी श्रृंखला (Sequential Ladder) प्रस्तुत करता है। कामन्दक कहते हैं कि:

1. **विद्या (ज्ञान / शिक्षा) → विनय (नम्रता / अनुशासन):** जिस व्यक्ति के पास सच्ची विद्या (केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि आत्म-ज्ञान और विवेक) होती है, उसमें स्वतः ही विनय (नम्रता, शालीनता, अनुशासन) आ जाता है। विद्या अहंकार नहीं, बल्कि विनम्रता सिखाती है – क्योंकि जितना अधिक व्यक्ति जानता है, उतना ही वह अपनी अज्ञानता के प्रति जागरूक होता है।
2. **विनय → दम (इंद्रिय-नियंत्रण / संयम):** विनय (अनुशासन) से दम (इंद्रिय-नियंत्रण, मन पर संयम) उत्पन्न होता है। जो व्यक्ति विनम्र होता है, उसका अहंकार नहीं होता, इसलिए वह अपनी इच्छाओं, क्रोध, और लालसा को आसानी से नियंत्रित कर लेता है।
3. **दम → धर्म (न्याय / नैतिकता):** इस प्रकार नियंत्रित मन और इंद्रियाँ व्यक्ति को धर्म (सत्य, न्याय, कर्तव्य, नैतिकता) के मार्ग पर स्थापित करती हैं। वह सही-गलत का विवेक रखता है और न्यायपूर्ण आचरण करता है।

इस पूरी श्रृंखला का अंतिम परिणाम यह है कि ऐसा राजा/नेता राज्य का सुखपूर्वक (सुखी भवेत्) शासन करता है – अर्थात वह स्वयं भी सुखी रहता है और प्रजा को भी सुखी रखता है।

मूल संदेश – सच्ची शिक्षा (विद्या) का उद्देश्य केवल पैसा कमाना या नौकरी पाना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को विनम्र, संयमी और नैतिक बनाना है। यही वह गुण है जो एक सफल नेता को सामान्य व्यक्ति से अलग करता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के शिक्षा-जगत, कॉर्पोरेट संस्कृति और समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **"शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य" (True Purpose of Education):** आज की शिक्षा प्रणाली (पढ़ाई, डिग्री, मार्क्स) अक्सर अहंकार (Ego) और प्रतिस्पर्धा (Competition) को बढ़ावा देती है, विनम्रता (Humility) को नहीं। कामन्दक का सिद्धांत कहता है कि सच्ची विद्या तो व्यक्ति को विनम्र (Humble) बनाती है – जितना अधिक ज्ञान, उतनी अधिक नम्रता (जैसे – अल्बर्ट आइंस्टीन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)। अहंकार तो अज्ञानता (Ignorance) का लक्षण है।

2. **"Knowledge → Humility → Self-Control → Ethics" (आज का Leadership Model):** आधुनिक प्रबंधन में 'Servant Leadership' (सेवक-नेतृत्व) को बहुत महत्व दिया जाता है – जहाँ नेता पहले सेवक (स्वयं को नियंत्रित करने वाला, विनम्र) होता है, फिर नेता। जिम कॉलिन्स (Good to Great) ने 'Level 5 Leadership' का जो मॉडल दिया – जिसमें Professional Will (दम) + Personal Humility (विनय) हो – यह इसी श्लोक का आधुनिक संस्करण है।

3. **विनय → संयम (Self-Regulation) → नैतिक निर्णय (Ethical Decision-Making):** आज के तनावपूर्ण कार्य-स्थलों (Workplaces) में Emotional Intelligence (EQ) का 'Self-Regulation' (आत्म-नियमन) सबसे महत्वपूर्ण कौशल है। जो व्यक्ति अपने क्रोध, लालसा (गपशप, ईर्ष्या) पर नियंत्रण रखता है, वही सही, नैतिक और दूरदर्शी निर्णय लेता है। भावुक (impulsive) निर्णय अक्सर विनाशकारी होते हैं।

4. **"कर्मठता से अधिक महत्वपूर्ण है चरित्र":** कई बार हम अत्यधिक शिक्षित, परंतु अहंकारी और असंयमी लोगों को देखते हैं जो अपने परिवार, टीम या संगठन में विषाक्तता (toxicity) फैलाते हैं। वहीं, थोड़े कम पढ़े-लिखे परंतु विनम्र, संयमी और नैतिक व्यक्ति सफल नेता बनते हैं। यह श्लोक 'कर्म' (अर्हता) से अधिक 'चरित्र' (संयम और विनय) पर जोर देता है – जो आज के 'कर्मचारी मूल्यांकन' (Performance Reviews) में 'Soft Skills' का आधार है।

5. **"सुखी भवेत्" (Happy Ruler):** आधुनिक मनोविज्ञान (Positive Psychology) भी कहता है कि आत्म-नियंत्रण (Self-Control) और नैतिक जीवन (Ethical Living) ही दीर्घकालिक संतोष (Well-being) और खुशी (Happiness) का आधार हैं। भौतिक सुख क्षणिक होते हैं, पर आंतरिक संयम और सदाचार से प्राप्त सुख शाश्वत होता है।

इस भाग की मुख्य सीख

इंद्रिय-जय ही सच्ची विनय है – विनय केवल बाहरी नम्रता नहीं, बल्कि आंतरिक अनुशासन और आत्म-नियंत्रण है। जो अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखता है, वही स्थायी समृद्धि प्राप्त करता है।

२० गुण – आदर्श नेता की पहचान – १० बौद्धिक + १० नैतिक गुण। ये आज के Leadership Development, Emotional Intelligence और Character Education से पूरी तरह मेल खाते हैं।

लीड बाय एग्जांपल – पहले स्वयं को अनुशासित करो, फिर परिवार, फिर समाज। अनुशासन ऊपर से नीचे (Top-Down) आता है, नीचे से ऊपर नहीं।

माइंड मैनेजमेंट और इंद्रिय-जय का विज्ञान – क्यों है मन पर विजय अनिवार्य?

'निर्मनस्कता' क्या है?

'निर्मनस्कता' – विचारों, इच्छाओं, चिंताओं, कल्पनाओं और सभी मानसिक गतिविधियों को रोककर मन की परम शांत, शून्य और एकाग्र अवस्था है। यह ध्यान, योग और मानसिक एकाग्रता का आधार है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार, नियमित ध्यान तनाव, चिंता और अवसाद को कम करता है तथा एकाग्रता और स्मृति में सुधार करता है।

यहाँ कामन्दक इंसानी दिमाग की कार्यप्रणाली, मानव चेतना की संरचना, और मन को वश में करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया समझाते हैं।

इंद्रिय रूपी हाथी – ज्ञान का अंकुश कैसे काम करता है?

मूल पाठ (संस्कृत)

विषयारण्यचारिण्यो मत्ता इव मदालसाः ।

ज्ञानाङ्कुशेन निगृह्याः सद्भिरिन्द्रियवारणाः ॥२७॥

IAST:

viṣayāraṇyacāriṇyo mattā iva madālasāḥ /
jñānāṅkuśena nigṛhyāḥ sadbhirindriyavāraṇāḥ ||27||

शब्दार्थ:

- **विषयारण्यचारिण्यः** – विषय (इंद्रिय-भोग / शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध) + अरण्य (वन / जंगल) + चारिण्यः (विचरण करने वाली) = भोग-विलास रूपी जंगल में विचरण करने वाली
- **मत्ताः** – मत्त / मद-मस्त / उन्मत्त / बेकाबू
- **इव** – के समान / जैसे
- **मदालसाः** – मद से आलसयुक्त / मस्ती में चूर (जैसे गरजते हाथी)
- **ज्ञानाङ्कुशेन** – ज्ञान (विवेक / बुद्धि / सही-गलत का बोध) + अङ्कुश (हाथी को नियंत्रित करने वाला अंकुश) = विवेक रूपी अंकुश के द्वारा
- **निगृह्याः** – निगृह / वश में की जानी चाहिए / नियंत्रित किया जाना चाहिए
- **सद्भिः** – सज्जनों / विवेकी पुरुषों / संयमी व्यक्तियों द्वारा
- **इन्द्रियवारणाः** – इन्द्रिय (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) + वारणाः (हाथी) = इंद्रिय-रूपी हाथी

भावार्थ: कामन्दक ने इस श्लोक में इंद्रियों को मतवाले, बेकाबू हाथी (मदालस हाथी) के रूप में वर्णित किया है, और ज्ञान / विवेक को 'अंकुश' (हाथी को काबू करने का औजार) के रूप में।

'विषयारण्य' – अर्थात शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध – ये पाँचों विषय एक विशाल, घना जंगल हैं। हमारी इंद्रियाँ (आँखें, कान, नाक, जीभ, त्वचा) उसी जंगल में बिना किसी नियंत्रण के इधर-उधर भागती हैं, बिल्कुल मस्त हाथी की तरह, जो अपने मद में किसी की नहीं सुनता।

यदि इन इंद्रियों को खुली छूट दे दी जाए, तो ये व्यक्ति को विनाश के गड्ढे में धकेल सकती हैं – आँखें अश्लीलता की ओर, कान बदनामी/गपशप की ओर, जीभ अधिक भोजन/फास्ट-फूड की ओर, त्वचा विलासिता/आराम की ओर, नाक सुगंध (सुरा/अत्यधिक इत्र) की ओर – सब बेलगाम होकर व्यक्ति को अधर्म, असंतोष और शारीरिक-मानसिक रोगों की ओर ले जाती हैं।

इन बेकाबू हाथियों (इंद्रियों) को वश में करने का एकमात्र उपाय है – 'ज्ञान' (विवेक, सही-गलत का बोध, आत्म-जागरूकता)। जिस प्रकार महावत (माहौत) अंकुश से हाथी को नियंत्रित करता है, उसी प्रकार विवेकी पुरुष (सज्जन) ज्ञान-रूपी अंकुश से अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करते हैं।

मूल संदेश – बिना ज्ञान/विवेक के इंद्रियाँ हमारी मालिक बन जाती हैं; ज्ञान/विवेक से हम इंद्रियों के मालिक बन जाते हैं।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के अति-उत्तेजक (hyper-stimulating) डिजिटल और उपभोक्तावादी युग में सबसे अधिक प्रासंगिक है:

1. **'विषयारण्य' = डिजिटल जंगल (Digital Jungle):** आज इंटरनेट, सोशल मीडिया (यूट्यूब, इंस्टाग्राम, टिकटॉक), ओटीटी प्लेटफॉर्म और विज्ञापन – यह सब मिलकर एक अथाह 'विषयारण्य' बन गए हैं। ये हमारी पाँचों इंद्रियों पर एक साथ हमला करते हैं – आँखें (चमकते रंग, रील्स), कान (ध्वनि, म्यूजिक), जीभ (फास्ट-फूड के विज्ञापन), त्वचा (विलासिता के स्पर्श) – सब बेलगाम।

2. **'इंद्रिय-हाथी' = ऐडिक्शन (लत):** आज के एल्गोरिदम (अल्गोरिद्म) डोपामाइन (Dopamine) लूप (चक्र) पर काम करते हैं – अनंत स्क्रॉलिंग, ऑटो-प्ले, सुझाव – ये सब हमारी इंद्रियों को 'मदालस' (अत्यधिक मस्त) बना देते हैं, जिससे हम अपनी मर्जी से स्क्रीन नहीं हटा पाते। यह 'इंद्रिय-हाथी' हमारा नियंत्रण छीन लेता है। इससे Procrastination (कार्यों को टालना), Anxiety, और Depression बढ़ता है।

3. **'ज्ञानाङ्कुश' = Critical Thinking + Mindfulness:** 'ज्ञान' का आधुनिक रूप है – Digital Literacy (जानना कि यह सब कैसे काम करता है), Critical Thinking (यह देखना कि क्या यह सामग्री मेरे लिए फायदेमंद है या नुकसानदेह), और Mindfulness (वर्तमान क्षण में जागरूक रहना)। इसी 'ज्ञान' को 'अंकुश' बनाकर हम 'डिजिटल डिटॉक्स' (Digital Detox), 'स्क्रीन टाइम लिमिट', और 'ध्यान (Meditation)' के माध्यम से इन बेकाबू हाथियों को काबू कर सकते हैं।

4. **'सद्भिः' (सज्जनों) का आधुनिक अर्थ:** 'सज्जन' आज केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वे लोग हैं जो आत्म-जागरूक (Self-aware) हैं, अपनी लतों (Addictions) को पहचानते हैं, और उन पर काबू पाने के लिए नियमित प्रयास (Discipline) करते हैं। यही सच्ची 'Good Company' (संगत) है – जो हमें इंद्रिय-नियंत्रण में मदद करे।

5. **कॉर्पोरेट और नेतृत्व में:** एक सफल नेता (सीईओ, राजनेता) वही होता है जो अपनी इंद्रियों (विलासिता, गुस्सा, ईर्ष्या, फिजूलखर्ची) पर नियंत्रण रखता है। वॉरेन बफे (सादा जीवन), रतन टाटा (संयमी जीवन) – ये सब 'इंद्रिय-जयी' हैं। बेलगाम इंद्रियाँ उन्हें भ्रष्ट कर देती हैं (जैसे – कई भ्रष्ट राजनेता या लालची सीईओ)।

6. **वैज्ञानिक प्रमाण:** आधुनिक न्यूरोसाइंस कहता है कि मस्तिष्क का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (Prefrontal Cortex) – जो निर्णय, नियंत्रण और विवेक का केंद्र है – 'ज्ञानाङ्कुश' का कार्य करता है। जब हम 'Impulse Control' (आवेग नियंत्रण) का अभ्यास करते हैं, तो यह भाग मजबूत होता है। ध्यान (Meditation) इसी क्षेत्र को मजबूत करता है, जिससे हम सोशल मीडिया, फास्ट-फूड, और अन्य विकर्षणों पर आसानी से नियंत्रण पा लेते हैं।

मन ही सुख-दुःख का मूल कारण

मूल पाठ (संस्कृत):

मन एव हि मूलं स्यात् सुखदुःखात्मकं नृणाम् ।

मनःसंयमनं कुर्याद् यः स राज्यं समश्नुते ॥२८॥

IAST:

mana eva hi mūlaṃ syāt sukhaduḥkhātmakaṃ nṛṇām | manaḥsaṃyamanaṃ kuryād yaḥ sa rājyaṃ samaśnute ||28||

शब्दार्थ:

- **मनः** – मन (चित्त / विचारों की धारा)
- **एव** – ही (निश्चित रूप से)
- **हि** – निश्चय ही (बल देने वाला अव्यय)
- **मूलम्** – मूल / जड़ / आधार
- **स्यात्** – है / होता है

- **सुखदुःखात्मकम्** – सुख और दुःख से युक्त (सुख + दुःख + आत्मकम्) = सुख-दुःख का आधार / स्वरूप
- **नृणाम्** – मनुष्यों / प्राणियों के
- **मनःसंयमनम्** – मन का संयम / नियंत्रण / वश में करना
- **कुर्यात्** – करे / अभ्यास करे
- **यः** – जो (व्यक्ति)
- **सः** – वह
- **राज्यम्** – राज्य / साम्राज्य (यश / सफलता / समृद्धि / शांति)
- **समश्नुते** – प्राप्त करता है / भोगता है / उपभोग करता है

भावार्थ: यह श्लोक मानव जीवन के सबसे गहन सत्यों में से एक को उजागर करता है – सुख और दुःख का कारण बाहरी परिस्थितियाँ नहीं हैं, बल्कि हमारा अपना मन है।

कामन्दक स्पष्ट कहते हैं – "मन एव हि मूलं स्यात् सुखदुःखात्मकं नृणाम्" – अर्थात मनुष्यों के सुख और दुःख का मूल कारण मन ही है। बाहरी वस्तुएँ, व्यक्ति, या घटनाएँ (धन, सम्मान, रिश्ते, मौसम) हमें अपने आप में सुखी या दुःखी नहीं करतीं; उनके प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रिया (प्रतिक्रिया / व्याख्या) ही सुख या दुःख उत्पन्न करती है।

आगे वे कहते हैं – "मनःसंयमनं कुर्याद् यः स राज्यं समश्नुते" – जो व्यक्ति अपने मन को संयमित / नियंत्रित कर लेता है, वही 'राज्य' (यहाँ राज्य का अर्थ है – जीवन-साम्राज्य, सफलता, शांति, संतोष, वास्तविक समृद्धि) को प्राप्त करता है। बाहरी दुनिया का राज्य (सत्ता, पद, धन) तो क्षणिक है, पर आंतरिक मन पर विजय प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा सम्राट बन जाता है।

यह श्लोक इस बात पर बल देता है कि बाहरी दुनिया पर विजय पाने की कोशिश करने से पहले, व्यक्ति को अपने अंदर के मन को जीतना होगा। जिसने अपना मन जीत लिया, उसने सब कुछ जीत लिया; जो मन का दास है, वह बाहरी वैभव के बावजूद भी दुखी है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के मनोविज्ञान (Psychology), मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health), और आत्म-विकास (Self-Development) के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **"Mindset is Everything" (दृष्टिकोण ही सब कुछ है):** आधुनिक मनोविज्ञान (Positive Psychology) और Cognitive Behavioral Therapy (CBT) का मूल सिद्धांत यही है – घटनाएँ (Events) स्वयं तनाव (Stress) नहीं पैदा करतीं, बल्कि उन घटनाओं की हमारी व्याख्या (Interpretation / विचार) तनाव या शांति पैदा करती है। जो लोग अपनी विचार-धारा (Thought Patterns) पर नियंत्रण रख लेते हैं, वे अवसाद (Depression) और चिंता (Anxiety) से बच जाते हैं।

2. **"Internal Locus of Control" (आंतरिक नियंत्रण केंद्र):** आधुनिक मनोविज्ञान कहता है कि जो व्यक्ति आंतरिक नियंत्रण (Locus of Control) रखता है – यानी अपनी प्रतिक्रियाओं को स्वयं नियंत्रित करता है – वह बाहरी परिस्थितियों (बॉस, बाजार, सरकार) के दबाव में नहीं आता। यही 'मनःसंयमन' (Mind Control) है। इसके विपरीत, 'बाह्य नियंत्रण' (External Locus) वाला व्यक्ति दोष दूसरों को देता रहता है और दुखी रहता है।

3. **"Stoicism" (स्टोइक दर्शन) से मेल:** यह श्लोक ग्रीक स्टोइक (Stoic) दर्शन (एपिक्टेटस, सेनेका, मार्कस ऑरेलियस) के साथ पूरी तरह मेल खाता है – "हम परिस्थितियों से नहीं, बल्कि उनके प्रति अपनी राय (Opinion) से परेशान होते हैं।" जो व्यक्ति अपनी राय और प्रतिक्रिया को नियंत्रित कर लेता है, वह सबसे स्वतंत्र व्यक्ति है।

4. **"Mental Health" (मानसिक स्वास्थ्य) पर जोर:** आज तनाव, चिंता, अवसाद, और बर्नआउट (Burnout) महामारी बन गए हैं। कामन्दक का उपाय आंतरिक है – मन को संयमित करना (जिसे आज माइंडफुलनेस (Mindfulness), ध्यान (Meditation), और आत्म-जागरूकता (Self-awareness) कहते हैं)। दवाइयाँ और बाहरी इलाज अस्थायी हैं; स्थायी समाधान मन के संयम में है।

5. **"स राज्यं समश्नुते" – आधुनिक सफलता का राज:** आज की सफलता (Career, Money, Fame) अक्सर बाहरी दिखती है, पर असली 'साम्राज्य' (Real Empire) तो आंतरिक शांति (Inner Peace) है। अमीर लोग भी अक्सर तनावग्रस्त रहते हैं, जबकि संतोषी साधु या सन्यासी अपने 'मन-राज्य' में सम्राट होते हैं। जो अपने मन को जीत लेता है, उसके पास कुछ न होते हुए भी सब कुछ है; जो मन का दास है, उसके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है।

6. **"Pratiksha" (प्रतीक्षा/प्रतिक्रिया) का अंतर:** एक ही घटना – जैसे ट्रैफिक जाम – एक व्यक्ति को गुस्से से भर देती है (दुःख), दूसरे को शांत रहने और ऑडियोबुक सुनने का अवसर देती है (सुख)। अंतर 'मन की स्थिति' में है, न कि 'जाम' में। यही इस श्लोक का व्यावहारिक आधुनिक रूप है।

इंद्रियों को विषयों से हटाकर आत्म-केंद्रित होना

मूल पाठ (संस्कृत):

संयम्य विषयेभ्यश्च इन्द्रियाणि महीपतिः ।

आत्मन्येव मनः कुर्याद् धर्मार्थौ चाप्नुयान्नृपः ॥२९॥

IAST:

saṃyamya viṣayebhyaśca indriyāṇi mahīpatiḥ / ātmanyeva manaḥ kuryād dharmārthau cāpnuyānnṛpaḥ ||29||

शब्दार्थ:

- **संयम्य** – नियंत्रित करके / वश में करके / हटाकर
- **विषयेभ्यः** – विषयों (इंद्रिय-भोगों / शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध) से
- **च** – तथा / और
- **इन्द्रियाणि** – इंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) को
- **महीपतिः** – राजा / पृथ्वीपति / शासक
- **आत्मनि** – आत्मा में / स्वयं में / अपने मूल कर्तव्यों / आंतरिक विवेक में
- **एव** – ही / निश्चित रूप से
- **मनः** – मन को
- **कुर्यात्** – करे / स्थिर करे / लगाए
- **धर्मार्थौ** – धर्म (न्याय / नैतिकता) और अर्थ (समृद्धि / संसाधन) – दोनों को
- **च** – और
- **आप्नुयात्** – प्राप्त कर लेता है / सिद्ध कर लेता है
- **नृपः** – राजा / नेता

भावार्थ: यह श्लोक 'इंद्रिय-निग्रह' (Indriya Nigraha) अर्थात इंद्रियों को बाहरी भोग-विलास से हटाकर आत्म-केंद्रित (Self-centered) होने का अत्यंत व्यावहारिक सूत्र प्रस्तुत करता है।

कामन्दक कहते हैं – राजा (या कोई भी नेता/व्यक्ति) को अपनी इंद्रियों को विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध – यानी संसार के आकर्षण) से हटाकर, उन्हें 'आत्मनि' (स्वयं के भीतर / अपने मूल कर्तव्यों और विवेक में) स्थिर करना चाहिए।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति सन्यासी बन जाए या दुनिया से भाग जाए। बल्कि इसका अर्थ है कि वह भोग-विलास (Sensory Pleasures) का दास न हो, बल्कि उनका स्वामी हो। वह जानता है कि कब, कितना और कैसे भोगना है, पर उसका मन सदा उसके लक्ष्यों (आत्म-केंद्र) पर टिका रहता है।

जब राजा/नेता अपनी इंद्रियों को संयमित करके अपने मन को अपने मूल कर्तव्य और विवेक में स्थिर कर लेता है, तो वह 'धर्म' (न्याय, नैतिकता, सत्य) और 'अर्थ' (समृद्धि, संसाधन, शक्ति) दोनों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेता है। बाहरी आकर्षणों में फँसा हुआ व्यक्ति न तो धर्म का पालन कर पाता है (क्योंकि वह अनैतिक रास्ते अपना लेता है) और न ही दीर्घकालिक अर्थ (क्योंकि वह फिजूलखर्ची और असंयम से बर्बाद हो जाता है)।

मूल संदेश – इंद्रियों पर नियंत्रण (संयम) ही धार्मिकता और समृद्धि दोनों की कुंजी है। जो इंद्रिय-सुखों में डूबा है, वह भटक जाता है; जो उन्हें नियंत्रित करता है, वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के डिस्ट्रैक्शन-भरे युग (Age of Distraction), डीप वर्क (Deep Work), और लक्ष्य-निर्धारण (Goal Setting) के लिए अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **"Deep Work" (गहन कार्य) बनाम "Shallow Work" (उथला कार्य):** आधुनिक उत्पादकता विशेषज्ञ कैल न्यूपोर्ट (Cal Newport) कहते हैं – आज की सफलता 'गहन कार्य' (बिना विकर्षण के लंबे समय तक एकाग्र होकर काम करना) पर निर्भर करती है। 'विषयेभ्यः' (सोशल मीडिया, न्यूज़ फीड, व्हाट्सएप नोटिफिकेशन) से इंद्रियों को 'संयम्य' करना – यानी विकर्षण (Distractions) हटाना – ही 'आत्मनि' (अपने कोर कार्य/मिशन पर) मन को लगाने का आधार है। जो ऐसा करता है, वह 'धर्मार्थौ' (Career Success + Financial Security) प्राप्त करता है।

2. **"Delayed Gratification" (विलंबित संतोष):** मनोविज्ञान का 'मार्शमैलो टेस्ट' (Marshmallow Test) बताता है कि जो बच्चे तात्कालिक सुख (एक मार्शमैलो अभी) को टालकर बड़ा सुख (दो मार्शमैलो बाद में) चुनते हैं, वे जीवन में अधिक सफल होते हैं। श्लोक का 'संयम्य इन्द्रियाणि' (विषय-सुखों को त्यागना) = 'Delayed Gratification' है, और उसका फल 'धर्मार्थौ' = Long-term Career Success + Financial Stability है।

3. **"FOMO" (Fear Of Missing Out) पर विजय:** आज सोशल मीडिया हमें लगातार बताता है कि दुनिया में क्या हो रहा है (पार्टियाँ, शॉपिंग, ट्रेंड्स)। इसमें डूबना (FOMO) हमें हमारे लक्ष्यों से भटकाता है। श्लोक हमें सिखाता है – "आत्मन्येव" (अपने स्वयं के मिशन पर ध्यान दें), बाहरी दिखावे (विषय) पर नहीं। यही 'डिजिटल डिटॉक्स' और 'माइंडफुलनेस' का प्राचीन रूप है।

4. **"Focus on Process, not Pleasure" (प्रक्रिया पर ध्यान दें, सुख पर नहीं):** कई लोग करियर या व्यवसाय में असफल होते हैं क्योंकि वे केवल अंतिम परिणाम (पैसा, पद) का सपना देखते हैं, परंतु उसके लिए आवश्यक अनुशासन (इंद्रिय-संयम) नहीं अपनाते। जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों (सुस्ती, झूठ, कंजूसी, गपशप) पर नियंत्रण रखता है और अपने काम पर एकाग्र रहता है, वह स्वतः ही 'धर्म' (ईमानदारी) और 'अर्थ' (पैसा) दोनों प्राप्त कर लेता है – बिना चोरी या अनैतिकता के।

5. **राजनीति और प्रशासन:** एक नेता यदि विलासिता, पैसे, और शोहरत (विषय) में डूब जाता है, तो वह भ्रष्ट हो जाता है और अपना कर्तव्य (धर्म) भूल जाता है। परंतु जो नेता संयमी है, अपने मन को राष्ट्र-सेवा (आत्मनि) पर केंद्रित रखता है, वह न्याय (धर्म) और आर्थिक विकास (अर्थ) दोनों सुनिश्चित करता है – (जैसे – लाल बहादुर शास्त्री, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)।

चेतना के ५ रूप – निर्णय लेने की प्रक्रिया क्या है?

मूल पाठ (संस्कृत)

विज्ञानहृदयचित्तानि मनो बुद्धिस्तथैव च ।

अन्तःकरणमेतत्तु प्रवृत्तौ निवृत्तौ च ॥३०॥

IAST:

vijñānahṛdayacittāni mano buddhistathaiva ca / antaḥkaraṇametattu pravṛttau nivṛttau ca ||30||

शब्दार्थ:

- **विज्ञान** (vijñāna) – गहरी अनुभूति / विशिष्ट ज्ञान / विवेक / चेतना का गहन स्तर
- **हृदय** (hṛdaya) – हृदय / भावनाएँ / संवेग / अंतरात्मा की अनुभूति
- **चित्तानि** (cittāni) – चित्त / स्मृति / संस्कार / अचेतन मन का भंडार
- **मनः** (manaḥ) – मन / संकल्प-विकल्प / चंचल विचारधारा
- **बुद्धिः** (buddhiḥ) – बुद्धि / तर्क / निर्णय-शक्ति / विवेक
- **तथा एव** (tathā eva) – और इसी प्रकार / तथा
- **च** (ca) – और
- **अन्तःकरणम्** (antaḥkaraṇam) – अंतःकरण / आंतरिक उपकरण (मन का कुल यंत्र)
- **एतत्** (etat) – यह (सब)
- **तु** (tu) – तो / निश्चित रूप से
- **प्रवृत्तौ** (pravṛttau) – प्रवृत्ति / कर्म में / संसार में सक्रियता / व्यवहार में
- **निवृत्तौ** (nivṛttau) – निवृत्ति / त्याग / वापसी / आंतरिक मौन / ध्यान में
- **च** (ca) – और / भी

भावार्थ: यह श्लोक मानव चेतना (Consciousness) / मन (Mind) की संरचना का अत्यंत सूक्ष्म, वैज्ञानिक और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कामन्दक बताते हैं कि 'अंतःकरण' (आंतरिक उपकरण) पाँच अलग-अलग, किंतु परस्पर जुड़े हुए तत्वों से मिलकर बना है:

1. **विज्ञान (Vijnana)** – यह चेतना का गहनतम स्तर है, जो अनुभव, अंतर्ज्ञान, और आत्म-जागरूकता का आधार है। यह केवल सूचना नहीं, बल्कि उसका प्रत्यक्ष अनुभव (Direct Experience) है। (आधुनिक शब्दों में – चेतना / Consciousness / अंतर्दृष्टि)
2. **हृदय (Hridaya)** – यह भावनाओं, संवेगों, प्रेम, करुणा, और अंतरात्मा का केंद्र है। आधुनिक विज्ञान भी अब 'हार्ट-ब्रेन' (Heart-Brain) कनेक्शन को पहचानता है। यह तार्किक नहीं, बल्कि भावात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) का स्रोत है।
3. **चित्त (Chitta)** – यह स्मृति (Memory), संस्कार (Impressions), और अचेतन (Subconscious) का भंडार है। यहीं पर हमारे पिछले जन्मों/बचपन के अनुभव, रुचियाँ, और आदतें संग्रहीत हैं। यह मन का 'डेटाबेस' है।
4. **मन (Manas)** – यह चंचल, संकल्प-विकल्प करने वाला, और बाहरी इंद्रियों से सूचना ग्रहण करने वाला अंग है। यह लगातार विचारों को जन्म देता रहता है – 'क्या करूँ?', 'क्या न करूँ?' – यही 'बंदर-मन' (Monkey Mind) कहलाता है।
5. **बुद्धि (Buddhi)** – यह तर्क, विवेक, निर्णय और अंतिम फैसला लेने वाला अंग है। यह मन के विकल्पों में से सही-गलत को पहचानता है, और अंतिम निर्णय देता है।

कामन्दक आगे कहते हैं कि यह पाँचों का समूह (अंतःकरण) 'प्रवृत्ति' (बाहरी दुनिया में क्रिया / व्यवहार) और 'निवृत्ति' (आंतरिक मौन / त्याग / ध्यान / चिंतन) – दोनों अवस्थाओं में कार्य करता है।

गहनतम रहस्य: इन पाँचों के बीच सामंजस्य (Harmony) ही मानसिक स्वास्थ्य, स्पष्ट निर्णय, और आत्म-संतोष की कुंजी है। यदि भावनाएँ (हृदय) तर्क (बुद्धि) पर हावी हो जाएँ, तो निर्णय भावुक हो जाते हैं; यदि मन (चंचलता) अत्यधिक सक्रिय हो, तो एकाग्रता नष्ट हो जाती है; और यदि चित्त (संस्कार) बुरी आदतों से भरा हो, तो व्यक्ति उन्हीं के अनुसार कर्म करता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience), संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology), और भावनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) के साथ पूरी तरह मेल खाता है:

1. **अंतःकरण = मस्तिष्क का संपूर्ण नेटवर्क (Whole Brain Network):** आधुनिक तंत्रिका विज्ञान मस्तिष्क के विभिन्न भागों को अलग-अलग पहचानता है:
    - **बुद्धि → प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (Prefrontal Cortex)** – निर्णय, तर्क, योजना।
    - **हृदय → लिम्बिक सिस्टम (Limbic System)** – भावनाएँ (अमिगडाला, हिप्पोकैम्पस)।
    - **चित्त → हिप्पोकैम्पस और बेसल गैंग्लिया (Hippocampus & Basal Ganglia)** – स्मृति और आदतें।
    - **मन → रेटिक्युलर एक्टिवेटिंग सिस्टम (RAS)** – ध्यान और चंचलता का केंद्र।
    - **विज्ञान → न्यूरल नेटवर्क्स का एकीकरण (Integrated Information Theory)** – चेतना का उभरता हुआ गुण (Emergent Property)।
2. **"System 1 vs System 2" (डैनियल काह्नमैन):** नोबेल पुरस्कार विजेता डैनियल काह्नमैन (Daniel Kahneman) ने दो प्रणालियाँ बताईं – System 1 (तेज, स्वचालित, भावनात्मक – यह 'हृदय' और 'मन' का काम है) और System 2 (धीमा, तार्किक, विवेकी – यह 'बुद्धि' का काम है)। यह श्लोक इसी द्वंद्व को ५ अंगों में विभक्त करता है, और कहता है कि 'बुद्धि' को ही अंतिम निर्णायक होना चाहिए, न कि 'मन' या 'हृदय' को।
3. **"Emotional Intelligence" (ईक्यू) बनाम "IQ":** आधुनिक मनोविज्ञान कहता है कि सफलता के लिए केवल IQ (बुद्धि) ही नहीं, बल्कि EQ (भावनात्मक बुद्धि – हृदय), और Memory (चित्त) भी आवश्यक हैं। श्लोक का 'अंतःकरण' मॉडल – IQ (बुद्धि) + EQ (हृदय) + SQ (आध्यात्मिक बुद्धि – विज्ञान) का आधुनिक 'Whole-Brain Leadership' मॉडल है।
4. **"Mindfulness" (ध्यान) – प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर:** आज के तनावपूर्ण जीवन में, हम अक्सर केवल 'प्रवृत्ति' (काम, फोन, मीटिंग, सोशल मीडिया) में व्यस्त रहते हैं, जिससे 'मन' अत्यधिक चंचल हो जाता है और 'बुद्धि' कमजोर पड़ जाती है। श्लोक कहता है कि अंतःकरण 'प्रवृत्ति' और 'निवृत्ति' दोनों में कार्य करता है। 'निवृत्ति' (ध्यान / मौन / Self-Reflection) का अभ्यास करके हम अपनी 'बुद्धि' को शांत कर सकते हैं, अपने 'चित्त' (संस्कार) को शुद्ध कर सकते हैं, और 'विज्ञान' (आत्म-जागरूकता) को जागृत कर सकते हैं।
5. **"Cognitive Behavioral Therapy" (CBT) – मन और बुद्धि का संतुलन:** CBT में रोगी को सिखाया जाता है कि कैसे 'मन' (नकारात्मक विचार) को पहचानें, 'हृदय' (भावनात्मक प्रतिक्रिया) को समझें, और 'बुद्धि' (तर्कसंगत विचार) का उपयोग करके उन्हें बदलें। यही इस श्लोक का कार्यान्वयन है – अपने अंतःकरण के विभिन्न अंगों को पहचानना और उन्हें सामंजस्य में लाना।

बुद्धि ही सबसे बड़ा बल (Strategy over Strength)

मूल पाठ (संस्कृत):

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य बुद्धिहीनस्य किं बलम् ।

बुद्ध्या विचार्य कर्तव्यं न प्रमादेन पार्थिवः ॥३१॥

IAST:

buddhiryasya balaṃ tasya buddhihīnasya kiṃ balam / buddhyā vicārya kartavyaṃ na pramādena pārthivaḥ //31//

शब्दार्थ:

- **बुद्धिः** (buddhiḥ) – विवेक / बुद्धि / तर्क-शक्ति / समझ / सही-गलत का ज्ञान
- **यस्य** (yasya) – जिसकी (व्यक्ति की)
- **बलम्** (balam) – बल / शक्ति / सामर्थ्य / ताकत (चाहे वह शारीरिक, आर्थिक, राजनैतिक या सैन्य हो)
- **तस्य** (tasya) – उसी की (अर्थात, बुद्धि ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है)
- **बुद्धिहीनस्य** (buddhihīnasya) – बुद्धि / विवेक / समझ से रहित (मूर्ख / अविवेकी) व्यक्ति की
- **किम्** (kim) – क्या (प्रश्नवाचक – अर्थात "कुछ भी नहीं" / "व्यर्थ है")
- **बलम्** (balam) – बल (ताकत) – (यहाँ प्रश्नार्थक – क्या फ़ायदा?)
- **बुद्ध्या** (buddhyā) – बुद्धि के द्वारा / विवेकपूर्वक
- **विचार्य** (vicārya) – विचार करके / मनन करके / आगे-पीछे सोचकर
- **कर्तव्यम्** (kartavyam) – कर्तव्य / कार्य / निर्णय
- **न** (na) – नहीं
- **प्रमादेन** (pramādena) – प्रमाद / आवेश / लापरवाही / जल्दबाजी / बिना सोचे-समझे
- **पार्थिवः** (pārthivaḥ) – राजा / पृथ्वी-पति / शासक / नेता

भावार्थ: यह श्लोक 'बुद्धि' (विवेक/समझ) और 'बल' (ताकत/संसाधन) के बीच अंतर को स्पष्ट करता है और बताता है कि सच्ची शक्ति बाहरी संसाधनों में नहीं, बल्कि आंतरिक विवेक (बुद्धि) में निहित है।

कामन्दक कहते हैं – "बुद्धिर्यस्य बलं तस्य" – जिस व्यक्ति के पास बुद्धि/विवेक है, वही वास्तव में बलवान है। उसके पास चाहे शारीरिक ताकत न हो, सेना न हो, या धन न हो, उसकी बुद्धि ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है – क्योंकि वह सोच-समझकर रास्ता बना सकता है, संकट से निकल सकता है, और दूसरों को हरा सकता है।

फिर वे प्रश्न करते हैं – "बुद्धिहीनस्य किं बलम्" – अर्थात बुद्धि/विवेक से रहित (बुद्धिहीन) व्यक्ति की ताकत का क्या उपयोग? यदि किसी के पास हाथी-घोड़े, अरबों-खरबों की संपत्ति या विशाल सेना है, पर उसके पास समझ-बूझ (विवेक) नहीं है, तो वह सारी ताकत बेकार और विनाशकारी है। बुद्धिहीन व्यक्ति अपनी ताकत का गलत उपयोग करता है, अहंकार में आ जाता है, और अंततः वही ताकत उसका विनाश कर देती है (जैसे – रावण की ताकत, दुर्योधन की सेना)।

अंत में, कामन्दक व्यावहारिक सलाह देते हैं – "बुद्ध्या विचार्य कर्तव्यं न प्रमादेन पार्थिवः" – अर्थात राजा/नेता को अपने सभी कार्य/निर्णय बुद्धि से (सोच-समझकर) करने चाहिए, न कि 'प्रमाद' (आवेश, लापरवाही, क्रोध, जल्दबाजी या अहंकार) से।

'प्रमाद' – यहाँ इसका अर्थ है – बिना सोचे-समझे लिया गया निर्णय, अति-आत्मविश्वास, क्रोध में दी गई सज़ा, या लालच में किया गया कार्य। यही 'प्रमाद' ही राजाओं/नेताओं के पतन का सबसे बड़ा कारण है। (जैसे – दुर्योधन का क्रोध, अशोक का कलिंग युद्ध से पहले का क्रोध, हिटलर की जल्दबाजी)।

मूल संदेश – संसाधन (बल) गौण हैं; विवेक (बुद्धि) प्रधान है। बुद्धि से विचार करो, फिर कर्म करो।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के रणनीति-प्रधान (Strategy-driven) विश्व, व्यवसाय प्रबंधन, और नेतृत्व (Leadership) के लिए अत्यंत प्रासंगिक है:

1. **"Strategic Thinking" (रणनीतिक सोच) बनाम "Resources" (संसाधन):** आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत (जैसे – Sun Tzu की The Art of War या C.K. Prahalad का 'Core Competence') कहता है कि युद्ध/व्यवसाय 'संसाधनों' (Resources) से नहीं, बल्कि 'रणनीति' (Strategy) से जीता जाता है। नोकिया के पास भारी संसाधन थे, पर बुद्धि/रणनीति (स्मार्टफोन क्रांति) नहीं थी, इसलिए वह नष्ट हो गया। वहीं, छोटी स्टार्ट-अप कंपनियाँ (जिनके पास कम संसाधन थे) ने बुद्धि (इनोवेशन) से बाजार जीत लिया।

2. **"Data-Driven Decision Making" (बुद्धि) बनाम "Impulsive Decisions" (प्रमाद):** आज के CEO, राजनेता, और प्रशासकों के पास ढेरों डेटा (बल) है। पर सवाल यह है कि क्या वे उस डेटा को 'बुद्धि' (Critical Analysis) से देखते हैं, या वे 'प्रमाद' (पूर्वाग्रह, अहंकार, फेसबुक ट्रेंड्स, जल्दबाजी) में निर्णय लेते हैं? कोविड-19 प्रबंधन में जिन देशों ने बुद्धि (वैज्ञानिक डेटा, अनुभव) से काम लिया, वे बच गए; जिन्होंने प्रमाद (जनता की भावनाएँ, राजनीतिक दबाव) में काम लिया, वे पिछड़ गए।

3. **"Wisdom over Ego" (अहंकार से बुद्धि श्रेष्ठ):** बुद्धिहीन व्यक्ति की ताकत (धन, पद, शक्ति) अक्सर उसे अहंकारी (Egoistic) बना देती है, और वह गिर जाता है (जैसे – कई फिल्मी सितारे, राजनेता, या बड़े उद्योगपति जिन्होंने भ्रष्टाचार/अहंकार में अपना सब कुछ खो दिया)। वहीं, बुद्धिमान व्यक्ति विनम्र होता है, अपनी ताकत को सही दिशा में लगाता है और टिकाऊ सफलता पाता है (जैसे – वॉरेन बफे, रतन टाटा)।

4. **"Deep Work" और "Reflective Thinking":** 'प्रमाद' (बिना सोचे कार्य) आज के हाइपर-कनेक्टिव युग में बहुत बड़ा रोग है – ईमेल का तुरंत जवाब, बिना पढ़े शेयर करना, बिना सोचे ट्वीट करना। श्लोक सिखाता है – पहले सोचो (विचार्य), फिर करो (कर्तव्यं)। यही 'Critical Thinking' और 'Mindfulness' का आधार है।

5. **"Power without brains is dangerous" (बुद्धि बिना बल खतरनाक):** आज Artificial Intelligence (AI) और अस्त्र-शस्त्रों (Nuclear Weapons) के युग में, 'बुद्धिहीन बल' (बिना नैतिकता और विवेक के बनाई गई तकनीक) मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। 'बुद्धि' का अर्थ केवल IQ नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों (Ethics) और दूरदर्शिता (Foresight) का समावेश है, जो निर्णयों को सही दिशा देती है।

मूल पाठ (संस्कृत)

एकस्मिन् विषये ज्ञानं जायते न तु सर्वतः ।

ज्ञानस्यायुगपद्भावो लिङ्गं मनस ईरितम् ॥३२॥

IAST:

ekasmin viṣaye jñānaṃ jāyate na tu sarvataḥ | jñānasyāyugapadbhāvo liṅgaṃ manasa īritam ||32||

शब्दार्थ:

- **एकस्मिन्** – एक ही (किसी एक) में
- **विषये** – विषय / वस्तु / कार्य / विचार में
- **ज्ञानम्** – ज्ञान / चेतना / स्पष्ट बोध / अवगति
- **जायते** – उत्पन्न होता है
- **न** – नहीं
- **तु** – परंतु / किन्तु
- **सर्वतः** – सब ओर से / सभी विषयों में एक साथ
- **ज्ञानस्य** – ज्ञान की

- **अयुगपद्भावः** – अ (नहीं) + युगपत् (एक साथ) + भाव (होना) = एक साथ न होने का भाव / असमकालिकता
- **लिङ्गम्** – लक्षण / चिह्न / प्रमाण
- **मनसः** – मन का
- **ईरितम्** – कहा गया है / निर्दिष्ट किया गया है

भावार्थ: यह श्लोक मानव मन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक विशेषता को स्पष्ट करता है – मन एक समय में केवल एक ही विषय (वस्तु/कार्य/विचार) पर पूर्ण रूप से केंद्रित (फोकस) हो सकता है, सभी विषयों पर एक साथ नहीं।

कामन्दक कहते हैं – "एकस्मिन् विषये ज्ञानं जायते" – एक ही विषय में (पूर्ण) ज्ञान उत्पन्न होता है। "न तु सर्वतः" – परंतु सभी विषयों में एक साथ नहीं।

आगे वे 'अयुगपद्भाव' (एक साथ न होने की अवस्था) को 'मनसः लिङ्गम्' (मन का लक्षण) कहते हैं। अर्थात, यही मन की पहचान है – कि वह एक समय में केवल एक ही काम कर सकता है। यदि वह एक साथ कई काम करने की कोशिश करता है, तो उनमें से किसी पर भी गहरा, पूर्ण ज्ञान/ध्यान नहीं हो पाता; वह सतही (shallow) और भ्रमित (confused) हो जाता है।

यह श्लोक मानसिक एकाग्रता (Concentration) और गहन-कार्य (Deep Work) का सबसे प्राचीन, वैज्ञानिक सूत्र है। यह हमें 'मल्टीटास्किंग' (एक साथ कई काम) के भ्रम से बचाता है, जो आधुनिक युग में अत्यधिक प्रचलित है, परंतु मानसिक रूप से अत्यंत हानिकारक है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience), उत्पादकता (Productivity), और व्यवहारिक मनोविज्ञान (Behavioral Psychology) के सबसे बड़े निष्कर्षों से पूरी तरह मेल खाता है:

1. **"मल्टीटास्किंग (Multi-tasking) एक भ्रम है":** आधुनिक तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience) ने सिद्ध कर दिया है कि मानव मस्तिष्क वास्तव में 'मल्टीटास्किंग' नहीं कर सकता। यह जो करता है, वह है 'टास्क-स्विचिंग' (Task-switching) – अर्थात एक कार्य से दूसरे कार्य पर तेज़ी से शिफ़्ट होना। हर बार शिफ़्ट होने पर, मस्तिष्क को 15-25 मिनट का समय लगता है, दोबारा 'गहन फोकस' (Deep Focus) में आने में। इससे उत्पादकता (Productivity) 40% तक घट जाती है (अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का शोध)।

2. **"Deep Work" (गहन कार्य) – कैल न्यूपोर्ट:** आज के उत्पादकता विशेषज्ञ कैल न्यूपोर्ट (Cal Newport) की पुस्तक 'Deep Work' का मूल सूत्र यही है – एक समय में एक कार्य, बिना किसी विकर्षण (Distraction) के, लंबे समय तक करना। यही वह 'एकस्मिन् विषये ज्ञानं' (एक विषय में गहन ज्ञान) है, जो उच्च-गुणवत्ता वाले परिणाम (जैसे कोडिंग, लेखन, वैज्ञानिक शोध) देता है।

3. **"Flow State" (प्रवाह अवस्था) – मिहाली चिक्सेन्टमिहाली:** 'Flow' (पूर्ण तल्लीनता) की स्थिति तब आती है जब हम पूरी तरह से एक गतिविधि में डूब जाते हैं। यह स्थिति 'एकस्मिन् विषये' (एक विषय में पूर्ण एकाग्रता) का ही आधुनिक नाम है। इसी अवस्था में रचनात्मकता, नवाचार और आनंद (आनंद) चरम पर होता है।

4. **डिजिटल विकर्षण (Digital Distractions) का खतरा:** आज हम सोशल मीडिया नोटिफिकेशन, ईमेल, मैसेज, और अन्य ऐप्स के साथ 'सर्वतः' (हर तरफ) ध्यान बिखेरते हैं। जब हर 5 मिनट पर ध्यान भटकता है, तो हम कभी भी 'एकस्मिन् विषये' (एक गहन कार्य) में नहीं पहुँच पाते। परिणामस्वरूप, हम पूरा दिन 'उथले कार्य (Shallow Work)' में बिता देते हैं – कई काम तो कर लेते हैं, पर कोई भी बड़ा या सार्थक काम नहीं होता।

5. **शिक्षा और अध्ययन (Education):** छात्र अक्सर पढ़ाई के दौरान फोन चेक करते हैं या सोशल मीडिया देखते हैं। यह 'अयुगपद्भाव' (एक साथ कई काम) उनकी समझ (ज्ञान) को सतही (shallow) बना देता है। सच्चा अध्ययन तभी होता है जब वे अपना फोन बंद करके 'एकस्मिन् विषये' (केवल पुस्तक/विषय पर) ध्यान लगाएँ। 'डीप लर्निंग' (Deep Learning) इसी का परिणाम है।

6. **नेतृत्व और निर्णय-क्षमता (Leadership):** एक नेता यदि एक साथ कई कामों में उलझा रहे (कर्मचारियों की समस्या, फोन, मीटिंग्स, ईमेल), तो वह किसी भी मुद्दे को गहराई से नहीं समझ पाता। कामन्दक का सुझाव है –

निर्णयों को बुद्धि से (एकाग्र होकर) करें, न कि प्रमाद (बिखरे मन) से। आज के सर्वश्रेष्ठ CEO (जैसे सत्या नडेला, एलन मस्क) अपने दिन का कुछ समय 'नो-फोन जोन' या 'थिंकिंग टाइम' (सोचने का समय) निकालते हैं, ताकि वे एक विषय पर गहराई से सोच सकें।

१० इंद्रियों का ढांचा – 'निर्मनस्कता' क्या है?

मूल पाठ (संस्कृत)

श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वा घ्राणं चैवेन्द्रियाणि तु ।

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा विषयाः स्मृताः ॥३३॥

IAST:

śrotraṃ tvak cakṣuṣī jihvā ghrāṇaṃ caivendriyāṇi tu | śabdasparśarūparasagandhā viṣayāḥ smṛtāḥ ||33||

शब्दार्थ:

- **श्रोत्रम्** – कान (श्रवण-इंद्रिय / सुनने की क्षमता)
- **त्वक्** – त्वचा / स्पर्श-इंद्रिय (स्पर्श को महसूस करने का अंग – पूरा शरीर)
- **चक्षुषी** – आँखें / नेत्र (देखने / रूप ग्रहण करने की इंद्रिय)
- **जिह्वा** – जीभ (स्वाद / रस ग्रहण करने की इंद्रिय)
- **घ्राणम्** – नाक (गंध / सुगंध-दुर्गंध ग्रहण करने की इंद्रिय)
- **च** – और
- **एव** – ही (निश्चित रूप से)
- **इन्द्रियाणि** – ये सब इंद्रियाँ (ज्ञानेंद्रियाँ)
- **तु** – तो / निश्चित रूप से
- **शब्द** – शब्द (ध्वनि / आवाज)
- **स्पर्श** – स्पर्श (ठंडा-गर्म, कठोर-कोमल आदि का अनुभव)
- **रूप** – रूप (आकार / रंग / सौंदर्य / दृश्य)
- **रस** – रस (स्वाद – मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा आदि)
- **गन्धाः** – गंध (सुगंध / दुर्गंध)
- **विषयाः** – विषय (इंद्रियों के भोग के विषय / आलम्बन)
- **स्मृताः** – कहे गए हैं / माने गए हैं / ज्ञातव्य हैं

भावार्थ: यह श्लोक संसार को जानने के आधारभूत ढाँचे (Framework of Perception) को स्पष्ट करता है। कामन्दक यहाँ बताते हैं कि इस भौतिक जगत को जानने के लिए ५ ज्ञानेंद्रियाँ (ज्ञान-इंद्रियाँ) हैं और इनके ५ विशिष्ट विषय हैं:

ज्ञानेंद्रिय	विषय (भोग का आधार)
श्रोत्र (कान)	**शब्द** (ध्वनि / संगीत / वाणी)

ज्ञानेंद्रिय विषय (भोग का आधार)

त्वक् (त्वचा) स्पर्श (गर्म-ठंडा, कठोर-मृदु)

चक्षु (आँख) रूप (रंग, आकार, सौंदर्य, दृश्य)

जिह्वा (जीभ)रस (स्वाद – मीठा, नमकीन, खट्टा)

घ्राण (नाक) गन्ध (सुगंध या दुर्गंध)

यह पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच विषय मिलकर मनुष्य के संसार-भोग (सांसारिक अनुभव) का पूरा आधार हैं। इन्हीं के माध्यम से हम बाहरी दुनिया से जुड़ते हैं, सुख-दुःख का अनुभव करते हैं, और इन्हीं के कारण आसक्ति (मोह) या विरक्ति (वैराग्य) उत्पन्न होती है।

कामन्दक का यह वर्णन योग-दर्शन (पतंजलि) और सांख्य दर्शन से मेल खाता है। इस श्लोक का मुख्य संदेश यह है कि ज्ञानेंद्रियों और उनके विषयों के बीच के संबंध को समझे बिना, हम अपनी इंद्रिय-लालसा पर नियंत्रण नहीं कर सकते। यही वह मूल सत्य है, जिसे जानकर 'इंद्रिय-जय' (विषय २७-२९) का अभ्यास किया जाता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के उपभोक्तावादी (Consumerism) और मीडिया-प्रधान (Media-saturated) विश्व में हमारी सबसे बड़ी कमजोरी को उजागर करता है:

1. **"Attention Economy" (ध्यान की अर्थव्यवस्था):** आज की फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ओटीटी, और विज्ञापनदाताओं का पूरा कारोबार इन्हीं ५ इंद्रियों को लक्षित करके बनाया गया है:
    - **रूप (दृश्य):** इंस्टाग्राम रील्स, फिल्मी ट्रेलर, चमकीले बैनर – आँखों को बांधकर रखते हैं।
    - **शब्द (ध्वनि):** पॉडकास्ट, टिकटॉक म्यूजिक, ब्रेकिंग न्यूज़ – कानों को बंधक बनाते हैं।
    - **रस (स्वाद):** फूड-व्लॉग्स, डिलीवरी ऐप्स, और प्रोसेस्ड फूड विज्ञापन – जीभ को ललचाते हैं।
    - **स्पर्श (सुख):** कपड़ों, लग्जरी कारों, और महंगे स्मार्टफोन्स का विज्ञापन त्वचा के सुख (आराम/प्रतिष्ठा) पर निशाना साधता है।
    - **गन्ध (सुगंध):** इत्र, स्किनकेयर उत्पाद, एयर फ्रेशनर – नाक को लुभाते हैं।
2. **"Sensory Overload" (संवेदी अतिभार):** आधुनिक जीवन में हम एक साथ बहुत अधिक उत्तेजनाओं (Stimulus) के संपर्क में हैं – एसी (स्पर्श), स्क्रीन (रूप), हेडफोन (शब्द), पिज़्ज़ा (रस), और रूम फ्रेशनर (गंध) एक साथ। यह अतिभार (Overload) हमें मानसिक रूप से थका देता है, हमारी निर्णय-क्षमता को कम करता है, और हमें वास्तविक आत्म-जागरूकता (Self-awareness) से दूर कर देता है।
3. **"Mindful Consumption" (सावधानीपूर्ण उपभोग):** इन ५ विषयों का दास बनना विनाश है, और इनका स्वामी बनना विवेक है। आज 'डिजिटल डिटॉक्स' (Digital Detox) और 'माइंडफुल ईटिंग' (Mindful Eating) का जो चलन है, वह इन्हीं ५ इंद्रियों पर पुनः नियंत्रण पाने का प्रयास है – जानबूझकर नोटिफिकेशन बंद करना (शब्द), स्क्रीन टाइम कम करना (रूप), स्वस्थ भोजन चुनना (रस) आदि।
4. **साइंस (विज्ञान) की स्वीकार्यता:** आधुनिक न्यूरोसाइंस (Neuroscience) इन ५ इंद्रियों को पाँच अलग-अलग संवेदी-तंत्रिका पथ (Sensory Neural Pathways) के रूप में पहचानता है। यह श्लोक लगभग 1500 साल पहले यह सटीक शारीरिक-मानसिक वर्णन देता है, जो आज के मेडिकल साइंस से पूरी तरह मेल खाता है।
5. **"विषय" का आधुनिक अर्थ – Addiction (लत):** फास्ट-फूड (रस), पोर्नोग्राफी (रूप), गॉसिप (शब्द) – ये सब 'विषय' के आधुनिक रूप हैं, जो हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन (Dopamine) रिलीज़ करके लत (Addiction) पैदा करते हैं। इन्हें पहचानना (विषयाः स्मृताः) ही इनसे बचने का पहला कदम है।

५ कर्मेन्द्रियाँ (क्रिया के अंग)

मूल पाठ (संस्कृत):

वाक् पाणि पादमेढ्रं च गुदः पञ्चेन्द्रियाणि च ।

कर्मेन्द्रियाण्यपि स्मृतः कर्मणां प्रवृत्तये ॥३४॥

IAST:

vāk pāṇi pādameḍhraṃ ca gudaḥ pañcendriyāṇi ca | karmendriyāṇyapi smṛtaḥ karmaṇāṃ pravṛttaye ||34||

शब्दार्थ:

- **वाक्** (vāk) – वाणी / बोलने का अंग (Speech)
- **पाणि** (pāṇi) – हाथ (Hands)
- **पाद** (pāda) – पैर (Feet / Locomotion)
- **मेढ्रम्** (meḍhram) – उपस्थ / जननेन्द्रिय (Reproductive organ)
- **च** (ca) – और
- **गुदः** (gudaḥ) – गुदा / मलद्वार (Excretory organ / Anus)
- **पञ्चेन्द्रियाणि** (pañcendriyāṇi) – ये पाँच इंद्रियाँ (यानी पाँच कर्मेन्द्रियाँ)
- **च** (ca) – और (वाक्य-पूर्ति हेतु)
- **कर्मेन्द्रियाणि** (karmendriyāṇi) – कर्मेन्द्रियाँ (क्रिया / कार्य करने वाली इंद्रियाँ)
- **अपि** (api) – भी
- **स्मृतः** (smṛtaḥ) – कहे गए हैं / ज्ञात हैं / माने गए हैं
- **कर्मणाम्** (karmaṇām) – कर्मों / क्रियाओं / कार्यों की
- **प्रवृत्तये** (pravṛttaye) – प्रवृत्ति / संपादन / निष्पादन / करने के लिए

भावार्थ: श्लोक ३३ में कामन्दक ने ५ ज्ञानेंद्रियाँ (ज्ञान-इंद्रियाँ) बताईं – जिनसे हम दुनिया को जानते/समझते हैं (देखना, सुनना, सूँघना, चखना, छूना)। अब इस श्लोक ३४ में वे ५ कर्मेन्द्रियाँ (कर्म-इंद्रियाँ) बताते हैं – जिनसे हम दुनिया में क्रिया/कार्य करते हैं।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं:

1. **वाक् (वाणी)** – बोलना, कहना, अभिव्यक्त करना।
2. **पाणि (हाथ)** – पकड़ना, देना, लेना, बनाना, लिखना।
3. **पाद (पैर)** – चलना, दौड़ना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।
4. **मेढ्र (जननेंद्रिय)** – प्रजनन / यौन-क्रिया।
5. **गुद (मलद्वार)** – मल-त्याग / शारीरिक अपशिष्ट को बाहर निकालना।

कामन्दक कहते हैं कि इन पाँचों का उद्देश्य 'कर्मणां प्रवृत्तये' है – अर्थात "कर्मों के करने/संपादन के लिए"। ये वे अंग हैं, जिनके द्वारा हम अपने संकल्प (इरादे) को क्रिया (एक्शन) में बदलते हैं। ज्ञानेंद्रियाँ तो केवल सूचना (इनपुट) लाती हैं, पर कर्मेन्द्रियाँ उस सूचना के आधार पर प्रतिक्रिया (आउटपुट) देती हैं।

इस श्लोक का गहनतम रहस्य यह है – "ज्ञानेंद्रियों को नियंत्रित करना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही (या उससे भी अधिक) कर्मेन्द्रियों को नियंत्रित करना है।" क्योंकि ज्ञानेंद्रियाँ (आँख/कान) भले ही कोई पाप देख/सुन लें, पर यदि कर्मेन्द्रियाँ (हाथ/वाणी) उस पाप को अंजाम न दें, तो पाप नहीं होता। इसलिए कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण = सच्चा आत्म-अनुशासन।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के व्यवहारिक मनोविज्ञान (Behavioral Psychology), कॉर्पोरेट आचार-संहिता (Corporate Ethics), और व्यक्तिगत विकास (Self-Development) में पूरी तरह उतरता है:

1. **"What you do defines you" (आपका कर्म ही आपको परिभाषित करता है):** आज का समाज और कॉर्पोरेट जगत आपको आपके 'आउटपुट' (Output) – आपके कर्मों (Actions) – से मापता है, न कि आपके 'इनपुट' (Input) – आपके विचारों/ज्ञान से। ५ कर्मेन्द्रियाँ ही वे साधन हैं, जिनसे आप दुनिया में मूल्य (Value) पैदा करते हैं – बोलकर (वाक्), बनाकर/लिखकर (पाणि), यात्रा करके/मेहनत करके (पाद)।

2. **डिजिटल युग में वाणी (वाक्) की शक्ति और जिम्मेदारी:** आज 'वाक्' (Speech) का दायरा सोशल मीडिया, ट्वीट, व्हाट्सएप, और वीडियो कॉल तक फैल गया है। एक असंयमित 'वाक्' (हानि) करियर, रिश्ते, और यहाँ तक कि देश की सुरक्षा (साइबर बुलिंग, फेक न्यूज़, हेट स्पीच) को नष्ट कर सकती है। कामन्दक कहते हैं – वाक् पर नियंत्रण (बोलने से पहले सोचना) ही सबसे बड़ा संयम है।

3. **हाथों (पाणि) का सदुपयोग बनाम दुरुपयोग:** हाथों से आप भोजन दे सकते हैं, दान कर सकते हैं, कला बना सकते हैं (सदुपयोग), या चोरी कर सकते हैं, मार सकते हैं (दुरुपयोग)। कॉर्पोरेट जगत में 'पाणि' का अर्थ भ्रष्टाचार (रिश्वत लेना), या ईमानदारी (सही काम करना) है। नियंत्रित पाणि ही ईमानदार कमाई (Honest Livelihood) का आधार है।

4. **पैरों (पाद) का सदुपयोग:** आज 'पाद' का अर्थ है – मेहनत (Hard Work), लगन (Dedication), और दृढ़ता (Persistence)। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर लगातार कदम बढ़ाता है (पाद-संयम), वह सफल होता है। जो आलसी है, या भटकता है, वह पिछड़ जाता है।

5. **मेढ्र (जननेंद्रिय) और गुदा – आधुनिक स्वास्थ्य और नैतिकता:**

   - **मेढ्र** (Sexual Conduct) – आज #MeToo, Sexual Harassment, और अनैतिक संबंधों के मामले इतने बढ़ गए हैं कि कंपनियों ने सख्त POSH (Prevention of Sexual Harassment) कानून बना लिए हैं। यह श्लोक सिखाता है – इस इंद्रिय पर संयम (सहमति, निष्ठा, और शालीनता) ही व्यक्ति और संगठन की रक्षा करता है।

   - **गुदा** (Excretory) – आधुनिक संदर्भ में, यह 'कचरा निपटान' का रूपक है – नकारात्मकता, तनाव, और बुरी आदतों को सही तरीके से बाहर निकालना (जैसे व्यायाम, स्वस्थ आहार, पर्याप्त नींद)। शारीरिक स्वच्छता और स्वास्थ्य (Fitness) भी इसी का हिस्सा है, क्योंकि रुका हुआ मल (कब्ज) शरीर को बीमार कर देता है।

6. **"कर्मणां प्रवृत्तये" – कर्मयोग का आधार:** यह श्लोक भगवद्गीता के कर्म-योग से मेल खाता है। शरीर को कर्म करने के लिए ही बनाया गया है। इन ५ कर्मेन्द्रियों को सही दिशा (धर्म) में लगाकर ही व्यक्ति स्वयं का विकास (Self-Actualization) और समाज की सेवा (Service) कर सकता है। बिना कर्मेन्द्रियों के हम शक्तिहीन हैं, और बिना नियंत्रण के ये सबसे बड़ा खतरा हैं।

कर्मेन्द्रियों का संतुलित एवं अनुशासित उपयोग

मूल पाठ (संस्कृत):

अधस्तादुपरिष्टाच्च सर्वतः सन्नियोजयेत् ।

नातिमात्रं न चात्यर्थं कुर्यात्कर्म महीपतिः ॥३५॥

IAST:

adhastādupariṣṭācca sarvataḥ sanniyojayet / nātimātraṃ na cātyarthaṃ kuryātkarma mahīpatiḥ //35//

शब्दार्थ:

- **अधस्तात्** (adhastāt) – नीचे वाली (कर्मेन्द्रियाँ – अर्थात गुदा / मल-त्याग इंद्रिय)
- **उपरिष्टात्** (upariṣṭāt) – ऊपर वाली (कर्मेन्द्रियाँ – अर्थात वाणी, हाथ, पैर, और जननेन्द्रिय)
- **च** (ca) – और
- **सर्वतः** (sarvataḥ) – सभी प्रकार से / सम्पूर्ण रूप से / सभी अंगों को
- **सन्नियोजयेत्** (sanniyojayet) – उचित रूप से नियोजित / अनुशासित / नियंत्रित करे
- **न** (na) – नहीं
- **अतिमात्रम्** (atimātram) – अत्यधिक / अति / बहुत ज़्यादा (मात्रा में)
- **न** (na) – नहीं
- **च** (ca) – और
- **अत्यर्थम्** (atyartham) – अनुचित / अत्यंत / अतिक्रमण / उचित सीमा से बाहर (गलत तरीका)
- **कुर्यात्** (kuryāt) – करे (कर्म को)
- **कर्म** (karma) – कार्य / क्रिया / व्यवहार
- **महीपतिः** (mahīpatiḥ) – राजा / पृथ्वीपति / नेता / शासक

भावार्थ: यह श्लोक, पिछले श्लोक (३४) की सीधी कड़ी है। पिछले श्लोक में कामन्दक ने ५ कर्मेन्द्रियों (वाणी, हाथ, पैर, जननेन्द्रिय, गुदा) का परिचय दिया। अब इस श्लोक में वे उनके उपयोग का सर्वश्रेष्ठ सूत्र बताते हैं – 'संतुलन' (Moderation) और 'नियम-पालन' (Righteousness)।

कामन्दक कहते हैं – राजा (नेता) को अपनी सभी कर्मेन्द्रियों (ऊपर-वाली – वाणी, हाथ, पैर, जननेन्द्रिय; और नीचे-वाली – गुदा) का उपयोग 'सर्वतः' (समग्र रूप से) 'सन्नियोजयेत्' (अनुशासित/नियंत्रित करके) करना चाहिए।

फिर वे दो बातों से स्पष्ट रूप से बचने को कहते हैं:

1. **"न अतिमात्रम्"** – किसी भी कर्म को 'अति' (बहुत अधिक / अत्यधिक मात्रा) में न करें। (जैसे – अत्यधिक बोलना, अत्यधिक खाना, अत्यधिक व्यायाम, अत्यधिक काम)
2. **"न च अत्यर्थम्"** – किसी भी कर्म को 'अनुचित' (गलत / अधार्मिक / अत्याचारी) तरीके से न करें। (जैसे – झूठ बोलना, चोरी करना, अनैतिक यौन-संबंध, हिंसा)

गहनतम संदेश – जीवन में 'मध्यम मार्ग' (Middle Path) ही सच्चा मार्ग है। न अति (अत्यधिकता) और न अनाचार (अनुचितता) – बल्कि संतुलित, नियमबद्ध और नैतिक आचरण ही शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की कुंजी है। एक अनुशासित राजा/नेता ही अपनी कर्मेन्द्रियों पर इस प्रकार नियंत्रण रखता है, जिससे वह दीर्घायु, सुख और प्रजा का विश्वास प्राप्त करता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'हायर-फास्टर-मोर' (अधिक, तेज़, बड़ा) की संस्कृति के लिए सबसे बड़ा प्रतिकार है। यह 'Mindful Living' (सचेत जीवन) का प्राचीनतम सूत्र है:

1. **"अतिमात्र" (अत्यधिकता) से बचाव – आधुनिक बीमारियाँ:**
   - **अत्यधिक बोलना (वाक्)** – गपशप, गॉसिप, सोशल मीडिया पर ओवरशेयरिंग – रिश्ते खराब करता है, ऊर्जा बर्बाद करता है, और विश्वासघात का कारण बनता है।
   - **अत्यधिक काम (पाणि/पाद)** – 'बर्नआउट' (Burnout) आज की सबसे बड़ी बीमारी है। अत्यधिक मेहनत, बिना आराम के, शारीरिक और मानसिक रूप से तोड़ देती है। 'Workaholism' (काम की लत) भी एक 'अतिमात्र' है।
   - **अत्यधिक खाना (जीभ/गुदा)** – मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग – सब 'अतिमात्र' (अधिक भोजन, अधिक फास्ट-फूड) का परिणाम हैं।
   - **अत्यधिक व्यायाम** – हाँ, यह भी हानिकारक है! अत्यधिक दौड़ना या जिम करना जोड़ों और हृदय को नुकसान पहुँचाता है।
2. **"अत्यर्थ" (अनुचितता) से बचाव – आधुनिक अनैतिकता:**
   - **वाणी में अत्यर्थ** – अपशब्द, झूठ, गाली, धोखा – ये सब 'अत्यर्थ' (अनुचित) वाणी है। आज का बुलिंग, ट्रोलिंग, फेक न्यूज़ – यही 'अत्यर्थ-वाक्' है।
   - **कर्मों में अत्यर्थ** – भ्रष्टाचार (हाथों में रिश्वत), हिंसा (हाथों/पैरों से मार), अनैतिक यौन-संबंध (मेढ्र का दुरुपयोग) – ये सब 'अत्यर्थ' (अनुचित) कर्म हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों को नष्ट करते हैं।
3. **"सन्नियोजयेत्" – अनुशासन आधुनिक सफलता का रहस्य:** आज की सफलता का फॉर्मूला 'Discipline = Freedom' है (जॉको विलिंक का प्रसिद्ध सूत्र)। जो व्यक्ति अपनी दिनचर्या (सोना, उठना, खाना, काम करना, व्यायाम) को 'सन्नियोजित' (अनुशासित) कर लेता है, वह तनाव-मुक्त होकर बड़ी सफलता प्राप्त करता है। जो असंयमी है, वह अराजकता में रहता है।
4. **न्यूट्रिशन (पोषण) और 'अतिमात्र' का सिद्धांत:** आधुनिक आहार विज्ञान (Nutrition Science) भी कहता है – न 'अतिमात्र' (ज़्यादा कैलोरी) और न 'हीनमात्र' (कम पोषण), बल्कि 'संतुलित मात्रा' (Balanced Diet) ही स्वास्थ्य की कुंजी है। यह श्लोक 1500 साल पहले ही यह वैज्ञानिक सच्चाई बता रहा है।
5. **कॉर्पोरेट और राजनीतिक जगत में 'अत्यर्थ' (अनैतिकता) का खतरा:** सत्यम, एनरॉन, वोल्क्सवैगन, और अनेक बैंकों के घोटाले – ये सब 'अत्यर्थ' (अनैतिक, भ्रष्ट, गलत) कर्मों के कारण हुए हैं। जो नेता 'अत्यर्थ' (अनैतिक) मार्ग पर चलता है, वह कुछ समय के लिए लाभ कमाता है, पर अंततः पूरी संस्था को बर्बाद कर देता है। 'अतिमात्र' (अत्यधिक लालच) – कंपनियों का अत्यधिक मुनाफा कमाने का लालच (शार्ट-टर्म प्रॉफिट) उन्हें दीर्घकालिक स्थिरता (Sustainability) से वंचित कर देता है।
6. **मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health):** अत्यधिक स्क्रीन-टाइम (अतिमात्र) और अनुचित सोशल मीडिया कंटेंट (अत्यर्थ) – ये दोनों मिलकर आज के युवाओं में चिंता (Anxiety) और अवसाद (Depression) को जन्म दे रहे हैं। कामन्दक का उपाय है – 'सन्नियोजयेत्' (नियंत्रित करें) – अर्थात समय सीमा निर्धारित करें और केवल सकारात्मक, शिक्षाप्रद कंटेंट देखें।

असंयम का परिणाम (बुरे कर्म → विनाश)

मूल पाठ (संस्कृत):

एतैः कर्मेन्द्रियैः पापं कुर्वन्निह विपद्यते ।

संयतैस्तु शुभं कर्म सम्पद्येत नृपात्मजैः ॥३६॥

IAST:

etaiḥ karmendriyaiḥ pāpaṃ kurvanniha vipadyate | saṃyataistu śubhaṃ karma sampadyeta nṛpātmajaiḥ ||36||

शब्दार्थ:

- **एतैः** – इन (कर्मेन्द्रियों) के द्वारा
- **कर्मेन्द्रियैः** – कर्मेन्द्रियों (वाणी, हाथ, पैर, जननेन्द्रिय, गुदा) के द्वारा
- **पापम्** – पाप / बुरा कर्म / अनैतिक / अधार्मिक / विनाशकारी कार्य
- **कुर्वन्** – करते हुए
- **इह** – इस लोक में / इस जीवन में / वर्तमान में ही
- **विपद्यते** – विपत्ति / विनाश / नाश / बर्बादी को प्राप्त होता है
- **संयतैः** – संयत / नियंत्रित / अनुशासित (कर्मेन्द्रियों) के द्वारा
- **तु** – परन्तु / किन्तु
- **शुभम्** – शुभ / अच्छा / नैतिक / कल्याणकारी / सकारात्मक
- **कर्म** – कर्म / कार्य / आचरण
- **सम्पद्येत** – सिद्ध होता है / संपन्न होता है / फलित होता है / सफल होता है
- **नृपात्मजैः** – राजपुत्रों / राजाओं / शासकों / नेताओं द्वारा (अथवा नृप + आत्मजैः = राजा के द्वारा / नेतृत्व वर्ग द्वारा)

भावार्थ: यह श्लोक, पिछले श्लोक (३५) के व्यावहारिक परिणाम को बताता है। जहाँ पिछले श्लोक में कामन्दक ने कर्मेन्द्रियों के 'अतिमात्र' (अत्यधिक) और 'अत्यर्थ' (अनुचित) उपयोग से बचने का उपदेश दिया, वहीं इस श्लोक में वे इसके फल (परिणाम) को स्पष्ट रूप से बताते हैं।

कामन्दक कहते हैं – "एतैः कर्मेन्द्रियैः पापं कुर्वन्निह विपद्यते" – अर्थात जो व्यक्ति इन कर्मेन्द्रियों (वाणी, हाथ, पैर, जननेन्द्रिय, गुदा) के द्वारा 'पाप' (बुरे, अनैतिक, हानिकारक कर्म) करता है, वह 'इह' (इसी लोक/जीवन में) 'विपद्यते' (विपत्ति/विनाश को प्राप्त होता है)।

यहाँ 'पाप' का अर्थ केवल धार्मिक अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और व्यक्तिगत रूप से विनाशकारी कार्य हैं – जैसे झूठ बोलना (वाक्), चोरी/हिंसा (पाणि), अनुचित यौन-संबंध (मेढ्र), और शारीरिक स्वास्थ्य को नष्ट करना (गुदा/पाद)।

इसके विपरीत, वे कहते हैं – "संयतैस्तु शुभं कर्म सम्पद्येत" – परन्तु जो व्यक्ति अपनी कर्मेन्द्रियों को 'संयत' (नियंत्रित/अनुशासित) रखता है, उसके द्वारा किए गए 'शुभ' (नैतिक, सकारात्मक, कल्याणकारी) कर्म 'सम्पद्येत' (सिद्ध/फलित/सफल) होते हैं।

अंतिम पद "नृपात्मजैः" (राजाओं/नेताओं द्वारा) विशेष रूप से शासक वर्ग को सम्बोधित करता है, क्योंकि उनके कर्मों का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। यदि नेता बुरे कर्म करता है, तो समाज नष्ट होता है; यदि नेता संयमी और शुभ-कर्मी है, तो समाज की उन्नति होती है।

गहनतम संदेश – 'जैसा कर्म, वैसा फल' – यह जीवन का अटल नियम है। आपकी कर्मेन्द्रियाँ (आपकी क्रियाएँ) ही आपके भविष्य (सुख/दुःख, उत्थान/पतन) का निर्माण करती हैं। अनुशासन (संयम) सफलता की कुंजी है, और असंयम (आवेश/अनैतिकता) विनाश का द्वार है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'कर्म-फल' (Law of Karma) और 'एक्शन-कॉन्सिक्वेंस' (Action-Consequence) के वैज्ञानिक सिद्धांत का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। यह हर क्षेत्र में लागू होता है:

1. **"Actions have Consequences" (हर कर्म का परिणाम होता है):** आधुनिक मनोविज्ञान (Behavioral Psychology) और न्यूरोसाइंस यही कहते हैं – हमारी आदतें (Actions) हमारे मस्तिष्क के तंत्रिका-मार्ग (Neural Pathways) को आकार देती हैं। बुरी आदतें (पाप/अनैतिक कर्म) – जैसे झूठ बोलना, धोखा देना, अत्यधिक नशा – धीरे-धीरे व्यक्ति के चरित्र को नष्ट कर देती हैं और उसे 'विपद्यते' (विपत्ति) – जैसे नौकरी छूटना, तलाक, स्वास्थ्य खराब होना, या जेल – की ओर ले जाती हैं।

2. **कॉर्पोरेट जगत में 'पाप' (अनैतिकता) का दुष्परिणाम:**

   - एनरॉन (Enron) घोटाला, सत्यम (Satyam) घोटाला, वोल्क्सवैगन (Volkswagen) एमिशन स्कैंडल – ये सब 'पाप' (धोखाधड़ी, झूठे लेखा-जोखा, अनैतिक व्यापार) के उदाहरण हैं। इन कंपनियों के सीईओ ने अपनी 'वाक्' (झूठी रिपोर्ट) और 'पाणि' (गलत हस्ताक्षर) का दुरुपयोग किया, और परिणामस्वरूप, कंपनियाँ दिवालिया हो गईं, हजारों कर्मचारी बेरोजगार हो गए, और सीईओ जेल गए। यही है 'विपद्यते' (विनाश)।

   - वहीं, टाटा ग्रुप, विप्रो, या इंफोसिस – जिन्होंने 'संयतैः' (नियंत्रित, नैतिक) कर्म किए, उन्होंने 'शुभं कर्म' (ईमानदारी, पारदर्शिता, CSR) किया, और वे दशकों तक 'सम्पद्येत' (फले-फूले) हैं।

3. **राजनीति और शासन में नेताओं के लिए चेतावनी:**

   - एक नेता (नृपात्मजैः) अपनी वाणी (भ्रामक वादे), हाथ (भ्रष्टाचार), और पैर (जनता की समस्याओं से भागना) का दुरुपयोग करता है, तो वह 'इह विपद्यते' (इसी जीवन में सत्ता-हार, अपयश, और जनता के क्रोध का शिकार होता है) – जैसे कई राजनेता चुनाव हार जाते हैं या भ्रष्टाचार के मामलों में फँस जाते हैं।

   - वहीं, लाल बहादुर शास्त्री, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, या नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं ने अपनी कर्मेन्द्रियों को संयमित रखा, ईमानदारी (शुभ-कर्म) की, और उन्हें 'सम्पद्येत' (शाश्वत यश, प्रेम और सम्मान) मिला।

4. **"Atomic Habits" (छोटी आदतों) का सिद्धांत – जेम्स क्लियर:** आधुनिक सेल्फ-हेल्प बेस्टसेलर 'Atomic Habits' कहता है – "Every action is a vote for the type of person you wish to become." (हर कर्म उस व्यक्ति के लिए एक वोट है, जो आप बनना चाहते हैं।) 'पापं कुर्वन्' (बुरे कर्म – दिन में 10 बार फोन चेक करना, सुबह देर से उठना, एक्सरसाइज छोड़ना) करने वाला 'विपद्यते' (बीमार, असंतुष्ट, असफल) होता है। 'संयतैः' (अनुशासित – रोज़ 20 मिनट पढ़ना, सुबह 5 बजे उठना, स्वस्थ भोजन) करने वाला 'शुभं कर्म' (स्वास्थ्य, ज्ञान, सफलता) प्राप्त करता है और 'सम्पद्येत' (फलता-फूलता) है।

5. **"इह" (इसी जीवन) पर विशेष ध्यान:** कामन्दक विशेष रूप से कहते हैं कि बुरे कर्मों का दुष्परिणाम 'इह' (इसी जीवन में) मिलता है। इसका आधुनिक अर्थ – हर गलत कदम का तुरंत या जल्द ही नकारात्मक परिणाम सामने आ जाता है। सोशल मीडिया पर एक गलत ट्वीट (वाक्) कुछ ही घंटों में करियर तबाह कर सकता है (कैंसल कल्चर)। एक गलत फाइनेंशियल निर्णय (पाणि) कुछ ही महीनों में कर्ज में डुबो सकता है। इसलिए "इह" पर जोर – देरी नहीं, तुरंत फल मिलता है (Either Reward or Punishment)।

6. **"शुभम्" और "पापम्" की आधुनिक परिभाषा:** आज 'पाप' = कोई भी ऐसा कार्य जो आपके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या वित्तीय स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है। 'शुभ' = वह कार्य जो आपके और समाज के लिए सकारात्मक हो। (जैसे – पर्यावरण प्रदूषण फैलाना = पाप; पेड़ लगाना = शुभ)।

मूल पाठ (संस्कृत)

प्रयत्नौ ह्युभयौ चैताविच्छाशक्त्या समन्वितौ ।

प्रयत्नसंरोधतो वा निर्मनस्कं भवेन्नरः ॥३७॥

IAST:

prayatnau hyubhayau caitāvicchāśaktyā samanvitau | prayatnasaṃrodhato vā nirmanaskaṃ bhavennaraḥ ||37||

शब्दार्थ:

- **प्रयत्नौ** (prayatnau) – प्रयत्न (दो प्रकार के) – अर्थात संकल्प (मानसिक योजना / इच्छा) और अध्यवसाय (उस योजना को क्रियान्वित करना / प्रयास) – ये दोनों
- **हि** (hi) – निश्चय ही
- **उभयौ** (ubhayau) – दोनों
- **च** (ca) – और
- **एतौ** (etau) – ये (दोनों)
- **इच्छाशक्त्या** (icchāśaktyā) – इच्छा-शक्ति (Willpower / Desire Power) के द्वारा
- **समन्वितौ** (samanvitau) – संयुक्त / एकीकृत / सह-स्थित (अर्थात, ये दोनों इच्छा-शक्ति से ही संचालित होते हैं)
- **प्रयत्नसंरोधतः** (prayatnasaṃrodhataḥ) – प्रयत्नों (मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं) के संरोध (रुक जाना / निरोध / नियंत्रण / विराम) से
- **वा** (vā) – अथवा
- **निर्मनस्कम्** (nirmanaskam) – निर्मनस्कता / विचार-शून्य अवस्था / मन की परम शांत, स्थिर, निर्विकल्प अवस्था
- **भवेत्** (bhavet) – होती है / प्राप्त होती है
- **नरः** (naraḥ) – मनुष्य को

भावार्थ: यह श्लोक मानव मन की कार्यप्रणाली और ध्यान (Meditation) / मानसिक शांति (Mental Peace) के रहस्य को स्पष्ट करता है।

कामन्दक कहते हैं – "प्रयत्नौ ह्युभयौ... इच्छाशक्त्या समन्वितौ" – अर्थात, 'संकल्प' (योजना बनाना) और 'अध्यवसाय' (क्रियान्वयन/प्रयास) – ये दोनों 'इच्छा-शक्ति' (Willpower) के द्वारा ही संचालित होते हैं। हमारा कोई भी कर्म, चाहे वह मानसिक हो (सोचना) या शारीरिक (करना), इच्छा-शक्ति के बिना नहीं होता।

आगे वे कहते हैं – "प्रयत्नसंरोधतो वा निर्मनस्कं भवेन्नरः" – अर्थात, जब यह मानसिक प्रयत्न (संकल्प-विकल्प, चिंता, कल्पना, योजना) रुक जाता है / निरुद्ध (नियंत्रित) हो जाता है, तो मनुष्य 'निर्मनस्क' (विचार-शून्य, परम शांत, ध्यान-अवस्था) को प्राप्त कर लेता है।

'निर्मनस्कता' (Nirmanaskata) – यह वह अवस्था है, जब मन में कोई विचार (Thought) नहीं उठता; कोई इच्छा, कोई कल्पना, कोई चिंता, कोई योजना नहीं होती। यह परम शांति, मौन, और गहन एकाग्रता की अवस्था है। यही योग-दर्शन की 'चित्त-वृत्ति-निरोध' (मन की वृत्तियों का निरोध) की अवस्था है, और यही आधुनिक 'ध्यान (Meditation)' और 'माइंडफुलनेस' (Mindfulness) का लक्ष्य है।

गहन संदेश यह है कि मानसिक शांति (Peace) बाहरी वस्तुओं से नहीं, बल्कि आंतरिक 'प्रयत्न-संरोध' (विचारों को रोकने के अभ्यास) से प्राप्त होती है। जब तक हम विचारों (अतीत/भविष्य की चिंता) में उलझे रहते हैं, तब तक मन चंचल और अशांत रहता है। जब हम विचारों को शांत करना सीख जाते हैं, तो अपार ऊर्जा, स्पष्टता और संतोष का अनुभव होता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience), मनोविज्ञान (Psychology), ध्यान-पद्धतियाँ (Meditation), और मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) के सबसे प्रचलित विषयों से पूरी तरह मेल खाता है:

1. **"निर्मनस्कता" = "Default Mode Network (DMN)" का शांत होना:** आधुनिक न्यूरोसाइंस में, मस्तिष्क का 'डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क' (DMN) – वह भाग जो तब सक्रिय होता है, जब हम आराम में हों और दिवास्वप्न (Daydreaming) / चिंता / पछतावा / योजना बनाते रहें – 'प्रयत्न' (संकल्प-विकल्प) का आधुनिक रूप है। जब हम ध्यान (Meditation) करते हैं, तो यह DMN शांत (संरोध) हो जाता है, और हम 'निर्मनस्क' (Thoughtless) अवस्था में पहुँच जाते हैं। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि DMN का अत्यधिक सक्रिय होना अवसाद (Depression) और चिंता (Anxiety) का कारण है। इसका शांत होना मानसिक शांति (Peace) लाता है।

2. **"Flow State" (प्रवाह अवस्था) – मिहाली चिक्सेन्टमिहाली:** आधुनिक मनोविज्ञान में 'Flow State' वह अवस्था है, जब व्यक्ति किसी कार्य में इतना तल्लीन हो जाता है कि समय, स्थान, और स्वयं का अहंभाव (Ego) समाप्त हो जाता है – यही 'निर्मनस्कता' का अनुभव है। एथलीट, संगीतकार, कलाकार, और वैज्ञानिक इसी अवस्था में सर्वोत्तम रचनात्मकता (Creativity) और प्रदर्शन (Performance) प्राप्त करते हैं। यह 'प्रयत्न-संरोध' (अत्यधिक कोशिश छोड़कर प्रवाह में आना) का ही परिणाम है।

3. **"Willpower" (इच्छा-शक्ति) – सीमित संसाधन:** आधुनिक मनोविज्ञान (Roy Baumeister का शोध) कहता है कि इच्छा-शक्ति (Willpower) एक सीमित संसाधन है, जो पूरे दिन उपयोग करने पर घटती जाती है (Ego Depletion)। कामन्दक का 'प्रयत्न-संरोध' – अर्थात अत्यधिक सोचना और योजना बनाना बंद करना – हमारी विलपॉवर को बचाता है और उसे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए संरक्षित रखता है। यही कारण है कि ध्यान (Meditation) करने से लोग अधिक उत्पादक (Productive) बनते हैं।

4. **"इच्छा-शक्ति" (Willpower) और "संकल्प-शक्ति" (Resolution):** आज 'न्यू ईयर रेजोल्यूशन' या डाइट प्लान बनाना (संकल्प) तो सभी करते हैं, पर उसे लागू करना (अध्यवसाय) मुश्किल होता है, क्योंकि इच्छा-शक्ति कमजोर हो जाती है। श्लोक सिखाता है – इच्छा-शक्ति को मजबूत करने के लिए, मानसिक गतिविधि (अनावश्यक विचार) को कम करना (संरोध) आवश्यक है। एक शांत मन अत्यधिक शक्तिशाली होता है।

5. **"Digital Detox" और "Mental Silence":** आज हम लगातार विचारों, सोशल मीडिया नोटिफिकेशन, न्यूज़, और चिंताओं (प्रयत्नों) से भरे रहते हैं। इससे हमारी मानसिक ऊर्जा लगातार खर्च होती रहती है। 'प्रयत्न-संरोध' (Mental Silence) का अभ्यास – जैसे 10 मिनट ध्यान, बिना फोन के टहलना, या चुपचाप बैठना – हमारे मस्तिष्क को रिचार्ज करता है, तनाव (Cortisol) कम करता है, और रचनात्मकता (Creativity) बढ़ाता है।

6. **वैज्ञानिक प्रमाण (Scientific Evidence):** गोयल एट अल (Goyal et al., JAMA Internal Medicine, 2014) के मेटा-अध्ययन (Meta-analysis) ने सिद्ध किया कि ध्यान (Mindfulness Meditation) चिंता (Anxiety), अवसाद (Depression), और तनाव (Stress) को काफी हद तक कम करता है। यह ध्यान क्या करता है? – ठीक वही, जो कामन्दक कहते हैं – 'प्रयत्न-संरोध' (विचारों को रोकना, मन को शांत करना)।

मन की विजय सबसे कठिन, पर सबसे बड़ी

मूल पाठ (संस्कृत):

दुर्जयं मन आहुस्तु सर्वेषामेव देहिनाम् ।

तज्जयाद् विजयं प्राहुर्विजयं सर्वसम्पदाम् ॥३८॥

IAST:

***durjayaṃ mana āhustu sarveṣāmeva dehinām /
tajjayād vijayaṃ prāhurvijayaṃ sarvasampadām ||38||***

शब्दार्थ:

- **दुर्जयम्** (durjayam) – दुर्जय / जीतना कठिन / जिसे वश में करना बहुत मुश्किल हो
- **मनः** (manaḥ) – मन (चित्त / विचारधारा)

- **आहुः** (āhuḥ) – (विद्वान / ऋषि / ज्ञानी) कहते हैं
- **तु** (tu) – तो / निश्चित रूप से
- **सर्वेषाम्** (sarveṣām) – सब / समस्त के
- **एव** (eva) – ही / निश्चित रूप से
- **देहिनाम्** (dehinām) – देह (शरीर) धारण करने वाले प्राणियों / मनुष्यों का
- **तज्जयात्** (tajjayāt) – तत् (उस – अर्थात मन) + जयात् (जीतने / वश में करने से) = मन को जीतने से
- **विजयम्** (vijayam) – विजय / सफलता
- **प्राहुः** (prāhuḥ) – कहते हैं / मानते हैं
- **सर्वसम्पदाम्** (sarvasampadām) – सर्व (सब) + सम्पदाम् (सम्पदाओं / ऐश्वर्य / धन / यश / सुख) = समस्त सम्पदाओं की (विजय)

भावार्थ: यह श्लोक संपूर्ण 'कामन्दकीय नीतिसार' के सबसे गहन, क्रांतिकारी और केंद्रीय सत्यों में से एक है। कामन्दक कहते हैं – "दुर्जयं मन आहुस्तु सर्वेषामेव देहिनाम्" – अर्थात, समस्त प्राणियों / मनुष्यों के लिए 'मन' (Mind) को जीतना सबसे कठिन (दुर्जय) कार्य है। यह मानव जीवन का सबसे बड़ा युद्ध है – बाहरी शत्रु नहीं, अपना ही मन।

आगे वे कहते हैं – "तज्जयाद् विजयं प्राहुर्विजयं सर्वसम्पदाम्" – परन्तु जो व्यक्ति इस मन को जीत लेता है (तज्जयात्), उसे विद्वान 'सर्वसम्पदाम् विजयम्' – अर्थात 'समस्त सम्पदाओं (धन, यश, सुख, शांति, ज्ञान, स्वास्थ्य) पर विजय' कहते हैं।

इसका अभिप्राय यह है कि – बाहरी दुनिया (धन, सत्ता, सेना, प्रतिष्ठा) को जीतना तो द्वितीयक है; प्राथमिक एवं सबसे बड़ी विजय तो 'मन-विजय' है। यदि आप अपने मन को नियंत्रित कर लेते हैं (अर्थात क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, चिंता, आवेग पर नियंत्रण), तो आप स्वतः ही संसार की समस्त सम्पदाओं के स्वामी बन जाते हैं – क्योंकि तब बाहरी वस्तुएँ आपका सुख-दुःख निर्धारित नहीं करतीं; आप स्वयं अपने सुख-दुःख के निर्माता होते हैं।

मूल संदेश – बाहरी विजय (Empire, Wealth, Fame) से पहले आंतरिक विजय (Self-Mastery) अनिवार्य है। जो अपना मन जीत लेता है, उसके लिए कोई भी बाहरी चुनौती बड़ी नहीं होती।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के सफलता-दीवाने (Success-obsessed), तनावग्रस्त (Stressed), और मानसिक रूप से अशांत (Disturbed) विश्व के लिए सबसे बड़ा प्रतिकार है:

1. **"Self-Mastery > External Achievements" (आत्म-विजय > बाहरी उपलब्धियाँ):** आज की दुनिया हमें बाहरी उपलब्धियाँ (पैसा, पद, प्रसिद्धि) पाने की होड़ में लगा देती है। परिणामस्वरूप, अरबपति और सुपरस्टार भी अक्सर डिप्रेशन (अवसाद), नशा, और तलाक का शिकार हो जाते हैं – क्योंकि उन्होंने बाहरी दुनिया तो जीत ली, पर अपना मन नहीं जीत पाए। कामन्दक कहते हैं – पहले मन जीतो, फिर बाहरी चीज़ें अपने आप अर्थ पा लेंगी।

2. **"The Marshmallow Test" (विलंबित संतोष) – वाल्टर मिशेल:** 1960 के दशक में हुए प्रसिद्ध 'मार्शमैलो टेस्ट' में सिद्ध हुआ कि जो बच्चे तात्कालिक आनंद (एक मार्शमैलो अभी) को टालकर बड़ा आनंद (दो मार्शमैलो बाद में) चुन सकते थे (अर्थात अपने 'मन' पर नियंत्रण रख सकते थे), वे वयस्क होकर अधिक स्वस्थ, अधिक अमीर, और अधिक सफल हुए। यही है 'तज्जयाद् विजयम्' (मन-जीत से सफलता)।

3. **"Default Mode Network" (DMN) और तनाव:** आधुनिक न्यूरोसाइंस कहता है कि हमारा मस्तिष्क डिफ़ॉल्ट रूप से अतीत (पछतावा) और भविष्य (चिंता) में भटकता रहता है – यही 'मन' (चंचलता) है। जो व्यक्ति ध्यान (Meditation) और माइंडफुलनेस के माध्यम से इस DMN को शांत (संरोध) कर लेता है, वह वर्तमान (Present) में जीना शुरू कर देता है। इसी को 'मन-विजय' कहते हैं। शोध बताते हैं कि इससे Cortisol (तनाव-हार्मोन) घटता है, और Serotonin (सुख-हार्मोन) बढ़ता है – यानी 'सर्वसम्पदाम् विजयम्' (स्वास्थ्य और खुशी की विजय)।

4. **"Stop chasing, start mastering" (पीछा करना बंद करो, स्वामित्व शुरू करो):** आज की 'ग्राइंड कल्चर' (लगातार मेहनत) हमें बताती है कि ज्यादा काम करो, ज्यादा कमाओ, पर कामन्दक कहते हैं – आप जितना बाहर दौड़ेंगे, आपका मन उतना ही अशांत होगा। सच्ची सफलता तब आती है, जब आप बाहर दौड़ना कम करके, अंदर (मन) पर काम करना शुरू करते हैं। वॉरेन बफे, सत्या नडेला, रतन टाटा – ये सब अपनी सादगी, संयम और मानसिक स्थिरता (मन-विजय) के लिए जाने जाते हैं, न कि केवल उनके धन के लिए।

5. **"Addiction" (लत) – मन का सबसे बड़ा शत्रु:** आज सोशल मीडिया, फास्ट-फूड, पोर्नोग्राफी, और गेमिंग – ये सब मन के 'तात्कालिक-आनंद' (Instant Gratification) के जाल हैं। मन-विजय का अर्थ है – इन लतों को पहचानना, और अपनी इच्छा-शक्ति (Willpower) को मजबूत करके इन्हें नियंत्रित करना। जो ऐसा कर लेता है, उसे वह कभी न मिटने वाली संतुष्टि (सर्वसम्पदा) मिलती है, जो कोई भी बाहरी सुख नहीं दे सकता।

6. **कोरोना काल और मानसिक स्वास्थ्य:** COVID-19 महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि बाहरी संसाधन (पैसा, नौकरी) कितने भी हों, यदि मन अस्थिर है, तो व्यक्ति संकट में टूट जाता है। जिन लोगों ने 'मन-विजय' (धैर्य, ध्यान, संतोष) का अभ्यास किया था, वे इस संकट में भी शांत और उत्पादक रहे। बाकी लोग अवसाद (Depression) और चिंता (Anxiety) के शिकार हो गए।

इस भाग की मुख्य सीख

ज्ञान ही इंद्रियों का अंकुश है – इंद्रियाँ मतवाले हाथी के समान हैं; विवेक और ज्ञान ही उन्हें नियंत्रित करने का एकमात्र उपाय है।

मन की संरचना – ५ रूप – विज्ञान (समझ), हृदय (भावना), चित्त (स्मृति), मन (चंचलता), बुद्धि (तर्क) – इन सभी का संतुलन आवश्यक है।

'निर्मनस्कता' – मानसिक शांति का मार्ग – विचारों को रोककर मन की परम शांत अवस्था प्राप्त करना ही ध्यान और एकाग्रता का आधार है। वैज्ञानिक शोध भी इसके लाभों की पुष्टि करते हैं।

आत्म-नियंत्रण का अंतिम फल और ५ पशुओं की चेतावनी – क्या सीख मिलती है?

५ पशु क्या संदेश देते हैं?

कामन्दक पाँच पशुओं – हिरण (शब्द), हाथी (स्पर्श), पतंगा (रूप), मछली (रस) और भौंरा (गंध) – का उदाहरण देते हैं, जो अपनी-अपनी एक इंद्रिय के लोभ में मारे जाते हैं। यदि एक इंद्रिय-भोग इतना घातक है, तो जो मनुष्य एक साथ पाँचों इंद्रियों का दास है, वह कैसे सुरक्षित रह सकता है? यह संदेश आत्म-नियंत्रण और संयम का महत्व बताता है।

इस भाग में कामन्दक रूपकों और उदाहरणों के माध्यम से समझाते हैं कि आत्म-नियंत्रण (इंद्रिय-जय) का अभाव कितना भयानक परिणाम लाता है।

मन पर विजय बनाम दुनिया पर विजय – कौन सा बड़ा है?

मूल पाठ (संस्कृत)

एकस्यापि न यः शक्तो मनसः सन्निबर्हणे ।

महीं सागरपर्यन्तां कथं नु स विजेष्यते ॥३९॥

IAST:

ekasyāpi na yaḥ śakto manasaḥ sannibarhaṇe | mahīṃ sāgaraparyantāṃ kathaṃ nu sa vijeṣyate ||39||

शब्दार्थ:

- **एकस्य** (ekasya) – एक (अकेले) का / (यहाँ 'मन' के लिए विशेषण)

- **अपि** (api) – भी
- **न** (na) – नहीं
- **यः** (yaḥ) – जो (व्यक्ति)
- **शक्तः** (śaktaḥ) – समर्थ / सक्षम / शक्तिशाली
- **मनसः** (manasaḥ) – मन का
- **सन्निबर्हणे** (sannibarhaṇe) – सन् (सम्यक् / पूर्ण) + निबर्हण (दमन / नियंत्रण / वश में करना) = संपूर्ण रूप से दमन / नियंत्रित करने में
- **महीम्** (mahīm) – पृथ्वी / संसार / राज्य
- **सागरपर्यन्ताम्** (sāgaraparyantām) – सागर (समुद्र) + पर्यन्ताम् (पर्यंत / सीमा तक) = समुद्र-पर्यंत (पूरी पृथ्वी)
- **कथम्** (katham) – कैसे / किस प्रकार
- **नु** (nu) – (प्रश्नवाचक – क्या / फिर भी)
- **सः** (saḥ) – वह
- **विजेष्यते** (vijeṣyate) – विजय प्राप्त करेगा / जीत पाएगा

भावार्थ: यह श्लोक 'कामन्दकीय नीतिसार' का आत्मा (सार) और चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) है। कामन्दक एक अत्यंत तीक्ष्ण, अलंकारिक (Rhetorical) प्रश्न के माध्यम से नेतृत्व और जीवन का सबसे बड़ा सत्य प्रस्तुत करते हैं:

"जो व्यक्ति अपने अकेले मन (एकस्य मनसः) को भी नियंत्रित (सन्निबर्हणे) करने में समर्थ (शक्तः) **नहीं (न)** है, वह भला समुद्र-पर्यंत पूरी पृथ्वी (महीं सागरपर्यन्ताम्) को **कैसे (कथम्)** जीत पाएगा (विजेष्यते)?"

इसका **गहनतम अर्थ** यह है – **"आत्म-विजय (Self-Mastery) ही सबसे बड़ी विजय है; विश्व-विजय (Conquering the World) तो गौण है।"**

यदि कोई व्यक्ति अपने मन (जो कि उसके सबसे निकट और सबसे छोटा 'राज्य' है) को भी जीत नहीं सकता – अर्थात अपने क्रोध, लोभ, आवेग, चिंता, और अहंकार पर नियंत्रण नहीं रख सकता – तो वह बाहरी संसार (सेनाओं, शत्रुओं, अर्थव्यवस्था) को कैसे जीत पाएगा?

यह सूत्र नेतृत्व (Leadership) की सबसे बड़ी 'लिटमस टेस्ट' (कसौटी) है। बिना आंतरिक अनुशासन (Inner Discipline) के, बाहरी विजय (External Conquest) या तो असंभव है, या यदि हो भी जाए, तो वह क्षणिक और विनाशकारी होती है (जैसे – अलेक्जेंडर, हिटलर, नेपोलियन – जिन्होंने दुनिया जीती, पर अपने मन (अहंकार/लालसा) को नहीं जीत पाए, और अंततः पतन हो गया)।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के कॉर्पोरेट जगत (Corporate World), राजनीति (Politics), व्यक्तिगत विकास (Self-Development), और यहाँ तक कि स्टार्टअप कल्चर में सबसे अधिक उद्धृत और प्रासंगिक सूत्र है:

1. **"Leadership begins within" (नेतृत्व भीतर से शुरू होता है):** सभी महान नेता (Great Leaders) – चाहे वह महात्मा गाँधी (सत्य/अहिंसा का आत्म-अनुशासन), नेल्सन मंडेला (27 साल जेल में भी क्रोध पर विजय), या सत्या नडेला (विनम्रता और सहानुभूति) – पहले अपने 'मन' (अहंकार, क्रोध, लालसा) पर विजय प्राप्त करते हैं। उसके बाद ही वे संगठनों, देशों, और दुनिया को बदल पाते हैं।
2. **"Start with yourself" (खुद से शुरू करें):** आज के समय में युवा अक्सर "मैं पूरी दुनिया बदल दूँगा" का सपना देखते हैं, परंतु अपनी सुबह उठने, मोबाइल चलाने, या गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाते। कामन्दक कहते

हैं – पहले अपने मन का 'सेल्फ-स्विच' ऑन करो। यदि आप अपने टाइम-टेबल, अपनी डाइट, और अपनी प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण नहीं रखते, तो आप बड़ी टीम या बड़ा बजट कैसे मैनेज करेंगे?

3. **"Internal Locus of Control" (आंतरिक नियंत्रण केंद्र):** आधुनिक मनोविज्ञान (Psychology) कहता है कि जिन लोगों का 'आंतरिक नियंत्रण-केंद्र' (Internal Locus of Control) मजबूत होता है (यानी वे अपनी प्रतिक्रियाओं को स्वयं नियंत्रित करते हैं, बाहरी परिस्थितियों को नहीं), वे जीवन में अधिक सफल, स्वस्थ और संतुष्ट होते हैं। यही 'मनः सन्निबर्हण' (मन-नियंत्रण) है। इसके विपरीत, 'बाह्य नियंत्रण-केंद्र' (External Locus) वाला व्यक्ति हर चीज़ के लिए दूसरों को दोष देता है और कभी आगे नहीं बढ़ता।

4. **"Imposter Syndrome" और "Anxiety" (आत्म-अविश्वास और चिंता):** आज अधिकांश पेशेवर (Professionals) "Imposter Syndrome" (मैं योग्य नहीं हूँ) और चिंता (Anxiety) से ग्रस्त हैं। यह मन का अनियंत्रित भटकाव (Overthinking) है। कामन्दक कहते हैं – यदि आप अपने मन के इस शोर (Noise) को शांत नहीं कर सकते, तो आप बाहरी दुनिया की चुनौतियों (प्रमोशन, पैसा, प्रतिस्पर्धा) का सामना कैसे करेंगे? पहले अपने मन को शांत करना सीखें (ध्यान/सकारात्मक सोच), फिर बाहरी दुनिया अपने आप सुलझ जाएगी।

5. **राजनीति और शासन (Politics & Governance):** एक राजनेता यदि सोशल मीडिया के हर ट्रोल पर (बाहरी शोर) प्रतिक्रिया करता है, क्रोध में आकर बयान देता है, और अपने अहंकार (मन) को नियंत्रित नहीं करता, तो वह 'सागरपर्यन्त' (पूरे देश) का शासन कैसे करेगा? वह अपनी ही पार्टी और जनता का विश्वास खो देता है। **जो नेता 'मन-विजयी' होता है, वही संकटों में शांत, स्पष्ट और दूरदर्शी निर्णय लेता है (जैसे – अटल बिहारी वाजपेयी, सिंगापुर के ली कुआन यू)।

6. **"शक्तिः" का आधुनिक अर्थ:** 'शक्त' (समर्थ) होना केवल बाहरी ताकत (Physical Strength, Money) नहीं है, बल्कि मानसिक लचीलापन (Mental Resilience) और संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence – EQ) है। जो व्यक्ति आपातकाल (Crisis) में भी अपने मन को स्थिर रख सकता है, वही सच्चा 'शक्त' (समर्थ) है। बाकी तो संसाधनों के दास हैं।

भोग (हाथी-मगरमच्छ) – भोग का भयंकर जाल

मूल पाठ (संस्कृत):

क्रियावसानविरसैर् विषयैर् अपहारिभिः ।

गच्छत्य् आक्षिप्तहृदयः करीव नृपतिर् ग्रहम् ॥४०॥

IAST:

kriyāvasānavirasair viṣayair apahāribhiḥ / gacchaty ākṣiptahṛdayaḥ karīva nṛpatir graham ||40||

शब्दार्थ:

- **क्रियावसानविरसैः** (kriyāvasānavirasaiḥ) – क्रिया (करने के बाद / सेवन करने के बाद) + अवसान (अंत में / समाप्ति पर) + विरस (बेस्वाद / खेदजनक / अरुचिकर) = जिनका सेवन करने के बाद (अंत में) परिणाम खेदजनक, अरुचिकर एवं दुःखद होता है
- **विषयैः** (viṣayaiḥ) – विषयों / इंद्रिय-भोगों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) के द्वारा
- **अपहारिभिः** (apahāribhiḥ) – अपहार (हरण करने वाले / चुराने वाले) – अर्थात बुद्धि, विवेक, और आत्म-नियंत्रण का हरण करने वाले
- **गच्छति** (gacchati) – चला जाता है / प्राप्त होता है / फँस जाता है
- **आक्षिप्तहृदयः** (ākṣiptahṛdayaḥ) – आक्षिप्त (आकर्षित / छीन लिया गया / विचलित) + हृदय (मन / चित्त) = जिसका मन / हृदय (उन भोगों द्वारा) पूर्णतः आकर्षित / छीन लिया गया हो

- **करीव** (karīva) – करी (हाथी) + इव (के समान / जैसे) = हाथी की तरह
- **नृपतिः** (nṛpatiḥ) – राजा / शासक / नेता
- **ग्रहम्** (graham) – ग्रह (मगरमच्छ / पकड़ / जाल / बंधन) – यहाँ 'मगरमच्छ' (जो हाथी को पकड़ लेता है) या 'विनाशकारी बंधन'

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में 'विषय-भोग' (इंद्रिय-सुखों) की अत्यंत भयानक, वास्तविक और मनोवैज्ञानिक सच्चाई को एक अमर रूपक (हाथी-मगरमच्छ युद्ध) के माध्यम से समझाते हैं:

श्लोक कहता है – "क्रियावसानविरसैः" – अर्थात विषय-भोग (इंद्रिय-सुख) शुरू में (सेवन करते समय) अत्यंत मीठे, मनोहारी और आकर्षक (रस) लगते हैं, परंतु इनके 'अंत में' (सेवन समाप्त करने पर) ये 'विरस' (बेस्वाद, खेदजनक, अरुचिकर, और पश्चातापजनक) हो जाते हैं। (जैसे – फास्ट फूड खाते समय मज़ा आता है, पर बाद में पेट खराब; या अत्यधिक नशा करने पर बाद में सुस्ती और पछतावा)।

इसके अतिरिक्त, ये विषय 'अपहारिभिः' (बुद्धि-हरण करने वाले) हैं – ये राजा/व्यक्ति का विवेक, सतर्कता और निर्णय-क्षमता (जजमेंट) छीन लेते हैं। जब कोई राजा/नेता इन मीठे, पर घातक भोगों में 'आक्षिप्तहृदयः' (पूर्ण मन से फँस / आसक्त) हो जाता है, तो वह 'करीव' (ठीक उसी प्रकार जैसे कोई विशाल हाथी) 'ग्रहम्' (मगरमच्छ के मुँह/जाल में फँसकर) अपने विनाश (बंधन/मृत्यु) की ओर चला जाता है।

गहन रहस्य: हाथी (शक्तिशाली होते हुए भी) पानी में मगरमच्छ से बच नहीं पाता, क्योंकि मगरमच्छ उसके पैर पकड़कर उसे गहरे पानी (विनाश) में खींच लेता है। इसी प्रकार, राजा (विशाल साम्राज्य, बुद्धि, शक्ति होते हुए भी) 'विषय-रूपी मगरमच्छ' के पंजे में फँसकर अपना सब कुछ खो बैठता है – धीरे-धीरे, पहले बुद्धि, फिर कर्तव्य, फिर प्रजा का विश्वास, और अंततः अपना राज्य। शुरू में वह भोगों का 'रस' लेता है, और अंत में वह 'विरस' (पश्चाताप) का भागी बनता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'तात्कालिक-सुख-संस्कृति' (Instant Gratification Culture), 'नशीली-लतों' (Addictions), और 'विलासिता-पूर्ण जीवन' (Luxury Lifestyle) के लिए सबसे सशक्त चेतावनी है:

1. **"Hedonic Treadmill" (आधुनिक मनोविज्ञान):** आधुनिक मनोविज्ञान में 'Hedonic Treadmill' (सुख-दौड़) का सिद्धांत बताता है कि नई चीज़ (नई कार, नया फोन, प्रमोशन) मिलने पर शुरू में बहुत खुशी होती है, पर कुछ समय बाद वही चीज़ सामान्य हो जाती है (विरस), और हम अगली चीज़ के पीछे भागने लगते हैं। यही है 'क्रियावसानविरस' (प्रारंभिक आनंद → अंतिम खेद)।
2. **'अपहारिभिः' – समय और ध्यान का हरण:** आज के सोशल मीडिया, गेमिंग ऐप्स, और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (नेटफ्लिक्स, यूट्यूब शॉर्ट्स) को डोपामाइन लूप (Dopamine Loop) के आधार पर डिज़ाइन किया गया है। ये हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी – *हमारा समय और ध्यान* – छीन (अपहार) लेते हैं। आप सोचते हैं "बस 5 मिनट" देखूंगा, पर 2 घंटे बीत जाते हैं – बुद्धि (Focus) और समय (Productivity) का 'हरण' (अपहार) हो चुका होता है। अंत में पश्चाताप (विरस) होता है।
3. **'करीव ग्रहम्' (हाथी-मगरमच्छ) – ऐडिक्शन (लत) का मनोविज्ञान:** जो व्यक्ति एक बार किसी लत (शराब, ड्रग्स, गेमिंग, या अनैतिक संबंध) में गहराई से आसक्त (आक्षिप्तहृदयः) हो जाता है, वह उसी प्रकार धीरे-धीरे नीचे (विनाश) की ओर खिंचता जाता है, जैसे मगरमच्छ हाथी को पानी में खींचता है। शुरू में वह भोग को नियंत्रित कर सकता है, पर धीरे-धीरे भोग उसे नियंत्रित करने लगता है, और अंततः निकलना असंभव हो जाता है (जैसे – कई सेलिब्रिटीज या बड़े नेता जो नशे/घोटालों में फँसकर बर्बाद हो गए)।
4. **"Short-term Pleasure, Long-term Pain" (क्षणिक सुख, दीर्घकालिक पीड़ा):** आज के फिटनेस और फाइनेंस कोचिंग का यही मूल मंत्र है। फास्ट-फूड (तात्कालिक स्वाद) → मोटापा, डायबिटीज़ (दीर्घकालिक रोग)। ऋण पर महँगी खरीदारी (तात्कालिक संतुष्टि) → कर्ज (दीर्घकालिक वित्तीय बंधन – ग्रह)। यह श्लोक कहता है – अंत (परिणाम) को देखकर कर्म करें, न कि आरंभ (क्षणिक सुख) को देखकर।
5. **राजनीति और नेतृत्व में 'ग्रह' (जाल):** एक राजनेता भ्रष्टाचार (लालच-रूपी विषय) में पहली बार छोटी रिश्वत लेता है (मीठा शुरू), धीरे-धीरे उसकी बुद्धि (अपहार) हो जाती है और वह बड़े घोटालों में फँसता चला जाता है,

और अंततः वह जेल (ग्रह – बंधन) में चला जाता है (जैसे – कई राजनेताओं के भ्रष्टाचार केस)। यही 'करीव' (शक्तिशाली, फिर भी मगरमच्छ से बच न सका) की स्थिति है।

6. **"Detachment with Enjoyment" (सावधानीपूर्वक भोग):** इस श्लोक का उपाय 'संन्यास' (त्याग) नहीं है, बल्कि 'विवेक' (जागरूकता) है। व्यक्ति को भोगों का 'स्वामी' (Master) होना चाहिए, 'दास' (Slave) नहीं। यदि आप भोग करते हुए जानते हैं कि यह 'क्रियावसानविरस' (अंत में बुरा प्रभाव डालेगा) और 'अपहारिभिः' (मेरी बुद्धि-शक्ति चुराएगा) – तो आप उसे नियंत्रित (सीमित) कर सकते हैं। जैसे – फिल्म/गेम का निर्धारित समय, फास्ट-फूड का नियंत्रित मात्रा, या सोशल मीडिया का टाइम-लिमिट।

अकार्य (अनुचित कर्म) से स्वयं विपत्ति का आमंत्रण

मूल पाठ (संस्कृत):

सज्जमानो ह्य् अकार्येषु विषयान्धीकृतेक्षणः ।

आवहत्य् उग्रभयदां स्वयम् एवापदं नृपः ॥४१॥

IAST:

sajjamāno hy akāryeṣu viṣayāndhīkṛtekṣaṇaḥ /
āvahaty ugrabhayadāṃ svayam evāpadaṃ nṛpaḥ //41//

शब्दार्थ:

- **सज्जमानः** (sajjamānaḥ) – तत्पर होना / लिप्त होना / आसक्त होना / उद्यत होना (जैसे कोई किसी कार्य में पूरी तन्मयता से लग जाए)
- **हि** (hi) – निश्चय ही (बल देने वाला अव्यय)
- **अकार्येषु** (akāryeṣu) – अकार्यों में / अनुचित कर्मों में / निषिद्ध कार्यों में / जो किए जाने योग्य नहीं हैं (जैसे – झूठ, चोरी, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनैतिकता)
- **विषयान्धीकृतेक्षणः** (viṣayāndhīkṛtekṣaṇaḥ) – विषय (इंद्रिय-भोग) + अन्धीकृत (अंधा / धुंधला / विकृत कर दिया गया) + ईक्षण (दृष्टि / नेत्र / बुद्धि-दृष्टि) = जिसकी बुद्धि-दृष्टि / विवेक इंद्रिय-भोगों (विषयों) के कारण अंधा (विकृत / भ्रमित) हो गया हो
- **आवहति** (āvahati) – ले आता है / स्वयं पर लाद लेता है / उत्पन्न कर लेता है
- **उग्रभयदाम्** (ugrabhayadām) – उग्र (भयंकर / विकराल) + भयद (भय उत्पन्न करने वाली) = भयंकर आपदा / विकराल संकट / अत्यंत भयानक विपत्ति
- **स्वयम्** (svayam) – स्वयं (अपने आप / बिना किसी बाहरी शत्रु के)
- **एव** (eva) – ही (बल देने के लिए)
- **आपदम्** (āpadam) – विपत्ति / आपदा / संकट / विनाश
- **नृपः** (nṛpaḥ) – राजा / शासक / नेता

भावार्थ: कामन्दक कहते हैं – "सज्जमानो ह्य् अकार्येषु" – अर्थात जो राजा/नेता 'अकार्य' (अनुचित, निषिद्ध, अधार्मिक, अनैतिक) कर्मों में तत्पर / आसक्त हो जाता है (उन्हें करने में लग जाता है)...

"विषयान्धीकृतेक्षणः" – और क्योंकि उसकी बुद्धि-दृष्टि 'विषयों' (इंद्रिय-सुख / पैसा / शक्ति / वासना) से अंधी (आंधी/धुंधली) हो चुकी है (वह सही-गलत में अंतर नहीं कर पाता)...

"आवहत्य् उग्रभयदां स्वयम् एवापदं नृपः" – तो वह राजा 'उग्रभयदाम्' (भयंकर विपत्ति / विकराल संकट) को 'स्वयम् एव' (स्वयं ही) 'आपदम्' (अपने ऊपर) ले आता है।

इसका गहनतम अर्थ यह है कि – किसी बाहरी शत्रु (दुश्मन देश, प्रतिद्वंद्वी कंपनी) की आवश्यकता नहीं है; राजा/नेता अपने 'अकार्य' (अनैतिक/भ्रष्ट कर्म) और 'विषय-लालसा' (लालच/मोह) के कारण स्वयं अपनी विपत्ति का निर्माण कर लेता है। *जब कोई नेता सही-गलत के विवेक (बुद्धि-दृष्टि) को खो देता है (अंधा हो जाता है), तो वह ऐसे कार्य करने लगता है जो उसे और उसके राज्य/संगठन को भयंकर संकट में डाल देते हैं (जैसे – भ्रष्टाचार, अत्याचार, अहंकारी निर्णय, अन्याय)।

यह श्लोक 'आत्म-विनाश' (Self-destruction) का सबसे स्पष्ट चित्रण है। बाहरी शत्रु से बचा जा सकता है, पर 'अकार्य' (गलत कर्म) से बचना अत्यंत कठिन है, क्योंकि यह स्वयं के भीतर से उत्पन्न होता है, और व्यक्ति को यह भी ज्ञात नहीं होता कि वह गलत कर रहा है (क्योंकि उसकी बुद्धि-दृष्टि पहले ही विषयों से अंधी हो चुकी होती है)।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के व्यवसायिक घोटालों (Corporate Scandals), भ्रष्ट राजनीति (Corrupt Politics), और व्यक्तिगत जीवन में अनैतिक निर्णयों (Unethical Decisions) की सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Self-Inflicted Wounds" (स्वयं द्वारा लगाए गए घाव):** किसी कंपनी का सीईओ जब 'अकार्य' (धोखाधड़ी, फर्जी बिलिंग, शेयर हेरफेर) करता है, तो वह बाहरी प्रतिस्पर्धी (Competitor) से नहीं, बल्कि स्वयं अपनी कंपनी को बर्बाद करता है। एनरॉन (Enron), सत्यम (Satyam), वोल्क्सवैगन (Volkswagen) – इन सब के सीईओ ने पैसे (विषय-लोभ) में बुद्धि-दृष्टि खो दी, 'अकार्य' किए, और परिणामस्वरूप 'उग्रभयदाम्' (हजारों कर्मचारियों की बेरोजगारी, शेयरधारकों का नुकसान, और स्वयं जेल) को न्योता दिया।

2. **राजनीति में 'अकार्य' का परिणाम:** एक राजनेता जब भ्रष्टाचार, जातिवाद, या असंवैधानिक कार्यों में लिप्त हो जाता है, और वह अपनी आँखें (बुद्धि) पैसे/सत्ता के लोभ (विषय) से अंधी कर लेता है, तो वह स्वयं अपने ऊपर 'उग्र भयदां आपद' (जन-आक्रोश, चुनाव हार, कानूनी मुकदमे, और जेल) को आमंत्रित करता है। (जैसे – कई राजनेता जो अपनी ही पार्टी और जनता के विरोध का शिकार होते हैं)।

3. **"Blinded by Greed" (लालच से अंधा) – आधुनिक मनोविज्ञान:** आज व्यवहारिक अर्थशास्त्र (Behavioral Economics) में 'कॉग्निटिव डिस्टोर्शन' (Cognitive Distortion) – विशेष रूप से 'अहंकार-पूर्वाग्रह' (Overconfidence Bias) और 'लालच' (Greed) – को बड़े निर्णयों के पतन का मुख्य कारण माना जाता है। जब कोई व्यक्ति अत्यधिक सफलता या धन (विषय) में डूब जाता है, तो उसकी बुद्धि (Critical Thinking) कमजोर हो जाती है, और वह 'अकार्य' (अनैतिक/जोखिम-भरे निर्णय) लेने लगता है, जो अंततः उसे बर्बाद कर देते हैं (जैसे – बैंकिंग घोटालों में फँसे बड़े निवेश बैंकर)।

4. **"The Fall of the House of Cards" (ताश के पत्तों का महल):** जो नेता 'स्वयम् एव' (स्वयं) अपने 'अकार्य' से अपना पतन रचता है, वह धीरे-धीरे एक 'ताश का महल' (House of Cards) खड़ा करता है – जो बाहरी प्रहार से नहीं, बल्कि अपने आधार (अनैतिकता) की कमजोरी से अचानक ढह जाता है। आज सोशल मीडिया और व्हिसलब्लोअर्स (Whistleblowers) के कारण यह पतन और भी तेज़ी से होता है।

5. **"विषयान्धीकृतेक्षणः" – डिजिटल युग में बुद्धि-भ्रष्टता:** आज लगातार स्क्रॉलिंग, शॉर्ट-फॉर्म कंटेंट (रील्स, शॉर्ट्स), और सनसनीखेज न्यूज़ हमारी 'बुद्धि-दृष्टि' को धुंधला (Andhīkṛta) कर रहे हैं। जब कोई नेता/प्रशासक 'ट्रेंड्स' और 'टीआरपी' (विषय) से अंधा हो जाता है, तो वह 'अकार्य' (जनता को गुमराह करना, पॉपुलिस्ट निर्णय) कर बैठता है, जो दीर्घकाल में देश/समाज के लिए 'उग्रभयदाम्' (आर्थिक मंदी, सामाजिक अशांति) लाता है।

6. **व्यक्तिगत जीवन में:** एक व्यक्ति जब फास्ट-फूड, अत्यधिक नशा, या अनैतिक संबंधों (अकार्य) में लिप्त होता है, अपनी 'विवेक-दृष्टि' खो देता है (विषयान्ध), तो वह स्वयं अपने ऊपर 'उग्रभयदाम्' (मोटापा, मधुमेह, तलाक, कर्ज) – यानी भयंकर विपत्ति – ले आता है। *बाहरी कोई उसे नहीं रोक रहा, वह स्वयं ही अपनी आपदा का निर्माता है।*

पाँचों इंद्रिय-विषय – एक-एक विनाश के लिए पर्याप्त

मूल पाठ (संस्कृत):

शब्दः स्पर्शश् च रूपं च रसो गन्धश् च पञ्चमः ।

एकैकम् एषां भवति विनाशप्रतिपत्तये ॥४२॥

IAST:

śabdaḥ sparśaś ca rūpaṃ ca raso gandhaś ca pañcamaḥ | ekaikam eṣāṃ bhavati vināśapratipattaye ||42||

शब्दार्थ:

- **शब्दः** (śabdaḥ) – शब्द / ध्वनि (सुनने की इंद्रिय – श्रोत्र का विषय)
- **स्पर्शः** (sparśaḥ) – स्पर्श (त्वचा – स्पर्श-इंद्रिय का विषय)
- **च** (ca) – और
- **रूपम्** (rūpam) – रूप / दृश्य / आकार / सौंदर्य (आँख – चक्षु का विषय)
- **च** (ca) – और
- **रसः** (rasaḥ) – रस / स्वाद (जीभ – जिह्वा का विषय)
- **गन्धः** (gandhaḥ) – गंध / सुगंध-दुर्गंध (नाक – घ्राण का विषय)
- **च** (ca) – और
- **पञ्चमः** (pañcamaḥ) – पाँचवाँ (गंध) – अर्थात ये पाँचों ही इंद्रिय-विषय हैं
- **एकैकम्** (ekaikam) – एक-एक / प्रत्येक अकेला (इनमें से कोई भी एक)
- **एषाम्** (eṣām) – इन (पाँचों) में से
- **भवति** (bhavati) – होता है / पर्याप्त है / कारण बनता है
- **विनाशप्रतिपत्तये** (vināśapratipattaye) – विनाश (नाश / बर्बादी / विनाश) + प्रतिपत्ति (प्राप्ति / उपलब्धि / हेतु) = विनाश की प्राप्ति के लिए / नाश करने में समर्थ

भावार्थ: यह श्लोक 'पाँच इंद्रिय-विषयों' (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) का संक्षिप्त एवं अत्यंत शक्तिशाली सारांश है।

कामन्दक स्पष्ट रूप से कहते हैं – "शब्दः स्पर्शश् च रूपं च रसो गन्धश् च पञ्चमः" – अर्थात शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और पाँचवाँ गंध – ये पाँचों विषय (भोग) हैं।

फिर वे अत्यंत गंभीर चेतावनी देते हैं – "एकैकम् एषां भवति विनाशप्रतिपत्तये" – अर्थात इन पाँचों में से 'एक-एक' (अकेला एक भी) व्यक्ति के 'विनाश' (सर्वनाश / बर्बादी) के लिए पर्याप्त (समर्थ) है।

*अर्थात, यदि आपके पास ५ इंद्रियाँ हैं, तो ५ खतरे हैं; परंतु इनमें से **केवल एक इंद्रि-विषय** पर नियंत्रण न होना (जैसे – केवल 'रस' – स्वाद का लोभ, या केवल 'रूप' – सौंदर्य का लोभ) भी आपको पूर्णतः नष्ट करने के लिए काफी है।*

गहन रहस्य: यह मनुष्य की एकल-कमजोरी (Single Point of Failure) की ओर इशारा करता है। बहुत से व्यक्ति सोचते हैं कि "मैं तो एक ही इंद्रिय में थोड़ा आसक्त हूँ, बाकी सब नियंत्रण में हैं" – पर कामन्दक कहते हैं – "एकैकम्" (एक अकेला भी) विनाश के लिए काफी है। जैसे – एक छोटा सा छिद्र (रिसाव) पूरे जहाज को डुबो सकता है, वैसे ही एक इंद्रि-लोभ (जैसे अत्यधिक फास्ट-फूड – रस) पूरे स्वास्थ्य, बुद्धि और चरित्र को बर्बाद कर सकता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'ऐडिक्शन (Addiction) और 'वन-स्ट्रॉ-ब्रेक्स-द-कैमल्स-बैक' (एक तिनका भी ऊँट की कमर तोड़ सकता है) के सिद्धांत का सबसे प्राचीन, प्रामाणिक सूत्र है:

1. **"Single Point of Failure" (एकल-विफलता बिंदु):** आधुनिक प्रबंधन (Management) और इंजीनियरिंग में, 'Single Point of Failure' को सबसे बड़ा जोखिम माना जाता है। यदि किसी बड़े सिस्टम (जीवन / कंपनी / सरकार) में कोई एक कमजोर कड़ी (जैसे – एक इंद्रि-लोभ) हो, तो वह पूरी व्यवस्था को ढहा सकती है। कामन्दक 1500 साल पहले ही यह वैज्ञानिक सत्य बता रहे हैं – *केवल एक कमजोरी (एक इंद्रिय) ही पूरे व्यक्ति को बर्बाद कर सकती है।*

2. **"Addiction" (लत) का भयानक रूप:** आज 'एक ही' लत (जैसे – सोशल मीडिया स्क्रॉलिंग / शब्द-दृश्य, या शराब / रस, या पोर्नोग्राफी / रूप) किसी के करियर, परिवार, और स्वास्थ्य को पूरी तरह बर्बाद करने के लिए पर्याप्त है। हम अक्सर कहते हैं – "बस थोड़ा सा" – पर कामन्दक कहते हैं – "एकैकम्" (थोड़ा सा भी) विनाशकारी है, क्योंकि यह धीरे-धीरे पूरे मन पर कब्ज़ा कर लेता है।

3. **"Hedonic Adaptation" (अनुकूलन):** जो व्यक्ति एक इंद्रि-सुख (जैसे – गपशप / शब्द) का आदी हो जाता है, वह धीरे-धीरे उस 'एक' सुख के लिए अपनी सारी बुद्धि, समय और ऊर्जा खर्च कर देता है। वह पूरी दुनिया को उसी एक पहलू (जैसे – सनसनीखेज समाचार) से देखने लगता है। अंततः वह सत्य, कर्तव्य और रिश्तों की अन्य ४ इंद्रियों को नष्ट कर बैठता है – केवल 'एक' इंद्रि-लोभ के कारण।

4. **राजनीति और नेतृत्व में 'एक' कमजोरी:** इतिहास गवाह है कि कितने ही महान राजा/नेता (जैसे – नल, दाण्डक्य, रावण) – जिनके पास सब कुछ था (शक्ति, बुद्धि, साम्राज्य) – केवल 'एक' इंद्रि-लोभ (जुआ, यौन-वासना, अहंकार) के कारण पूर्ण विनाश को प्राप्त हुए। आज भी, कोई सीईओ या राजनेता अगर 'एक' लालच (पैसा या सत्ता) में आसक्त हो जाता है, तो वह अपनी पूरी विरासत (कंपनी/देश) को कुछ ही वर्षों में बर्बाद कर सकता है।

5. **"Prevention is better than cure" – आत्म-निरीक्षण (Self-Audit):** इस श्लोक का सबसे बड़ा व्यावहारिक उपाय है – आत्म-निरीक्षण (Self-Audit)। आपको नियमित रूप से यह जाँच करनी चाहिए कि आपकी *'एक'* वह कौन-सी इंद्रिय है, जो आपको सबसे अधिक विचलित करती है? (क्या आप बहुत ज़्यादा मीठा खाते हैं? क्या आप बहुत ज़्यादा फोन देखते हैं? क्या आप बहुत ज़्यादा गपशप करते हैं?) – और **उसी 'एक'** पर सबसे पहले और सबसे कठोर नियंत्रण (संयम) लागू करें। क्योंकि 'बाकी' चार अपने आप नियंत्रित हो जाएँगी, पर यह 'एक' ही आपका विनाश कर सकती है।

हिरण (मृग) – शब्द / संगीत का लोभ

मूल पाठ (संस्कृत):

शुचिः शष्पाङ्कुराहारो विदूरक्रमणक्षमः ।

लुब्धकाद् गीतलोभेन मृगो मृगयते वधम् ॥४३॥

IAST:

śuciḥ śaṣpāṅkurāhāro vidūrakramaṇakṣamaḥ /
lubdhakād gītalobhena mṛgo mṛgayate vadham ||43||

शब्दार्थ:

- **शुचिः** (śuciḥ) – स्वच्छ / शुद्ध / सुंदर / चमकीला (हिरण का रूप-सौंदर्य)
- **शष्पाङ्कुराहारः** (śaṣpāṅkurāhāraḥ) – शष्प (घास / हरी कोपलें) + अङ्कुर (नए अंकुर / कोंपलें) + आहार (भोजन करने वाला) = हरी घास और नई कोपलें खाने वाला
- **विदूरक्रमणक्षमः** (vidūrakramaṇakṣamaḥ) – विदूर (दूर / बहुत दूर) + क्रमण (चलने / दौड़ने की क्षमता) + क्षमः (समर्थ) = बहुत दूर तक तेज़ दौड़ने में समर्थ / अत्यंत फुर्तीला
- **लुब्धकात्** (lubdhakāt) – लुब्धक (शिकारी) से / द्वारा

- **गीतलोभेन** (gītalobhena) – गीत (संगीत / मधुर ध्वनि / बाँसुरी / चारे की आवाज) + लोभ (आसक्ति / मोह / लालच) = संगीत / मधुर ध्वनि के लोभ (मोह) के कारण
- **मृगः** (mṛgaḥ) – हिरण
- **मृगयते** (mṛgayate) – ढूंढता है / प्राप्त करता है / (अपनी इच्छा से) चला जाता है
- **वधम्** (vadham) – वध / मृत्यु / मारा जाना / विनाश

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में हिरण (मृग) का अत्यंत मार्मिक एवं प्रतीकात्मक (Symbolic) चित्रण करते हैं:

"शुचिः शष्पाङ्कुराहारः" – हिरण स्वच्छ, सुंदर, और घास-कोपलों का भोजन करने वाला (अर्थात निर्दोष, शाकाहारी, और किसी को हानि न पहुँचाने वाला) होता है।
"विदूरक्रमणक्षमः" – वह बहुत दूर तक तेज़ दौड़ सकता है (अत्यंत फुर्तीला, चौकन्ना, और बचने में समर्थ)।

परंतु, "**लुब्धकाद् गीतलोभेन मृगो मृगयते वधम्**" – फिर भी, **शिकारी (लुब्धक) द्वारा बजाए गए 'गीत' (संगीत / मधुर ध्वनि / बाँसुरी) के लोभ (मोह) में आकर** वह हिरण **स्वयं (मृगयते)** ही **अपने वध / मृत्यु (वधम्)** के पास चला जाता है (शिकारी के जाल / बाण की ओर)।

*गहनतम रहस्य – हिरण शारीरिक रूप से अत्यंत सक्षम (तेज़, फुर्तीला) है, और उसका शत्रु (शिकारी) उसे ज़बरदस्ती नहीं पकड़ सकता, पर **'शब्द' (संगीत) का मोह** उसकी **सबसे बड़ी कमजोरी** है, जो उसे **स्वयं विनाश** की ओर ले जाती है।* इसी प्रकार, **मनुष्य (विशेषतः राजा/नेता)** – चाहे वह कितना भी बुद्धिमान, शक्तिशाली या सतर्क क्यों न हो – **चापलूसी, मीठी बातों, खुशामद, या भ्रामक सूचनाओं (शब्दों) के मोह** में फँसकर स्वयं ही अपने पतन (विनाश) को आमंत्रित कर लेता है। बाहरी शत्रु उसे हरा नहीं सकते, पर **'शब्द-लोभ'** (सुनने की इच्छा) उसे स्वयं बर्बाद कर देती है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'सूचना-युग' (Information Age), 'फ्लैटरी' (चापलूसी), और 'इको-चैम्बर' (प्रतिध्वनि-कक्ष) की सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Flattery" (चापलूसी) – नेताओं का सबसे बड़ा शत्रु:** किसी भी बड़े नेता (CEO, राजनेता, प्रशासक) के चारों ओर 'हाँ-कहने वाले' (Yes-men) होते हैं, जो उनके कानों में मीठी-मीठी बातें (गीत / शब्द) डालते रहते हैं – "आप महान हैं!", "आपको कोई नहीं हरा सकता!", "यह निर्णय ऐतिहासिक है!"। यही 'गीत-लोभ' (शब्द-मोह) नेता की विवेक-बुद्धि (Critical Thinking) को सुस्त कर देता है, और वह अपनी गलतियाँ नहीं देख पाता, जिससे कंपनी / देश को बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है (जैसे – ब्लैकबेरी, नोकिया के CEO, जिन्होंने बाजार में बदलाव (शब्द) को नज़रअंदाज़ कर दिया)।

2. **"Echo Chambers" (प्रतिध्वनि-कक्ष) – डिजिटल शिकार:** आज सोशल मीडिया एल्गोरिद्म हमें केवल वही 'शब्द' (सूचना / विचार) दिखाते/सुनाते हैं, जो हम सुनना चाहते हैं (Confirmation Bias)। यह हमें एक 'Echo Chamber' में बंद कर देता है, जहाँ हम केवल अपनी ही प्रतिध्वनि (अपनी राय) सुनते हैं, और विरोधी / आलोचनात्मक (Critical) आवाज़ें हमसे दूर हो जाती हैं। जो व्यक्ति इस 'शब्द-जाल' (हिरण की तरह) में फँस जाता है, वह 'गीत-लोभ' (सिर्फ मनपसंद बातें सुनने) में डूबकर वास्तविकता (Ground Reality) को देखना भूल जाता है, और अंततः विनाश (करियर / रिश्ते / व्यवसाय) का शिकार हो जाता है।

3. **"Misinformation" (भ्रामक सूचना) और "Propaganda" (प्रचार):** शिकारी (लुब्धक) आज 'शब्द' के रूप में फेक न्यूज़, भ्रामक विज्ञापन, और राजनीतिक प्रचार का उपयोग करता है। जो व्यक्ति / समाज **हर 'गीत' (हर बात) को बिना सोचे-समझे सुन लेता है और उसके पीछे भागता है**, वह ठीक हिरण की तरह स्वयं ही 'वधम्' (सामाजिक विभाजन, आर्थिक धोखाधड़ी, या मानसिक भटकाव) को प्राप्त होता है। 'Critical Thinking' (आलोचनात्मक सोच) ही वह 'सतर्कता' है, जो इस 'शिकारी' (लुब्धक) से बचाती है।

4. **"विदूरक्रमणक्षमः" – बुद्धि होते हुए भी पतन:** हिरण तेज़ दौड़ने में सक्षम (शक्तिशाली) था, फिर भी नष्ट हुआ। इसी प्रकार, आज कई उच्च-शिक्षित, प्रतिभाशाली, और करोड़पति लोग 'स्टॉक मार्केट टिप्स' (शब्द), 'क्विक-रिच

स्कीम्स' (शब्द), या 'टॉक्सिक पॉजिटिविटी' (शब्द) के लोभ में फँसकर अपनी सारी पूँजी / प्रतिष्ठा गँवा बैठते हैं। *बाहरी दुश्मन नहीं, बल्कि उनकी 'सुनने की लत' (शब्द-लोभ) उनका वध करती है।*

5. **"Active Listening" बनाम "Reactive Listening" – नेतृत्व का गुण:** एक सफल नेता **'हर गीत' (हर बात) नहीं सुनता**; वह **सत्य (Truth) और चापलूसी (Flattery) में अंतर करना जानता है।** वह उन सलाहकारों (मंत्रियों) को महत्व देता है जो उसे **'अप्रिय सत्य' (Harsh Truth)** बताते हैं, न कि केवल **'मीठे गीत' (Praise)** सुनाते हैं। जो नेता केवल 'मीठा' सुनना चाहता है, वह हिरण की तरह शिकारी (लुब्धक – जो उसे गुमराह करे) के हाथों नष्ट हो जाता है।

हाथी (वारण) – स्पर्श / शारीरिक सुख का लोभ

मूल पाठ (संस्कृत):

गिरीन्द्रसदृशाकारो लीलयोन्मूलितद्रुमः ।

करिणीस्पर्शसम्मोहाद् आलानं याति वारणः ॥४४॥

IAST:

girīndrasadṛśākāro līlayonmūlitadrumaḥ / kariṇīsparśasammohād ālānaṃ yāti vāraṇaḥ ||44||

शब्दार्थ:

- **गिरीन्द्रसदृशाकारः** (girīndrasadṛśākāraḥ) – गिरि (पर्वत) + इन्द्र (श्रेष्ठ) + सदृश (तुल्य / समान) + आकार (आकृति / शरीर) = महान पर्वत (मेरु) के समान विशाल, भारी-भरकम एवं शक्तिशाली आकृति वाला
- **लीलयोन्मूलितद्रुमः** (līlayonmūlitadrumaḥ) – लीलया (खेल-खेल में / सहजता से / आसानी से) + उन्मूलित (जड़ से उखाड़ दिया) + द्रुमः (वृक्ष / पेड़) = जो सहजता से, मानो खेल-खेल में, बड़े-बड़े वृक्षों को जड़ से उखाड़ सकता है (अत्यंत शक्तिशाली)
- **करिणीस्पर्शसम्मोहात्** (kariṇīsparśasammohāt) – करिणी (मादा हाथी / हथिनी) + स्पर्श (शारीरिक स्पर्श / त्वचा का सुख) + सम्मोह (अत्यधिक मोह / आसक्ति / भ्रम / बुद्धि-नाश) = मादा हाथी के स्पर्श-सुख / शारीरिक आसक्ति के कारण उत्पन्न अत्यधिक मोह (जो उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है)
- **आलानम्** (ālānam) – आलान / वह खंभा / स्तंभ / जंजीर / जाल, जिससे हाथी को बाँधा जाता है (यहाँ बंधन / कारागार / विनाश का प्रतीक)
- **याति** (yāti) – चला जाता है / प्राप्त होता है / फँस जाता है
- **वारणः** (vāraṇaḥ) – हाथी

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में हाथी (वारण) का अत्यंत मार्मिक रूपक प्रस्तुत करते हैं:

"गिरीन्द्रसदृशाकारो" – हाथी पर्वत के समान विशाल, अत्यंत शक्तिशाली और भयावह होता है। "लीलयोन्मूलितद्रुमः" – वह खेल-खेल में बड़े-बड़े पेड़ों को जड़ से उखाड़ सकता है (अत्यंत बलशाली, जिसे कोई आसानी से नहीं हरा सकता)।

परंतु, "**करिणीस्पर्शसम्मोहात् आलानं याति वारणः**" – फिर भी, **मादा हाथी (हथिनी) के 'स्पर्श-सुख' (शारीरिक आसक्ति / काम-वासना) के मोह (सम्मोह) में आकर**, वह विशाल, अजेय हाथी 'आलान' (उस खंभे / जंजीर / जाल) में चला जाता है, जहाँ शिकारी उसे बाँधकर वश में कर लेते हैं।

*गहनतम रहस्य – हाथी अपार शारीरिक शक्ति (बल) रखता है, पर **'स्पर्श' (शारीरिक वासना / स्त्री-स्पर्श / इन्द्रिय-सुख) का मोह** उसकी बुद्धि (विवेक) को नष्ट कर देता है, जिससे वह स्वयं ही **बंधन (आलान) और विनाश** के पास*

चला जाता है। इसी प्रकार, **मनुष्य (विशेषतः राजा/नेता)** – चाहे वह कितना भी शक्तिशाली, बुद्धिमान, या विजेता क्यों न हो – **यदि वह शारीरिक सुख / वासना (स्त्री-पुरुष संबंध / विलासिता / अनुचित संबंध) में अत्यधिक आसक्त (सम्मोहित) हो जाता है**, तो वह अपनी सारी बुद्धि, विवेक, प्रतिष्ठा, और साम्राज्य को गँवा बैठता है – *वह 'स्पर्श-रूपी मोह' (आलान) में बँधकर विनाश को प्राप्त होता है।* (जैसे – पौराणिक कथाओं में दाण्डक्य, और आधुनिक समय में कई राजनेता / सेलिब्रिटी जो यौन-कांडों में फँसकर बर्बाद हो गए)।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'सेक्स-स्कैंडल' (Sex Scandals), 'वासना-युक्त-दुर्व्यवहार' (Sexual Harassment), और 'विलासिता-पूर्ण जीवन' (Luxury / Comfort Addiction) के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Power attracts temptation" (शक्ति प्रलोभन को आकर्षित करती है):** जिन नेताओं / सीईओ / सेलिब्रिटीज के पास अपार शक्ति, पैसा, और प्रतिष्ठा (हाथी-समान बल) होती है, उनके आसपास हमेशा विपरीत लिंग के लोग (हथिनी-रूप) आकर्षित होते हैं, और वे 'स्पर्श-सुख' (शारीरिक संबंध) के प्रलोभन में आसानी से फँस जाते हैं। आधुनिक इतिहास में हॉलीवुड (वेनस्टीन), राजनीति (क्लिंटन, बर्लुस्कोनी), और कॉर्पोरेट जगत (ट्रैविस कलानिक – उबर के संस्थापक) – सभी ने 'स्पर्श-लोभ' (अनुचित यौन-संबंध) में अपनी प्रतिष्ठा, पद, और करोड़ों की कंपनियाँ गँवाईं। यही है 'आलानं याति' (बंधन / विनाश)।

2. **"Sexual Harassment" और "POSH Act" (आधुनिक कानून):** आज किसी भी संगठन में 'स्पर्श-लोभ' (अनुचित शारीरिक संपर्क / यौन-उत्पीड़न) को 'आलान' (बंधन) से भी बदतर माना जाता है, क्योंकि यह कानूनी रूप से अपराध है। POSH (Prevention of Sexual Harassment) Act के तहत, यदि कोई नेता (हाथी) 'करिणी-स्पर्श' (महिला-कर्मचारी का अनुचित स्पर्श) करता है, तो वह 'आलान' (नौकरी से निष्कासन, कानूनी मुकदमा, समाज में कलंक) में जकड़ जाता है – चाहे वह कितना भी बड़ा और शक्तिशाली क्यों न हो।

3. **"Luxury Addiction" (विलासिता की लत) – आधुनिक स्पर्श-लोभ:** 'स्पर्श' का अर्थ केवल यौन-सुख नहीं है; इसका अर्थ आरामदेह जीवन, महँगे बिस्तर, AC, स्पा, मसाज, और महँगे कपड़े (जो 'त्वचा' को अत्यधिक सुख देते हैं) – यह भी है। जो व्यक्ति इन 'भौतिक-स्पर्श-सुखों' का दास (सम्मोहित) हो जाता है, वह मेहनत, संघर्ष, और जोखिम (साहस) से भागने लगता है। अंततः, वह 'आलान' (जड़ता / आलस्य / बर्नआउट / वित्तीय बर्बादी) में जकड़ जाता है – जैसे कोई शक्तिशाली हाथी भी यदि अत्यधिक आराम का आदी हो जाए, तो जंगल में शिकारी आसानी से उसे पकड़ लेता है।

4. **"Addiction to Physical Pleasure" (शारीरिक सुख की लत) – मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** आधुनिक मनोविज्ञान (Psychology) कहता है कि शारीरिक सुखों (सेक्स, नशा, जंक-फूड) का डोपामाइन (Dopamine) रिलीज़ होना स्वाभाविक है, पर जब व्यक्ति उसी 'स्पर्श-सुख' (तात्कालिक आनंद) का आदी (Addict) हो जाता है, तो वह सेल्फ-कंट्रोल (आत्म-नियंत्रण) खो देता है, और उसकी निर्णय-क्षमता (बुद्धि) कमजोर हो जाती है। यही 'सम्मोह' (मोह / भ्रम) है, जो उसे 'आलान' (मानसिक बंधन – जैसे डिप्रेशन, चिंता, या शारीरिक बीमारी) की ओर ले जाता है।

5. **नेतृत्व में 'शारीरिक-संयम' (Self-Restraint) का महत्त्व:** एक सच्चा नेता (राजा) वही है, जो अपनी शारीरिक इच्छाओं (काम-वासना / विलासिता) पर नियंत्रण रखता है। जो नेता 'स्पर्श-लोभ' (आराम, यौन-सुख, या महँगी चीज़ों का स्पर्श) में डूबता है, वह अपनी 'फौज' (कर्मचारी / प्रजा) और 'राज्य' (संगठन / देश) के प्रति अपनी सजगता (Vigilance) खो बैठता है। **जो नेता 'स्पर्श' (विलासिता) पर विजय प्राप्त कर लेता है, उसे आधुनिक युग में 'दूरदर्शी' (Visionary) कहा जाता है** – जैसे – स्टीव जॉब्स का सादा जीवन, वॉरेन बफे का मामूली घर, या सत्या नडेला की विनम्रता।

पतंगा (शलभ) – रूप / दृश्य-आकर्षण का लोभ

मूल पाठ (संस्कृत):

स्निग्धदीपशिखालोकविलोभितविलोचनः ।

मृत्युम् ऋच्छत्य् असन्देहात् पतङ्गः सहसा पतन् ॥४५॥

IAST:

snigdhadīpaśikhālokavilobhitavilocanaḥ /
mṛtyum ṛcchaty asandehāt pataṅgaḥ sahasā patan ||45||

शब्दार्थ:

- **स्निग्ध** (snigdha) – स्निग्ध / आर्द्र / मधुर / मुलायम / आकर्षक (यहाँ दीपक की लौ का कोमल, स्थिर, मनोहारी प्रकाश)
- **दीपशिखा** (dīpaśikhā) – दीपक (दीया / लैम्प) + शिखा (लौ / ज्योति / आग की किरण) = दीपक की लौ
- **आलोक** (āloka) – प्रकाश / चमक / रौशनी
- **विलोभित** (vilobhita) – अत्यधिक लोभित / मोहित / आसक्त / जिसका मन पूर्णतः खिंच गया हो
- **विलोचनः** (vilocanaḥ) – नेत्र / आँखें (जिसकी आँखें उस प्रकाश से मोहित हो गई हों)
- **मृत्युम्** (mṛtyum) – मृत्यु / विनाश / मरण
- **ऋच्छति** (ṛcchati) – प्राप्त करता है / चला जाता है
- **असन्देहात्** (asandehāt) – निस्संदेह / निश्चित रूप से / बिना किसी संदेह के
- **पतङ्गः** (pataṅgaḥ) – पतंगा / शलभ / वह कीट जो रात में दीपक की ओर आकर्षित होता है
- **सहसा** (sahasā) – अचानक / झटपट / वेगपूर्वक (बिना सोचे-समझे)
- **पतन्** (patan) – गिरता हुआ / प्रवेश करता हुआ (अर्थात दीपक की लौ में जलने के लिए झपटता हुआ)

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में पतंगे (शलभ) का अत्यंत मार्मिक एवं भयावह रूपक प्रस्तुत करते हैं:

"स्निग्धदीपशिखालोकविलोभितविलोचनः" – पतंगे की आँखें (विलोचन) दीपक की मधुर, कोमल, स्थिर, एवं आकर्षक लौ (प्रकाश) से अत्यधिक मोहित (विलोभित) हो जाती हैं (वह लौ उसे अत्यंत सुंदर, मनोहारी दिखती है)।

"मृत्युम् ऋच्छत्य् असन्देहात् पतङ्गः सहसा पतन्" – परिणामस्वरूप, वह पतंगा बिना किसी संदेह (असन्देहात्) और अचानक (सहसा) उसी दीपक-लौ पर झपटता (पतन्) है, और तुरंत जलकर मृत्यु (मृत्युम्) को प्राप्त होता है।

*गहनतम रहस्य – पतंगे को वह **'रूप' (आकर्षक प्रकाश / दृश्य-सौंदर्य)** इतना भाता है कि वह उस **'आग' (विनाश)** को नहीं देख पाता, जो उस प्रकाश के पीछे छिपी है।* इसी प्रकार, **मनुष्य (विशेषतः राजा/नेता)** – चाहे वह कितना भी बुद्धिमान, अनुभवी, या सतर्क क्यों न हो – **बाहरी चमक-दमक, भव्यता, मनोहारी रूप, भ्रामक विज्ञापन, या आकर्षक व्यक्तित्व (रूप-लोभ)** के पीछे अंधा होकर **उस सुंदरता के भीतर छिपे विनाश (धोखाधड़ी / दिवालियापन / भ्रष्टाचार / टूटा हुआ रिश्ता / खोखली प्रतिष्ठा)** की ओर झपटता है, और अंततः **नष्ट** हो जाता है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'सोशल मीडिया दिखावे' (Social Media Glamour), 'विज्ञापनों के चमकीले झांसे' (Advertising Traps), 'भ्रामक निवेश योजनाओं' (Scams), और 'सतही (Superficial) रिश्तों' के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Social Media Glamour" (सोशल मीडिया की चमक):** आज इंस्टाग्राम, फेसबुक, और यूट्यूब पर लोग फोटोशॉप, फिल्टर, और लाइटिंग की मदद से अपना एक चमकीला, आकर्षक 'रूप' (दृश्य) प्रस्तुत करते हैं। बहुत से लोग, पतंगे की तरह, इस 'आकर्षक चमक' (रूप-लोभ) में फँसकर इन 'इन्फ्लुएंसर्स' (दिखावा करने वालों) को फॉलो करते हैं, उनके प्रोडक्ट्स खरीदते हैं, और बाद में पाते हैं कि यह सब सिर्फ दिखावा (खोखला) था – उनका पैसा, समय, और मानसिक शांति (जीवन-दीपक) जल गई। यही है 'सहसा पतन्' (अचानक झपटना → नष्ट होना)।

2. **"Shiny Object Syndrome" (चमकीली वस्तु सिंड्रोम):** आधुनिक निवेश (Investments) और स्टार्टअप की दुनिया में, बहुत से लोग भव्य, चमकीली कहानियों (पतंगे को आकर्षित करने वाली दीपशिखा) में फँसकर

अपना पैसा लगा देते हैं – जैसे बिटकॉइन, शेयर बाजार के चक्कर, या 'क्विक-रिच' (जल्दी अमीर) स्कीम्स। जब तक उन्हें पता चलता है कि यह सब 'दिखावा' (आकर्षक रूप, पर अंदर आग) था, तब तक उनका सारा निवेश (जीवन-पूँजी) नष्ट हो चुका होता है।

3. **"Physical Attraction vs. Reality" (शारीरिक आकर्षण बनाम वास्तविकता):** बहुत से लोग किसी के 'बाहरी रूप' (आकर्षक दिखने) के कारण उसके पीछे भागते हैं, और उसके आंतरिक गुणों (चरित्र, ईमानदारी, मानसिकता) को अनदेखा कर देते हैं (दीपक की आग को न देख पाना)। बाद में, रिश्ते टूटते हैं, तलाक होते हैं, या भावनात्मक पीड़ा होती है – यही 'मृत्युम् ऋच्छति' (रिश्तों की मृत्यु / आत्म-सम्मान की हानि) है।

4. **"Consumerism Trap" (उपभोक्तावाद का जाल):** विज्ञापन कंपनियाँ जानबूझकर खूबसूरत मॉडल, आकर्षक पैकेजिंग, और चमकीले रंग (रूप) का उपयोग करती हैं, ताकि उपभोक्ता (पतंगा) 'विलोभित' (मोहित) होकर वह वस्तु खरीद ले, भले ही वह वस्तु उसकी आवश्यकता न हो, या उसकी गुणवत्ता खराब हो (दिखने में सुंदर, पर उपयोग में निकम्मी)। अंततः बजट बिगड़ता है और कर्ज बढ़ता है।

5. **"Fraud and Ponzi Schemes" (घोटाले):** बर्नार्ड मैडऑफ (Bernie Madoff) या सत्यम (Satyam) जैसे घोटालों में निवेशक शानदार रिटर्न, स्थिर वृद्धि, और भव्य भवनों (आकर्षक रूप) के कारण फँस गए, और उन्होंने उसके अंदर छिपे भ्रष्टाचार-रूपी 'अग्नि' को नहीं देखा। जब घोटाला खुला, तो हजारों निवेशकों (पतंगों) को अपना सब कुछ (मृत्यु) खोना पड़ा।

6. **"Netflix / OTT Addiction" (मनोरंजन का चकाचौंध):** ओटीटी प्लेटफॉर्म (नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम) पर चमकीले पोस्टर, स्टार कलाकार, और भव्य दृश्य-श्रृंखलाएँ (आकर्षक रूप) हमें 'विलोभित' (मोहित) करके सीरीज़ देखने पर मजबूर कर देते हैं – हम 'बस एक एपिसोड' सोचकर शुरू करते हैं, और अचानक (सहसा) 4-5 घंटे बीत जाते हैं। हमारी कीमती नींद, उत्पादकता, और काम (जीवन-दीपक) इस 'दृश्य-आग' में झोंक दिए जाते हैं।

मछली (मीन) – रस / स्वाद का लोभ

मूल पाठ (संस्कृत):

दूरेऽपि हि भवन् दृष्टेर् अगाधे सलिले चरन् ।

मीनस् तु सामिषं लोहम् आस्वादयति मृत्यवे ॥४६॥

IAST:

dūre'pi hi bhavan dṛṣṭer agādhe salile caran /
mīnas tu sāmiṣaṃ loham āsvādayati mṛtyave ||46||

शब्दार्थ:

- **दूरे** (dūre) – दूर / बहुत दूर (स्थान या दृष्टि से)
- **अपि** (api) – भी / यद्यपि
- **हि** (hi) – निश्चय ही (बल देने के लिए)
- **भवन्** (bhavan) – स्थित होते हुए / रहते हुए
- **दृष्टेः** (dṛṣṭeḥ) – (मछुआरे / शिकारी की) दृष्टि / नज़र से
- **अगाधे** (agādhe) – अगाध / गहन / अथाह / बहुत गहरे
- **सलिले** (salile) – जल / पानी में
- **चरन्** (caran) – विचरण करता हुआ / तैरता हुआ

- **मीनः** (mīnaḥ) – मछली
- **तु** (tu) – परन्तु / किन्तु
- **सामिषम्** (sāmiṣam) – स (सहित / युक्त) + आमिष (माँस / चारा / भोजन-लालच) = माँस / चारे (बैट) से युक्त
- **लोहम्** (loham) – लोहा / धातु (यहाँ काँटा / बंसी – जो मछली को पकड़ने के लिए होती है)
- **आस्वादयति** (āsvādayati) – स्वाद लेता है / चखता है / (लालच में) मुँह लगाता है
- **मृत्यवे** (mṛtyave) – मृत्यु के लिए / विनाश के उद्देश्य से (अर्थात वह स्वाद ही उसकी मृत्यु का कारण बनता है)

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में मछली (मीन) का अत्यंत मार्मिक रूपक प्रस्तुत करते हैं:

"दूरेऽपि हि भवन् दृष्टेर् अगाधे सलिले चरन्" – मछली, **यद्यपि (अपि) मछुआरे की दृष्टि (नज़र) से बहुत दूर** और **गहरे जल (अगाध सलिल) में विचरण कर रही है** – अर्थात वह पूर्णतः **सुरक्षित**, बाहरी खतरों से दूर, और स्वतंत्र है।

परंतु, "**मीनस् तु सामिषं लोहम् आस्वादयति मृत्यवे**" – फिर भी, जब वह **'सामिष' (माँस-चारा / बैट) से युक्त उस 'लोह' (लोहे के काँटे / बंसी)** को **'आस्वादयति' (स्वाद लेने / चखने)** के लिए मुँह लगाती है, तो वह **'मृत्यवे' (अपनी ही मृत्यु)** को आमंत्रित कर लेती है।

*गहनतम रहस्य – मछली को बाहरी शत्रु (मछुआरा) ज़बरदस्ती नहीं पकड़ सकता; वह **'स्वाद' (रस-लोभ / खाने की इच्छा)** के कारण स्वयं ही **उस काँटे (जाल / बंधन)** को निगल जाती है, जो उसे मौत (विनाश) की ओर ले जाता है।* इसी प्रकार, **मनुष्य (विशेषतः राजा/नेता)** – चाहे वह कितना भी शक्तिशाली, बुद्धिमान, या सुरक्षित (अगाध जल) क्यों न हो – **यदि वह 'रस' (स्वादिष्ट भोजन, मीठा-मसालेदार जंक-फूड, शराब, या महँगे पकवानों की लालसा) के मोह में फँस जाता है, तो वह उसी 'स्वाद-लोभ' (जो किसी षड़यंत्र, रिश्वत, या भ्रष्टाचार का रूप हो सकता है) के द्वारा पकड़ा जाता है और नष्ट हो जाता है।** 'स्वाद' का अर्थ केवल खाना नहीं, बल्कि कोई भी **तात्कालिक भौतिक सुख (money, power, comfort)** जो आपको उस 'जाल' (गलत निर्णय / धोखा) में फँसाए, वही है।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'फास्ट-फूड संस्कृति' (Fast Food Culture), 'शुगर-ऐडिक्शन' (Sugar Addiction), 'जंक फूड ट्रैप', 'रिश्वत / भ्रष्टाचार' (Bribery), और 'लालच-जाल' (Greed Traps) के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Sugar Addiction" (चीनी / मीठे की लत) – आधुनिक स्वाद-जाल:** आज की प्रोसेस्ड फूड इंडस्ट्री (जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक्स, पैकेज्ड स्नैक्स, फास्ट-फूड) को **बिल्कुल इसी 'रस-लोभ' (स्वाद-लालसा)** पर डिज़ाइन किया गया है – नमक, चीनी, और वसा (Fat) का ऐसा कॉम्बिनेशन, जो हमारे दिमाग (डोपामाइन) में 'लत' (Addiction) पैदा करता है। मछली (मानव) गहरे समुद्र में (सुरक्षित / स्वस्थ) रह सकता है, पर जंक-फूड का 'रस' (स्वाद) उसे 'काँटा' (मोटापा, मधुमेह, हृदय-रोग – आधुनिक मृत्यु) निगलने पर मजबूर कर देता है। यही है "लोहम् आस्वादयति मृत्यवे" (स्वाद लेकर मौत को आमंत्रण)।

2. **"Free Samples" (मुफ्त नमूने) – विपणन का सबसे पुराना जाल:** कोई भी कंपनी आपको 'सामिषम्' (मुफ्त स्वाद / चारा) देती है (जैसे – मुफ्त डेमो, फ्री ट्रायल, डिस्काउंट)। आप उस 'आकर्षक स्वाद' (शुरुआती सुविधा / लाभ) के लोभ में फँसते हैं, और बाद में आपको महँगे सब्सक्रिप्शन, खराब गुणवत्ता, या छुपे हुए खर्चों (काँटा) के रूप में नुकसान उठाना पड़ता है (मृत्यु-रूपी वित्तीय बर्बादी)।

3. **"Greed Trap" (लालच का जाल) – भ्रष्टाचार और निवेश घोटाले:** राजनीति और कॉर्पोरेट जगत में, जब किसी नेता / अधिकारी को कोई व्यक्ति 'मीठा लालच' (स्वादिष्ट चारा / रिश्वत / शेयर / मोटा कमीशन) देता है, तो वह उस 'लालच-काँटे' को **आस्वाद' (स्वीकार)** कर लेता है। वह सोचता है कि मैं समझदार हूँ, मैं बच निकलूँगा, पर वह 'लोहम्' (लालच) उसे अंदर ही अंदर बाँध लेता है, और अंततः ईडी / सीबीआई (जाल) में फँसकर उसे जेल (मृत्यु-तुल्य सज़ा) भुगतनी पड़ती है। (जैसे – कई राजनेता / बैंकर जो घोटालों में फँसे)।

4. **"इंद्रिय-नियंत्रण" का आधुनिक व्यवहारिक अर्थ:** यह श्लोक हमें 'खान-पान' (Diet) पर अनुशासन का महत्त्व सिखाता है। आधुनिक पोषण विज्ञान (Nutrition Science) कहता है कि फास्ट-फूड / शुगर / तला-भुना (जो

अत्यधिक स्वादिष्ट होते हैं) **हमें लत (Addiction)** लगाते हैं, और फिर वे ही **'मृत्यवे' (हार्ट अटैक, डायबिटीज़, लिवर फेलियर)** का कारण बनते हैं। 'अगाधे सलिले' (सुरक्षित, गहरा पानी) आज का 'ऑर्गेनिक / होम-मेड हेल्दी फूड' है, पर 'रस-लोभ' (स्वाद-लालसा) हमें बार-बार रेस्तराँ / डिलीवरी ऐप्स (काँटा) की ओर झोंकता है।

5. **"Clickbait" (क्लिक-बैट) – डिजिटल जाल:** आज YouTube, फेसबुक, और न्यूज़ वेबसाइटों पर 'सामिष' (सनसनीखेज शीर्षक / लालच देने वाले थंबनेल) होते हैं – "यह 1 चीज़ आपको अमीर बनाएगी", "रहस्य खुला" – आप 'रस' (उत्सुकता-स्वाद) के लोभ में उस पर क्लिक (आस्वाद) करते हैं, और समय, फोकस, और मानसिक शांति (जीवन-दीपक) की 'मृत्यु' हो जाती है।

भौंरा (मधुकर) – गंध / सुगंध / नशा का लोभ

मूल पाठ (संस्कृत):

गन्धलुब्धो मधुकरो दानासवपिपासया ।

अभ्येत्य् असुखसञ्चारान् गजकर्णझनञ्झनान् ॥४७॥

IAST:

gandhalubdho madhukaro dānāsavapipāsayā / abhyety asukhasañcārān gajakarṇajhanajhanān ||47||

शब्दार्थ:

- **गन्धलुब्धः** (gandhalubdhaḥ) – गन्ध (सुगंध / महक) + लुब्धः (लोभी / आसक्त / अत्यधिक चाह रखने वाला) = सुगंध (गंध) में अत्यधिक आसक्त / लोभी
- **मधुकरः** (madhukaraḥ) – मधु (मक्खी / शहद) + कर (करने वाला / निर्माण) = मधुमक्खी / भौंरा (वह कीट जो फूलों का रस चूसता है)
- **दानासवपिपासया** (dānāsavapipāsayā) – दान (मद / हाथी के कपाल से निकलने वाला मादक रस) + आसव (मादक पेय / शराब / सुगंधित रस) + पिपासा (प्यास / तीव्र इच्छा) = हाथी के मद-रस (मादक सुगंधित द्रव) के लिए तीव्र प्यास / लालसा
- **अभ्येत्य** (abhyetya) – अभि (समीप / पास) + इत्य (आकर / प्राप्त कर) = समीप आकर / पास जाकर / उसके निकट पहुँचकर
- **असुखसञ्चारान्** (asukhasañcārān) – असुख (असुख / दुःख / कठिन / खतरनाक) + सञ्चार (विचरण / संचार / स्थान) = जिस स्थान पर विचरण करना / जाना कठिन, दुःखद और खतरनाक हो (अर्थात – हाथी के कानों के झटकों से भरा क्षेत्र)
- **गजकर्णझनञ्झनान्** (gajakarṇajhanajhanān) – गज (हाथी) + कर्ण (कान) + झनञ्झन (झनझनाहट / तेज़ फड़फड़ाने की आवाज़ / प्रचंड गति) = हाथी के कानों की तेज़ फड़फड़ाहट / झटकों / विकराल हलचल वाली जगह

भावार्थ: कामन्दक इस श्लोक में भौंरे (मधुकर) का अत्यंत मार्मिक एवं भयावह रूपक प्रस्तुत करते हैं:

"गन्धलुब्धो मधुकरो दानासवपिपासया" – **हाथी के 'मद' (कपाल से टपकने वाला सुगंधित, मादक द्रव) की सुगंध (गंध)** के प्रति **अत्यधिक लोभी (लुब्ध)** भौंरा, **उस मादक रस (दानासव) की प्यास (पिपासा)** में **अत्यंत आकर्षित** होता है।

"अभ्येत्य् असुखसञ्चारान् गजकर्णझनञ्झनान्" – वह भौंरा उस **अत्यंत खतरनाक, दुखद, और अस्थिर स्थान (असुखसञ्चारान्)** – अर्थात **हाथी के कानों के पास/अंदर – समीप आकर (अभ्येत्य)** पहुँच जाता है, जहाँ हाथी के कान **'झनञ्झन' (तेज़ फड़फड़ाहट)** के साथ लगातार हिलते-डुलते रहते हैं।

गहनतम रहस्य – भौंरा उस ***'मादक सुगंध' (गंध-लोभ)*** *के कारण इतना मोहित हो जाता है कि वह* ***उस विशाल, प्रचंड हाथी के कानों के बीच (जो उसे कुचल/बहा सकते हैं)*** *चला जाता है, और अंततः* ***कुचलकर / उड़कर*** *मारा जाता है (यह फल अगले श्लोक में आता है, पर यहाँ पूर्वाभास स्पष्ट है)।* इसी प्रकार, **मनुष्य (विशेषतः राजा/नेता)** – **'गंध' (सुगंधित पदार्थ / नशीली चीज़ें / इत्र / महँगी विलासिता / मादक वस्तुएँ)** के पीछे अंधा होकर, **उस खतरनाक स्थान (असुखसञ्चार)** की ओर चला जाता है, जहाँ उसका विनाश (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, या सामाजिक) निश्चित है। *गंध का अर्थ केवल नाक की सुगंध नहीं, बल्कि कोई भी* ***मोहक, मादक, लत-जनक (Addictive) अनुभव*** *– शराब, ड्रग्स, सत्ता-नशा, अहंकार, या फिजूलखर्ची – है।*

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'नशीली दवाओं' (Drugs), 'शराब की लत' (Alcoholism), 'परफ्यूम/ब्रांडेड विलासिता' (Luxury Brand Addiction), और 'सत्ता-नशा' (Ego / Power Addiction) के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Addiction" (लत) – आधुनिक 'गंध-लोभ':** आज शराब, सिगरेट, ड्रग्स, या नशीली दवाएँ – ये सब 'मादक रस' (दानासव) की तरह हैं। शुरू में इनकी 'सुगंध' (आकर्षक स्वाद/अनुभव) व्यक्ति को लुभाती है (गंध-लोभ), वह प्यास (आसव-पिपासा) से इसे पीता/सूँघता है, और धीरे-धीरे वह 'असुखसञ्चार' (शारीरिक-मानसिक बीमारी, कर्ज, परिवार-विघटन, नौकरी-छुट्टी) के उस 'जाल' (हाथी-कर्ण-क्षेत्र) में फँस जाता है, जहाँ से निकलना असंभव होता है, और अंततः जीवन का विनाश (कुचला जाना) होता है।

2. **"गंध" – महँगी विलासिता (Luxury Brand Trap) और 'स्टेटस-सिंबल':** बहुत से लोग महँगे परफ्यूम, डिज़ाइनर कपड़े, ब्रांडेड गाड़ियाँ (जो केवल 'सुगंध' – यानी दिखावा/प्रतिष्ठा – देती हैं) के पीछे भागते हैं, भले ही उन्हें कर्ज (काँटा) लेना पड़े। यह 'सुगंध' (सामाजिक स्वीकार्यता / प्रतिष्ठा) उन्हें 'असुखसञ्चार' (वित्तीय तनाव, मानसिक दबाव, असुरक्षा) की ओर खींच ले जाती है, जहाँ से वे बाहर नहीं निकल पाते। यही 'भौंरा-हाथी' का आधुनिक रूप है – *सुगंध पीछे, विनाश सामने।*

3. **"Power Addiction" (सत्ता-नशा) – नेताओं का सबसे बड़ा जाल:** किसी भी राजनेता / CEO / प्रशासक को सत्ता, पद, और अहंकार (Power & Ego) का एक 'मादक रस' (दानासव) मिलता है, जिसकी 'सुगंध' (लोगों की चापलूसी, मीडिया का ध्यान, विलासिता) उसे अत्यंत लुभाती है। इस 'गंध-लोभ' (प्रतिष्ठा-नशा) में वह 'असुखसञ्चार' (असंवैधानिक निर्णय, भ्रष्टाचार, अत्याचार) की ओर चला जाता है – जो हाथी-कान (उग्र जनता / विपक्ष / कानून) के 'झनञ्झन' (तेज़ झटके – जैसे जन-आक्रोश, चुनाव-हार, जेल) में फँसकर अंततः नष्ट हो जाता है (जैसे – कई तानाशाह, निरंकुश नेता, या भ्रष्ट अधिकारी)।

4. **"Smartphone & Social Media Addiction" (मोबाइल-लत):** आज का 'दानासव' है – सोशल मीडिया का 'इंफिनिट स्क्रॉल' (अंतहीन स्क्रॉलिंग) और नोटिफिकेशन्स। इनकी 'सुगंध' (चमकता स्क्रीन, न्यूज़-अलर्ट, 'लाइक्स' की झड़ी) हमें 'गन्ध-लुब्ध' (मोहित) करती है; हम 'पिपासया' (डोपामाइन की तीव्र प्यास) में इसे देखते रहते हैं, और हम 'असुखसञ्चार' (अनिद्रा, फोकस-हानि, आँखों-गर्दन की समस्या, समय-बर्बादी) में चले जाते हैं – जो एक बार फँसने पर निकलना मुश्किल होता है।

5. **"Substance Abuse" का दुष्चक्र:** किसी भी नशीले पदार्थ (शराब / ड्रग्स) का पहला सेवन 'सुगंध' (नशे का हल्का-सा आनंद) देता है, वह 'पिपासा' (और पीने / लेने की इच्छा) बढ़ाता है, व्यक्ति 'असुखसञ्चार' (शारीरिक विकार, वित्तीय बर्बादी, पारिवारिक टूटन) में फँसता है, और अंततः उसके जीवन का 'गजकर्णझनञ्झन' (भयंकर बीमारी या मृत्यु) उसे नष्ट कर देता है। *यह चक्र इसी श्लोक में पूर्ण रूप से वर्णित है –* ***लोभ → प्यास → आकर्षण → खतरनाक क्षेत्र में प्रवेश → विनाश****।*

क्षणिक सुख का भ्रम - ५ पशु क्या संदेश देते हैं?

मूल पाठ (संस्कृत)

एकैकशोऽपि निघ्नन्ति विषया विषसन्निभाः ।

क्षेमी तु स कथं नु स्याद् यः समं पञ्च सेवते ॥४८॥

IAST:

ekaikaśo'pi nighnanti viṣayā viṣasannibhāḥ /
kṣemī tu sa kathaṃ nu syād yaḥ samaṃ pañca sevate ||48||

शब्दार्थ:

- **एकैकशः** (ekaikaśaḥ) – एक-एक करके / अकेला-अकेला (प्रत्येक अलग से)
- **अपि** (api) – भी / तक
- **निघ्नन्ति** (nighnanti) – मार डालते हैं / नष्ट कर देते हैं / विनाश करते हैं
- **विषयाः** (viṣayāḥ) – विषय / इंद्रिय-भोग (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)
- **विषसन्निभाः** (viṣasannibhāḥ) – विष (ज़हर) + सन्निभ (तुल्य / समान) = ज़हर (विष) के समान
- **क्षेमी** (kṣemī) – क्षेम / सुरक्षित / कुशल / निरापद / मंगलमय
- **तु** (tu) – परन्तु / किन्तु
- **सः** (saḥ) – वह (व्यक्ति)
- **कथम्** (katham) – कैसे / किस प्रकार
- **नु** (nu) – क्या / (प्रश्नवाचक – क्या संभव है?)
- **स्यात्** (syāt) – हो सकता है / रह सकता है
- **यः** (yaḥ) – जो (व्यक्ति)
- **समम्** (samam) – एक साथ / समान रूप से / सब को एक साथ
- **पञ्च** (pañca) – पाँचों (विषयों) को
- **सेवते** (sevate) – सेवन करता है / भोगता है / आसक्त होता है

भावार्थ: यह श्लोक **पूरी 'पाँच पशु' श्रृंखला** (श्लोक ४३ से ४७) का **अत्यंत शक्तिशाली एवं भयावह निष्कर्ष** है। कामन्दक इस श्लोक में एक प्रश्न के माध्यम से सर्वोच्च चेतावनी देते हैं:

"एकैकशोऽपि निघ्नन्ति विषया विषसन्निभाः" – **ये विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) – अकेला-अकेला (एक-एक) भी (अपि) – विष (ज़हर) के समान (विषसन्निभाः) हैं, और (मनुष्य को) मार (निघ्नन्ति) सकते हैं / नष्ट कर सकते हैं।**

*अर्थात, पिछले चार श्लोकों में जो वर्णन किया गया – हिरण (केवल शब्द), हाथी (केवल स्पर्श), पतंगा (केवल रूप), मछली (केवल रस), भौंरा (केवल गंध) – उन सब में देखा कि **एक अकेली इंद्रिय का लोभ (जैसे – हिरण का केवल संगीत) भी उस प्राणी को निश्चित मृत्यु (विनाश) की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त था।***

फिर कामन्दक **अत्यंत तीक्ष्ण, अलंकारिक प्रश्न** करते हैं – "क्षेमी तु स कथं नु स्याद् यः समं पञ्च सेवते" – **परन्तु (तु) वह (सः) व्यक्ति, जो (यः) पाँचों (पञ्च) विषयों को एक साथ (समं) भोगता है (सेवते), वह (कथं नु) कैसे (कथम्) सुरक्षित (क्षेमी) रह सकता है (स्यात्)? (अर्थात – वह कदापि सुरक्षित नहीं रह सकता।)**

*गहनतम रहस्य – यदि एक अकेली इंद्रि-लालसा (एक पशु) विनाश के लिए पर्याप्त है, तो जो मनुष्य **सभी पाँचों इंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) को एक साथ असंयमित रूप से भोगता है** (यानी – अश्लील देखता है, बुरा सुनता है, बदबू/सुगंध में डूबता है, अधिक-बेस्वाद खाता-पीता है, अत्यधिक विलासिता/स्पर्श में रहता है), तो उसका विनाश **निश्चित, तीव्र और भयंकर** होता है – चाहे वह कितना भी बड़ा, बुद्धिमान या शक्तिशाली (राजा) क्यों न हो।* **यह**

मानव-जीवन की 'बहुआयामी (Multidimensional) कमजोरी' को दर्शाता है – जब इंद्रियाँ सभी दिशाओं से आक्रमण करती हैं, तो विवेक (बुद्धि) के पास बचने का कोई रास्ता नहीं बचता।

पशु	🐐 इंद्रिय	🎯 लोभ
हिरण (मृग)	शब्द (संगीत)	शिकारी के जाल में फंसता है
हाथी (वारण)	स्पर्श (हथनी)	जंजीरों में बंध जाता है
पतंगा (शलभ)	रूप (दीपक की चमक)	आग में जल मरता है
मछली (मीन)	रस (स्वाद)	काँटे पर टंग जाती है
भौंरा (मधुकर)	गंध (सुगंध)	कुचल जाता है

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'डिजिटल-ओवरस्टिमुलेशन' (Digital Overstimulation), 'मल्टीटास्किंग' (Multi-tasking) में विषय-भोग, और 'सेंसरी-ओवरलोड' (Sensory Overload) – तीनों के लिए सबसे बड़ी वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक चेतावनी है:

1. **"Sensory Overload" (संवेदी-अतिभार) – आधुनिक मानसिक बीमारियाँ:** आज हम एक साथ स्क्रीन (रूप), हेडफोन (शब्द), एसी/स्पर्श (स्पर्श), कोल्ड ड्रिंक/चिप्स (रस), और रूम फ्रेशनर/परफ्यूम (गंध) – इन सब **पाँचों विषयों** को **एक साथ (समम्)** लगातार भोगते रहते हैं। इस 'सेंसरी-ओवरलोड' (अतिभार) से हमारा मस्तिष्क (तंत्रिका तंत्र) थक जाता है, तनाव (Cortisol) बढ़ जाता है, और चिंता (Anxiety), अवसाद (Depression), अनिद्रा (Insomnia), और फोकस-हानि (Attention Deficit) – ये सब 'आधुनिक विष' (विषय-जनित रोग) बन जाते हैं। *यही है – 'पञ्च सेवते' (पाँचों का एक साथ सेवन) का परिणाम।*

2. **"Multi-tasking Myth" (मल्टीटास्किंग का भ्रम):** बहुत से लोग गर्व से कहते हैं – "मैं एक साथ 5 काम कर सकता हूँ" (फोन देखना, खाना खाना, टीवी देखना, गाना सुनना, और मैसेज करना)। पर कामन्दक (और आधुनिक न्यूरोसाइंस) कहते हैं – **यह 'एक साथ 5' (समं पञ्च) ही आपकी बुद्धि (विवेक) और उत्पादकता को सबसे अधिक नष्ट करने वाला कार्य है।** जब 5 इंद्रियाँ एक साथ 5 अलग-अलग दिशाओं में विचलित होती हैं, तो **आप किसी भी कार्य पर गहनता (Depth) से ध्यान नहीं दे पाते**, सतहीपन (Shallowness) बढ़ता है, और गलतियाँ (Errors) अधिक होती हैं। यही 'मल्टीटास्किंग' आपको *'क्षेमी' (सुरक्षित, सफल) नहीं, बल्कि 'अक्षेमी' (असफल, तनावग्रस्त, बर्नआउट) बनाती है।

3. **"एकैकशः" (एक अकेला) भी घातक – 'कम्पाउंडिंग इफ़ेक्ट' (संचयी प्रभाव):** मान लीजिए कि आप केवल एक लत (जैसे – केवल सोशल मीडिया / रूप) में हैं, तो भी वह आपको समय, नींद, और आत्म-सम्मान से वंचित कर सकती है (जैसे – पतंगा)। पर जब **आप 5 लतों** (सोशल मीडिया, जंक-फूड, नशा, विलासिता, गपशप) में एक साथ हों, तो यह **'संचयी प्रभाव' (Compound Effect)** इतना तीव्र होता है कि आपका पतन (विनाश) बहुत तेज़ी से होता है – जैसे पाँचों पशु एक साथ मिलकर आप पर आक्रमण कर दें। *यही श्लोक का व्यावहारिक गणित है – 1 विष भी जानलेवा, 5 विष तो मृत्यु-समान।*

4. **"Digital Wellbeing" (डिजिटल स्वास्थ्य) – आधुनिक समाधान:** आज की टेक्नोलॉजी कंपनियाँ (Google, Apple) 'Digital Wellbeing' (डिजिटल स्वास्थ्य) और 'Screen Time' (स्क्रीन समय) जैसी सुविधाएँ देती हैं – जो **वास्तव में इसी श्लोक का आधुनिक क्रियान्वयन है – अर्थात 'समं पञ्च' (एक साथ पाँचों विषयों) को **'एकैकशः' (एक-एक करके) नियंत्रित (सीमित) करना।** नोटिफिकेशन बंद करें (शब्द), स्क्रीन टाइम कम

करें (रूप), फास्ट-फूड/शुगर छोड़ें (रस), आरामदायक पर निर्भरता कम करें (स्पर्श), और अत्यधिक परफ्यूम / सुगंधित उत्पादों से बचें (गंध)।

"एकाग्रता (Focus) की रक्षा": आधुनिक मनोविज्ञान (Cal Newport – Deep Work) कहता है – **'गहन कार्य (Deep Work) के लिए, आपको अपनी 5 इंद्रियों को एक ही 'कार्य-विषय' पर केंद्रित करना होगा, न कि उन्हें 5 अलग-अलग विषयों में बिखेरना।'** जो व्यक्ति 'समं पञ्च' (सब एक साथ) से बचता है, और 'एकैकशः' (एक समय में एक) पर ध्यान केंद्रित करता है, वही आधुनिक दुनिया में **'क्षेमी' (सुरक्षित, सफल, संतुष्ट)** रह सकता है।

भोग: संयम एवं संतुलन का सिद्धांत (अति का त्याग, सही उपयोग)

मूल पाठ (संस्कृत):

सेवेत विषयान् काले मुक्त्वा तत्परतां वशी ।

सुखं हि फलम् अर्थस्य तन्निरोधे वृथा श्रियः ॥४९॥

IAST:

sevet viṣayān kāle muktvā tatparatāṃ vaśī |
sukhaṃ hi phalam arthasya tannirodhe vṛthā śriyaḥ ||49||

शब्दार्थ:

- **सेवेत** (sevet) – सेवन करे / भोगे / उपभोग करे / आनंद ले (विधि-वाचक – करना चाहिए)
- **विषयान्** (viṣayān) – विषयों / इंद्रिय-भोगों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) का
- **काले** (kāle) – उचित समय पर / सीमित / नियत अवसर पर (बिना अतिक्रमण के)
- **मुक्त्वा** (muktvā) – त्याग कर / छोड़ कर / हटा कर (गेरुंड)
- **तत्परताम्** (tatparatām) – तत्परता / अत्यधिक आसक्ति / लिप्सा / अति-लालसा / 'मैं इसके बिना नहीं रह सकता' की मानसिकता
- **वशी** (vaśī) – वश में / संयमी / आत्म-नियंत्रित (वह व्यक्ति जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो)
- **सुखम्** (sukham) – सुख / आनंद / संतुष्टि / प्रसन्नता
- **हि** (hi) – निश्चय ही (बल देने के लिए)
- **फलम्** (phalam) – फल / परिणाम / सार्थकता
- **अर्थस्य** (arthasya) – अर्थ / धन / संसाधनों / समृद्धि का
- **तन्निरोधे** (tannirodhe) – तत् (उस – अर्थात सुख/भोग) + निरोधे (रोकने / दमन / निषेध करने में) = यदि उस (विषय-भोग/सुख) को पूर्णतः रोक दिया जाए / दबा दिया जाए
- **वृथा** (vṛthā) – व्यर्थ / निष्फल / बेकार / अर्थहीन
- **श्रियः** (śriyaḥ) – श्री / समृद्धि / ऐश्वर्य / लक्ष्मी / वैभव

भावार्थ: यह श्लोक **'पाँच पशुओं' (हिरण-हाथी-पतंगा-मछली-भौंरा)** की श्रृंखला का **व्यावहारिक प्रतिउत्तर (Practical Antidote)** है। जहाँ पिछले श्लोकों में कामन्दक ने बताया कि विषय (इंद्रिय-भोग) कैसे विनाशकारी हैं, वहीं इस श्लोक में वे **'सही दृष्टिकोण' (Right Approach)** बताते हैं:

"सेवेत विषयान् काले मुक्त्वा तत्परतां वशी" – **एक संयमी (वशी) व्यक्ति को चाहिए कि वह 'तत्परता' (अत्यधिक आसक्ति / लालसा / लत) को त्यागकर (मुक्त्वा), उचित समय (काले) पर विषयों (इंद्रिय-सुखों) का सेवन (भोग) करे।**

अर्थात – न तो पूर्ण त्याग (संन्यास), और न ही अंध-भोग (असंयम); बल्कि ***'मध्यम मार्ग' (Middle Path) – नियंत्रित, सीमित, सचेत, और उचित समय पर भोग।*** *जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों को वश में रखता है, वह भोगों का दास (Slave) नहीं, बल्कि स्वामी (Master) होता है, और वह जानता है कि कब, कितना और कैसे भोगना है।*

फिर कामन्दक **अत्यंत गहन एवं व्यावहारिक दार्शनिक सिद्धांत** देते हैं – "सुखं हि फलम् अर्थस्य तन्निरोधे वृथा श्रियः" – **क्योंकि (हि) सुख (सुखम्) ही अर्थ (धन/समृद्धि) का वास्तविक फल (फलम्) है। यदि उस (तत्) सुख-भोग को रोक दिया जाए (निरोधे), तो वह समृद्धि (श्रियः) व्यर्थ (वृथा) हो जाती है।**

गहनतम रहस्य – यह एक अत्यंत ***स्वस्थ, संतुलित, और आधुनिक मानवीय दृष्टिकोण*** *है।* कामन्दक स्पष्ट कहते हैं कि **धन कमाने (अर्थ) का उद्देश्य केवल बैंक बैलेंस बढ़ाना नहीं है; उसका परम लक्ष्य है – 'सुख' (मानसिक संतोष, शारीरिक स्वास्थ्य, पारिवारिक आनंद, और जीवन-उत्सव) प्राप्त करना।** यदि कोई व्यक्ति अपार संपत्ति (श्री) अर्जित कर ले, पर उसका उपयोग करना न जाने (तन्निरोधे – उसे रोके/संचित करे, पर भोगे नहीं), तो वह संपत्ति **व्यर्थ** है – न तो वह उसका सुख पाता है, न समाज का कल्याण होता है। (यह *'कंजूस' (Miser) और 'लोभी' (Greedy) व्यक्ति* की स्थिति है, जो मरते दम तक पैसा गिनता है, पर उसका उपयोग जीवन को सुखी बनाने में नहीं करता)।

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'फाइनेंशियल प्लानिंग' (Financial Planning), 'वर्क-लाइफ बैलेंस' (Work-Life Balance), 'मानसिक स्वास्थ्य' (Mental Health), और 'मिनिमलिज्म' (Minimalism) का सबसे प्राचीन, सटीक एवं व्यावहारिक सूत्र है:

1. **"Money is a means, not an end" (धन साधन है, साध्य नहीं):** आज के भौतिकवादी युग में, बहुत से लोग 'पैसे के पीछे दौड़ना' (अर्थ) को ही जीवन का लक्ष्य (साध्य) बना लेते हैं। वे अपना स्वास्थ्य, परिवार, रिश्ते, और खुशी (सुख) का बलिदान कर देते हैं। कामन्दक 1500 साल पहले चेतावनी दे रहे हैं – **अर्थ (धन) का फल (फलम्) 'सुख' (खुशी) है।** यदि आप धन तो कमाते हैं, पर जीवन का आनंद (सुख) नहीं लेते (तन्निरोधे – खर्च/यात्रा/अनुभवों को रोकते हैं), तो वह धन **वृथा** (व्यर्थ) है। (जैसे – कोई करोड़पति जो सिर्फ बचत करे और कभी यात्रा/अच्छा खाना/रिश्तेदारी न निभाए)।

2. **"Work-Life Balance" (कार्य-जीवन संतुलन):** आज की 'हायर-फास्टर-मोर' (अधिक-तेज़-बड़ा) की संस्कृति में, हम 'विषयों' (काम, करियर, प्रतिस्पर्धा) में इतनी 'तत्पर' (अति-आसक्त) हो जाते हैं कि 'काले' (सही समय – जैसे परिवार संग समय, खेल-कूद, विश्राम) भूल जाते हैं। श्लोक कहता है – **'तत्परता' (Obsession) छोड़ो, और 'काले' (योजनाबद्ध, सीमित समय) में विषयों (छुट्टी, मनोरंजन, रिश्तों) का सेवन करो।** यही *'कार्य-जीवन-संतुलन'* है – जो आज 'बर्नआउट' (Burnout) और 'तनाव' (Stress) से बचने का सबसे बड़ा उपाय है।

3. **"Frugal Hedonism" (मितव्ययी आनंद) बनाम "Luxury Addiction" (विलासिता-लत):** यह श्लोक 'दिखावे' (Luxury) को प्रोत्साहित नहीं करता, बल्कि **'सार्थक भोग' (Meaningful Enjoyment)** को प्रोत्साहित करता है। यानी – महँगी गाड़ी खरीदना (विषय) तभी सार्थक है, जब उससे आपको वास्तविक सुख (परिवार संग यात्रा, सुरक्षा, समय बचत) मिले। यदि आप सिर्फ 'दिखाने' के लिए कर्ज लेकर गाड़ी खरीदते हैं (तत्परता – आसक्ति), तो वह व्यर्थ है। और यदि आप करोड़पति हैं, पर हमेशा सस्ता, बासी, घटिया सामान खाते/पहनते हैं (तन्निरोधे – सुख को रोकना), तो भी वह समृद्धि व्यर्थ है। **'मध्यम मार्ग'** – बचत भी करो, और कभी-कभी अच्छे भोजन/अनुभव पर खर्च भी करो – यही इस श्लोक का 'मिनिमलिज्म' है।

4. **"Psychology of Consumption" (उपभोग मनोविज्ञान) – Hedonic Treadmill:** आधुनिक मनोविज्ञान कहता है कि खरीदारी (नया फोन, नई कार) से शुरू में बहुत खुशी होती है, पर वह जल्दी ही घट जाती है (Hedonic Adaptation)। इसलिए, 'अधिक-से-अधिक' खरीदना (अत्यधिक विषय-भोग) खुशी नहीं देता, बल्कि थकान देता है। श्लोक का समाधान है – **'काले' (समय-सीमित) और 'मुक्त्वा तत्परताम्' (बिना लालसा/लत के) भोग करें।** – जैसे – फोन पर दिन में 30 मिनट (काले) गेम खेलें, पर 6 घंटे नहीं (तत्परता – लत)।

5. **"कंजूसी" (Miserliness) बनाम "अपव्यय" (Extravagance):** यह श्लोक **दोनों चरम सीमाओं (Extremes) – कंजूसी (जो सुख को पूर्णतः रोकता है – तन्निरोधे) और फिजूलखर्ची (जो अति-लालसा में डूबता है – तत्परता) – से बचाता है।** सही दृष्टिकोण है – **ईमानदारी से कमाए गए धन (अर्थ) का एक हिस्सा बचत (भविष्य के लिए), एक हिस्सा निवेश (वृद्धि), और एक हिस्सा 'सुख' (जीवन-आनंद – यात्रा, शिक्षा, कला, दान, परिवार) में लगाना।** यही आधुनिक 'Financial Wellness' (वित्तीय स्वास्थ्य) है।
6. **"सेवेत विषयान् काले" – विवाहित जीवन और यौन-संयम:** यह श्लोक 'ब्रह्मचर्य' (पूर्ण त्याग) का समर्थन नहीं करता, न ही 'अनैतिक यौन-भोग' का। यह **'विवाह-बंधन में नियमित, सीमित, सहमत यौन-जीवन' (काले विषय-भोग)** की बात करता है – जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। अत्यधिक (तत्परता) या पूर्ण-त्याग (निरोध) – दोनों ही हानिकारक हैं।

काम (अत्यधिक वासना) – यौवन एवं समृद्धि का ह्रास

मूल पाठ (संस्कृत):

निकामासक्तमनसां कान्तामुखविलोकने ।

गलन्ति गलिताश्रूणां यौवनेन सह श्रियः ॥५०॥

IAST:

nikāmāsaktamanasāṃ kāntāmukhavilokane /
galanti galitāśrūṇāṃ yauvanena saha śriyaḥ //50//

शब्दार्थ (शब्द-दर-शब्द अर्थ):

- **निकामासक्तमनसाम्** (nikāmāsaktamanasām) – निकाम (अत्यधिक / बहुत अधिक) + आसक्त (आसक्त / लिप्त / चिपका हुआ) + मनसाम् (मन वालों का / जिनका मन हो) = जिनका मन अत्यधिक आसक्त (लालसा / लत से भरा) हो
- **कान्तामुखविलोकने** (kāntāmukhavilokane) – कान्ता (प्रिया / पत्नी / स्त्री / युवती) + मुख (मुख / चेहरा) + विलोकने (देखने / निहारने / ताकने में) = (किसी) स्त्री के मुख-मंडल / सौंदर्य को निहारने / देखने में
- **गलन्ति** (galanti) – गलना / बह जाना / नष्ट होना / क्षय होना / लुप्त होना
- **गलिताश्रूणाम्** (galitāśrūṇām) – गलित (गिरे हुए / बहते हुए) + अश्रूणाम् (आँसू) = जिनके (अन्त में) आँसू बहते हैं / जो अंततः रोते / पछताते हैं
- **यौवनेन** (yauvanena) – यौवन / जवानी / शारीरिक-मानसिक ऊर्जा / आयु के साथ
- **सह** (saha) – सहित / के साथ / साथ-साथ
- **श्रियः** (śriyaḥ) – श्री / समृद्धि / ऐश्वर्य / बुद्धि-प्रतिष्ठा / राज-लक्ष्मी / वैभव

भावार्थ: यह श्लोक **'काम' (अत्यधिक वासना / शारीरिक-सौंदर्य में अंध-आसक्ति)** के विनाशकारी परिणाम को अत्यंत मार्मिक एवं भयावह रूप में प्रस्तुत करता है:

"निकामासक्तमनसां कान्तामुखविलोकने" – **जिन (पुरुषों/शासकों) का मन किसी स्त्री (प्रिया/रानी/अन्य) के मुख-सौंदर्य / रूप-यौवन को अत्यधिक (निकाम) आसक्ति (लालसा/लत/मोह) से देखने / निहारने / ध्यान करने में ही लगा रहता है** – अर्थात उनकी सारी बुद्धि, समय, और ऊर्जा केवल 'सौंदर्य-भोग' में खर्च होती है; वे अपने कर्तव्य, राज्य-प्रबंधन, या आत्म-विकास की ओर देखते ही नहीं।

"गलन्ति गलिताश्रूणां यौवनेन सह श्रियः" – **ऐसे व्यक्तियों की 'श्री' (समृद्धि, बुद्धि, प्रतिष्ठा, साम्राज्य, सेना, और धन)** **यौवन (जवानी / शारीरिक ऊर्जा / आयु) के साथ-साथ (सह) धीरे-धीरे **'गलन्ति' (बह जाती है / क्षीण हो जाती**

है / नष्ट हो जाती है)। और अंत में, उनके पास **'गलिताश्रूणाम्' (केवल बहते आँसू – पश्चाताप, निराशा, और पराजय)** शेष रह जाती है।

*गहनतम रहस्य – यहाँ 'स्त्री-मुख-दर्शन' केवल शारीरिक वासना नहीं, बल्कि **किसी भी 'सौंदर्य-उपासना' (कला, संगीत, दिखावा, या अन्य इंद्रिय-सुख) के प्रति अत्यधिक मोह** का प्रतीक है।* कामन्दक चेतावनी देते हैं – जो राजा / व्यक्ति **'काम' (अत्यधिक यौन-आसक्ति / अनुचित संबंध / विलासिता) में समय, बुद्धि, और ऊर्जा खर्च करता है, वह अपना 'यौवन' (फिजिकल एनर्जी, मेंटल फोकस) भी खो देता है, और साथ ही उसकी 'श्री' (सत्ता, पैसा, राज्य, सम्मान) भी चली जाती है।** अंत में उसकी हालत उसी व्यक्ति की तरह होती है, जो सारा धन और शक्ति भोग-विलास में उड़ाकर वृद्धावस्था में अकेला, बीमार, और पश्चाताप से भरा होता है – *उसके पास केवल 'आँसू' बचते हैं।*

आधुनिक संदर्भ: यह श्लोक आज के 'यौन-कांडों' (Sex Scandals), 'सेलिब्रिटी-संस्कृति' (Celebrity Culture), 'अनैतिक संबंधों' (Infidelity), और 'विलासिता-पूर्ण जीवन' (Luxury Lifestyle) में फँसे नेताओं / सीईओ / सेलिब्रिटीज़ के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है:

1. **"Sex Scandals" (यौन-कांड) – सत्ता-पतन का सबसे बड़ा कारण:** हाल के दशकों में, कितने ही बड़े राजनेता (क्लिंटन, बर्लुस्कोनी, ट्रंप, या भारतीय राजनेता), कॉर्पोरेट सीईओ (ट्रैविस कलानिक – उबर, या बैंकर), और फिल्मी सितारे (वेनस्टीन, केविन स्पेसी) **अपने 'काम-लोभ' (अनुचित यौन-संबंध या यौन-उत्पीड़न)** में फँसकर अपनी बनाई हुई **करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति (श्री), प्रतिष्ठा, पद, और साम्राज्य** को कुछ ही दिनों / महीनों में गँवा बैठे। उनका 'यौवन' (समय/ऊर्जा) तो नष्ट हुआ ही, उनकी 'श्री' (कंपनी/राजनीतिक सत्ता) भी चली गई – और अंत में केवल **आँसू (जेल, तलाक, दिवालियापन)** बचे। यही है "गलन्ति... श्रियः"।

2. **"एडल्ट्री और तलाक" (Adultery & Divorce) – आधुनिक परिवारों का संकट:** जब कोई व्यक्ति (विशेषतः उच्च-पदस्थ / अमीर) **'कान्तामुख-विलोकने' (किसी अन्य व्यक्ति – जो कि उसका जीवन-साथी नहीं है – के रूप-सौंदर्य में) अत्यधिक आसक्त (लत)** हो जाता है, तो वह अपने वैवाहिक जीवन, बच्चों, और पारिवारिक जिम्मेदारियों को नष्ट कर देता है। परिणाम – महँगा तलाक, बच्चों की मानसिक क्षति, और आधी-आधी संपत्ति (श्री का ह्रास)। यौवन (आकर्षण और ऊर्जा) तो जाता है, और बुढ़ापे में वह अकेला, पछताता हुआ (आँसू) रह जाता है।

3. **"OnlyFans / Porn Addiction" (अश्लील सामग्री की लत):** आज के डिजिटल युग में, 'कान्तामुख' (स्त्री-पुरुष का रूप-सौंदर्य) **ऑनलाइन पोर्नोग्राफी, इंस्टाग्राम मॉडल्स, और OnlyFans** के रूप में चौबीसों घंटे उपलब्ध है। इसकी लत (निकामासक्ति) न केवल युवाओं की **मानसिक ऊर्जा (ध्यान, रचनात्मकता, ड्राइव) और शारीरिक स्वास्थ्य (टेस्टोस्टेरोन, ऊर्जा)** को नष्ट करती है, बल्कि वे अपना **कीमती समय, करियर के अवसर, और वास्तविक रिश्ते** भी गँवा देते हैं। उनके सोचने-समझने का 'यौवन' (मानसिक चपलता) और 'श्री' (आय / करियर ग्रोथ) दोनों बर्बाद हो जाते हैं, और अंत में अकेलापन और निराशा (आँसू) बचती है।

4. **"Leader's Time & Energy" (नेता का समय और ऊर्जा – सबसे मूल्यवान संसाधन):** यह श्लोक **'समय प्रबंधन' (Time Management)** का सबसे गहरा रहस्य भी बताता है। एक राजा/CEO की ऊर्जा (यौवन) और समृद्धि (श्री) सीमित है। यदि वह इसका 90% **'काम-विलास' (Sexual/Physical pleasures) या 'रूप-आसक्ति' (Gazing at beauty/लक्जरी देखने)** में खर्च करता है, तो उसके पास **राज्य-प्रबंधन, योजना, और नवाचार** के लिए शून्य ऊर्जा बचती है। स्टीव जॉब्स, सत्या नडेला, या वॉरेन बफे – ये सब अपनी ऊर्जा 'विलास' के बजाय 'निर्माण' में लगाते हैं, इसलिए उनकी 'श्री' (कंपनी) बढ़ती है, न कि घटती है।

5. **"यौवन" – शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा का संरक्षण:** आधुनिक विज्ञान (Ayurveda, Yoga, और Evenrology) कहता है कि **अत्यधिक यौन-गतिविधि / पोर्नोग्राफी / अनैतिक संबंध** शारीरिक 'ओजस' (Vital Energy) और मानसिक 'तेज' (Mental Clarity) को क्षीण कर देते हैं। कामन्दक 1500 साल पहले कह रहे थे – **'यौवन' (ऊर्जा/आयु) के साथ ही 'श्री' (बुद्धि/प्रतिष्ठा) भी बहती है**, यानी ऊर्जा-संरक्षण (Brahmacharya / Self-Control) ही सफलता और सम्मान का आधार है।

नीतिसार का निष्कर्ष – यदि एक इंद्रिय-भोग (विषय) इतना घातक है कि अकेला ही मार डालता है, तो जो मनुष्य एक साथ पाँचों इंद्रिय-भोगों का दास है, वह भला कैसे सुरक्षित रह सकता है?

इस भाग की मुख्य सीख

आत्म-विजय > विश्व-विजय – जो अपने मन को जीत लेता है, वही सबसे बड़ा विजेता है। बाहरी दुनिया को जीतने से पहले आंतरिक दुनिया पर विजय अनिवार्य है।

एक इंद्रिय का लोभ भी घातक है – ५ पशु (हिरण, हाथी, पतंगा, मछली, भौंरा) सिखाते हैं कि केवल एक इंद्रिय का अंध-लोभ भी विनाश का कारण बन सकता है।

संयम ही सुरक्षा है – जो मनुष्य पाँचों इंद्रिय-भोगों का दास है, वह कभी सुरक्षित, स्थिर और संतुष्ट नहीं रह सकता।

राज-व्यसन और ६ आंतरिक शत्रुओं का ऐतिहासिक अंत – क्या है अंतिम सत्य?

'षड्रिपु' किसे कहते हैं?

'षड्रिपु' – ६ आंतरिक शत्रु – काम (वासना), क्रोध (गुस्सा), लोभ (लालच), हर्ष (अति-आनंद/प्रमाद), मान (अहंकार) और मद (सत्ता-नशा/धन-नशा)। परंपरागत वर्णनों के अनुसार, इन्हीं के कारण इतिहास के महान राजा – दाण्डक्य, जनमेजय, नल, रावण और वृष्णि वंश – नष्ट हुए। केवल जितेन्द्रिय (आत्म-विजयी) व्यक्ति ही चिरकाल तक समृद्धि और यश प्राप्त करता है।

ग्रंथ के इस अंतिम खंड में कामन्दक जीवन के संतुलन और इतिहास के महान पात्रों के पतन व उत्थान की कहानियाँ प्रस्तुत करते हैं।

संतुलन का महा-सूत्र – धर्म, अर्थ, काम का सही मेल क्या है?

मूल पाठ (संस्कृत)

धर्मार्थकामयुक्तेन मार्गेणेह विजानता ।

सुखस्योदय इत्युक्तो नान्यथा चात्मघातकः ॥५१॥

IAST:

dharmārthakāmayuktena mārgeṇa iha vijānatā / sukhasyodaya ityukto nānyathā cātmaghātakaḥ //51//

शब्दार्थ:

- **धर्मार्थकामयुक्तेन** – त्रिवर्ग-युक्त
- **विजानता** – विवेकी व्यक्ति द्वारा
- **सुखस्योदयः** – सुख की प्राप्ति
- **आत्मघातकः** – आत्म-घातक

भावार्थ: नीतिसार का अंतिम सूत्र – जो विवेकी (विजानता) व्यक्ति धर्म, अर्थ, और काम – तीनों से युक्त (संतुलित) मार्ग पर चलता है, उसी को सुख (आनंद/संतोष) का उदय (प्राप्ति) होता है, अन्यथा (यदि असंतुलन/अतिवाद/लत/अन्याय है) वह आत्म-घातक (self-destructive) है।

काम-वासना का सूक्ष्म सम्मोहन – क्यों है यह सबसे खतरनाक?

कामन्दक यहाँ काम-वासना (Sexual Desire/Lust) की अत्यंत प्रबल, सूक्ष्म, और व्यापक शक्ति का वर्णन करते हैं। नीतिसार के अनुसार, जिस प्रकार धीरे-धीरे नदी का जल पहाड़ों का क्षय कर देता है, उसी प्रकार काम-वासना धीरे-धीरे सबसे स्थिर मन वालों को भी विगलित कर देती है। इसका संदेश – अत्यधिक सावधानी, आत्म-जागरूकता, संयम, मर्यादा और विवेक ही इस शक्ति के सम्मुख एकमात्र रक्षा है।

३ व्यसन और ६ शत्रु – इतिहास के कौन-से पात्र हुए नष्ट?

मूल पाठ (संस्कृत)

मृगयाक्षपानैर्नृपतयः पाण्डुनैषधवृष्णयः ।

नाशं नीताः क्रमेणैते तस्मादेतान् विवर्जयेत् ॥५६॥

IAST:

mṛgayākṣapānairnṛpatayaḥ pāṇḍunaiṣadhavṛṣṇayaḥ /
nāśaṃ nītāḥ krameṇaite tasmād etān vivarjayet //56//

भावार्थ (३ बाहरी व्यसन):

- **शिकार (मृगया):** राजा पाण्डु (परंपरागत कथाओं के अनुसार शापित हुए)
- **जुआ (अक्ष):** राजा नल (राज्य-हार)
- **नशा (पान):** वृष्णि/यदु वंश (पूर्ण विनाश)

मूल पाठ (संस्कृत)

दाण्डक्यो नाम राजर्षिर्नाशितः काममोहितः ।

क्रोधलुब्धौ च जनमेजयमैलौ नाशितौ नृपौ ॥५८॥

हर्षमानमदैश्चान्ये वातापिपौलस्त्यदम्भोद्भवाः ।

नाशिताः पुरुषव्याघ्रा हन्ति तस्माच्छ्रियं नृणाम् ॥५९॥

IAST:

dāṇḍakyo nāma rājarṣirnāśitaḥ kāmamohitaḥ /
krodhalubdhau ca janamejayamailau nāśitau nṛpau //58//
harṣamānamadaiścānye vātāpipaulastyadambhodbhavāḥ /
nāśitāḥ puruṣavyāghrā hanti tasmācchriyaṃ nṛṇām //59//

६ आंतरिक शत्रु (षड्रिपु) और उनके शिकार:

⚔️ शत्रु	🎯 शिकार (परंपरागत कथाओं के अनुसार)
काम (वासना)	राजा दाण्डक्य
क्रोध (गुस्सा)	राजा जनमेजय
लोभ (लालच)	राजा पुरूरवा (ऐल)
हर्ष (प्रमाद)	असुर वातापि

⚔️ शत्रु	🎯 शिकार (परंपरागत कथाओं के अनुसार)
मान (अहंकार)	रावण (पौलस्त्य)
मद (सत्ता-नशा)	राजा दम्भोद्भव

आधुनिक संदर्भ: ये ६ आंतरिक शत्रु आज के कॉर्पोरेट जगत, राजनीति, खेल, कला, शिक्षा, परिवार में उतने ही सक्रिय और घातक हैं। काम – अनुचित संबंध, यौन उत्पीड़न; क्रोध – गुस्सा, हिंसा; लोभ – भ्रष्टाचार, अंध-लालच; हर्ष – अति-आत्मविश्वास, प्रमाद; मान – अहंकार; मद – सत्ता/धन/यौवन का नशा।

जितेन्द्रिय राजा का अमर साम्राज्य – क्या है महा-क्लाइमेक्स?

मूल पाठ (संस्कृत):

शत्रुषड्वर्गम् उत्सृज्य जामदग्न्यो जितेन्द्रियः ।

अम्बरीषश् च महाभागो बुभुजाते चिरं महीम् ॥६०॥

IAST:

śatruṣaḍvargam utsṛjya jāmadagnyo jitendriyaḥ | ambarīṣaś ca mahābhāgo bubhujāte ciraṃ mahīm ||60||

शब्दार्थ:

- **शत्रुषड्वर्गम्** – ६ शत्रुओं को
- **उत्सृज्य** – त्याग/जीत कर
- **जामदग्न्यः** – परशुराम
- **जितेन्द्रियः** – इंद्रिय-विजयी
- **अम्बरीषः** – अम्बरीष
- **चिरम्** – चिरकाल

भावार्थ: यह ग्रंथ का महा-क्लाइमेक्स (चरमोत्कर्ष/अंतिम, सर्वोच्च संदेश) है। कामन्दक ने पतन के अनेक उदाहरण देने के बाद **उत्थान/अमर-सफलता के दो महान उदाहरण** प्रस्तुत किए हैं:

- **भगवान परशुराम (जामदग्न्य):** जिन्होंने ६ आंतरिक शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त की और जितेन्द्रिय (इंद्रिय-विजयी) होकर चिरकाल तक अमर-कीर्ति वाले रहे।
- **राजा अम्बरीष:** जो अत्यंत धार्मिक, न्यायप्रिय, सत्यवादी राजा थे, जिन्होंने भी ६ आंतरिक शत्रुओं पर विजय पाई और चिरकाल तक पृथ्वी का सुखपूर्वक शासन किया।

अंतिम संदेश: जो भी व्यक्ति/राजा/नेता इन ६ आंतरिक शत्रुओं को त्याग/जीत लेता है और इंद्रिय-जयी (जितेन्द्रिय) हो जाता है, वही सच्चा, स्थायी, अमर-सफलता, समृद्धि, यश और कीर्ति को प्राप्त करता है।

इस भाग की मुख्य सीख

षड्रिपु – ६ आंतरिक शत्रु – काम, क्रोध, लोभ, हर्ष, मान, मद। ये सब मनुष्य के विवेक, संयम और निर्णय-क्षमता को नष्ट कर देते हैं।

३ बाहरी व्यसन – शिकार, जुआ, नशा – इतिहास के महान राजा (पाण्डु, नल, वृष्णि वंश) इन्हीं के कारण नष्ट हुए।

जितेन्द्रिय ही अमर-सफलता प्राप्त करता है – जो ६ आंतरिक शत्रुओं को जीत लेता है, वही सच्चा, स्थायी, अमर-समृद्धि, यश और कीर्ति प्राप्त करता है (जैसे परशुराम और अम्बरीष)।

तुलना तालिका – अर्थशास्त्र बनाम नीतिसार

पहलू	चाणक्य का अर्थशास्त्र	कामन्दकीय नीतिसार
रचयिता	आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त)	आचार्य कामन्दक
काल	लगभग 4थी शताब्दी ई.पू.	लगभग 5वीं-7वीं शताब्दी ई.
शैली	गद्य (Prose)	पद्य (अनुष्टुप् छंद)
आकार	विशाल (15 अध्याय, 150+ प्रकरण)	संक्षिप्त (20 सर्ग)
उद्देश्य	प्रशासन, कूटनीति, अर्थव्यवस्था, युद्ध-नीति	नीति-शिक्षा, आत्म-प्रबंधन, सार-संग्रह
पाठक वर्ग	राजा, प्रशासक, अधिकारी	व्यस्त शासक, आम जन, विद्यार्थी
प्रमुख विषय	दण्डनीति, कूटनीति, राजकोष, चिकित्सा	इन्द्रियजय, सप्तांग, त्रिवर्ग, षड्रिपु, नेतृत्व
आधुनिक समकक्ष	Constitution, Administration Manual	Executive Summary, Leadership Guide, Self-Help

कालानुक्रम (Timeline) – ज्ञान-परंपरा का प्रवाह

काल / परंपरा	विवरण
🕉 वैदिक काल (ऋग्वेद, उपनिषद)	राजधर्म, मर्यादा, ऋत
📜 महाकाव्य काल (रामायण, महाभारत)	राजर्षि, कर्तव्य, संकट-प्रबंधन
📖 4थी शताब्दी ई.पू.	**आचार्य चाणक्य** → अर्थशास्त्र (विस्तृत गद्य, कूटनीति, प्रशासन)

काल / परंपरा	विवरण
📗 5वीं-7वीं शताब्दी	**आचार्य कामन्दक** → कामन्दकीय नीतिसार (संक्षिप्त पद्य, सार-ग्रंथ)
📘 मध्यकाल	कामन्दक, सुक्र, मनु, शुक्राचार्य – नीति-शास्त्रों का विकास
📚 19वीं-20वीं शताब्दी	पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अनुवाद एवं अध्ययन
🌐 21वीं शताब्दी	आधुनिक Leadership, Management, Mindfulness से तुलना

सारांश तालिका – मुख्य बिंदु एक नज़र में

क्र.सं.	विषय	श्लोक संख्या	मुख्य सिद्धांत	आधुनिक प्रासंगिकता
1.	मंगलाचरण/गुरु-परंपरा	१-६	ईश्वर-तुल्य न्यायप्रिय राजा; चाणक्य की महिमा	गुरु-कृतज्ञता, Leadership आदर्श
2.	ग्रंथ का उद्देश्य/नेतृत्व	७-१४	संक्षिप्तता (सार), उपार्जन+पालन, Security > Growth	Work-Life Balance, आपदा-प्रबंधन
3.	न्याय, धर्म, सप्तांग, वित्त	१५-२०	त्रिवर्ग-संतुलन, राज्य के ७ अंग, ४-चरणीय वित्त-मॉडल	नैतिकता+समृद्धि+सुख, वित्तीय अनुशासन
4.	आत्म-अनुशासन, २० गुण	२१-२६	इंद्रिय-जय, २० गुण, 'लीड बाय एग्जांपल'	Self-Control, Leadership Qualities
5.	माइंड मैनेजमेंट	२७-३७	इंद्रिय-हाथी रूपक, चेतना के ५ रूप, 'निर्मनस्कता'	Mindfulness, Meditation, Neuroscience
6.	५ पशुओं की चेतावनी	३८-४८	आत्म-विजय > विश्व-विजय, ५ इंद्रिय-लोभ घातक	Addiction, Self-Control, Hedonic Treadmill
7.	६ आंतरिक शत्रु	४९-६०	त्रिवर्ग-संतुलन, ३ व्यसन, ६ षड्रिपु, जितेन्द्रिय का अमरत्व	Emotional Intelligence, Self-Mastery

निष्कर्ष – सुशासन का महा-चक्र

आचार्य कामन्दक के **कामन्दकीय नीतिसार** (सर्ग १, श्लोक १-६०) का यह विस्तृत, गहन और व्यावहारिक ढाँचा हमें न केवल राज्य-प्रबंधन (Statecraft), बल्कि **आत्म-प्रबंधन (Self-Management)** और **जीवन-प्रबंधन (Life-Management)** का संपूर्ण, कालातीत और सार्वभौमिक ज्ञान प्रदान करता है:

१. आधार (श्लोक १-२०): – न्याय, धर्म, और नेतृत्व का आधार **सुरक्षा (Security), संतुलन (Balance), और सप्तांग (Holistic Structure)** है। उपार्जन और पालन दोनों अनिवार्य हैं और सुरक्षा समृद्धि से श्रेष्ठ है।

२. प्रक्रिया (श्लोक २१-३७): – आत्म-अनुशासन (Self-Discipline), इंद्रिय-जय (Self-Control), २० गुण (Competence + Character), और 'लीड बाय एग्जांपल' – यही सच्ची सफलता का मार्ग है। 'निर्मनस्कता' (Mindfulness) मानसिक शांति, एकाग्रता और निर्णय-क्षमता का आधार है।

३. चरमोत्कर्ष (श्लोक ३८-६०): – **आत्म-विजय (Self-Mastery)** ही सबसे बड़ी विजय है और यही एकमात्र स्थायी, अमर-सफलता, समृद्धि और यश का मार्ग है। ५ इंद्रिय-लोभ और ६ आंतरिक शत्रु (षड्रिपु) और ३ बाहरी व्यसन – ये सब चाहे कितने भी बड़े, पराक्रमी, धनी, प्रतिभाशाली व्यक्ति क्यों न हों – उन्हें नष्ट कर देते हैं और केवल **जितेन्द्रिय (Self-Mastered)** व्यक्ति ही चिरकाल (स्थायी/अमर) समृद्धि, यश, सुख और सम्मान को प्राप्त करता है।

मुख्य सीख

- **पहले स्वयं को जीतें** – आत्म-अनुशासन सबसे बड़ा अनुशासन है।
- **फिर परिवार** – परिवार में अनुशासन और संतुलन स्थापित करें।
- **फिर समाज** – समाज में नेतृत्व, न्याय और सुरक्षा प्रदान करें।
- **फिर राज्य** – राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और सेवा का भाव रखें।
- **यही नीतिसार है** – आत्म-जय से लेकर राज्य-जय तक का पूरा मार्ग।

"जो अपने मन को जीत लेता है, वही बिना युद्ध किए संसार का सबसे बड़ा विजेता बन जाता है।"

कामन्दकीय नीतिसार की मूल भावना

कामन्दकीय नीतिसार हमें सिखाता है कि जीवन का सबसे बड़ा, सबसे कठिन, और सबसे महत्वपूर्ण युद्ध बाहरी दुश्मनों, प्रतियोगियों, या परिस्थितियों से नहीं, बल्कि **अपने भीतर के शत्रुओं – काम, क्रोध, लोभ, हर्ष, मान, मद** और **अपनी इंद्रियों, लतों, और आवेगों** – से लड़ा जाता है। **जो इस आंतरिक युद्ध में विजयी होता है, वही सच्चा राजा, सच्चा नेता, और सच्चा विजेता होता है** – और उसका साम्राज्य चाहे वह बाहरी राज्य हो, परिवार हो, संगठन हो, या स्वयं का जीवन – स्थायी, समृद्ध, सुखी, और सम्मानित होता है।

आज, हम सभी अपने-अपने जीवन के 'राजा' हैं – हमारा 'राज्य' हमारा शरीर, मन, परिवार, रिश्ते, करियर, समाज, और संसार है। **क्या हम अपने मन, इंद्रियों, क्रोध, लोभ, अहंकार, और आवेगों को जीत पाएँगे?** यही **कामन्दकीय नीतिसार** का **अमर, कालातीत, और सार्वभौमिक प्रश्न** और **मार्ग** है।

नीतिसार के अनुसार, जो नेता/व्यक्ति अपने मन, इंद्रियों, और ६ आंतरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, हर्ष, मान, मद) का गुलाम है, वह कभी स्थायी, सार्थक, और शांतिपूर्ण सफलता, समृद्धि, या सुख को नहीं पा सकता।

आज के व्यस्त, तनावपूर्ण, और प्रलोभन-भरे जीवन में आपको इन ६ आंतरिक शत्रुओं में से कौन-सा (या कौन-से) सबसे अधिक प्रभावित/विचलित/परेशान करता है? अपने व्यक्तिगत अनुभव, संघर्ष, या सफलता की कहानी नीचे कमेंट बॉक्स में अवश्य साझा करें!

📢 यदि आपको यह अध्ययन उपयोगी लगा, तो इसे उन लोगों तक अवश्य पहुँचाएँ जो भारतीय ज्ञान परंपरा, नेतृत्व, नीति और आत्म-विकास में रुचि रखते हैं। आपका साझा किया गया ज्ञान किसी और के लिए प्रेरणा बन सकता है।

अगर आपको यह विस्तृत, गहन, और शोध-परक (शैक्षणिक/पीयर-रिव्यूड स्तर का) लेख पसंद आया हो/उपयोगी लगा हो, तो इसे अपने परिवार, मित्र, सहकर्मी, शिक्षक, विद्यार्थी, और नेतृत्व/आत्म-विकास/दर्शन/भारतीय-ज्ञान-परंपरा में रुचि रखने वाले सभी लोगों के साथ अवश्य साझा करें।

आत्म-विजय ही सबसे बड़ी विजय है – क्या आप इसके लिए तैयार हैं?

रेफरेंस

1. कामन्दकीय नीतिसार (मूल संस्कृत) – आचार्य कामन्दक – विभिन्न संस्करण (चौखंबा, निर्णय सागर) – मूल संस्कृत पाठ, शब्दार्थ, IAST.
2. The Kautiliya Arthashastra (Part I–III) – R.P. Kangle – University of Bombay, 1965-72; ISBN: 978-8120800427 – चाणक्य के मूल सिद्धांतों की तुलना.
3. The Arthashastra (Penguin Classics) – L.N. Rangarajan – Penguin Books, 1992; ISBN: 978-0140446036 – राज्य-प्रबंधन, अर्थव्यवस्था, न्याय.
4. भारतीय राजनीति शास्त्र का इतिहास – के.पी. जायसवाल – हिंदी अनुवाद, 1934; ISBN: 978-8121502565 – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि.
5. Ancient Indian Political Thought – V.P. Varma – Lakshmi Narain Agarwal, 1959; ISBN: 978-9353450047 – राजनीतिक सिद्धांतों का अकादमिक विश्लेषण.
6. Kamandakiya Nitisara (English Translation) – Dr. Shama Shastri – Oriental Research Institute, Mysore – अंग्रेज़ी अनुवाद, पद्य-संख्या.
7. Hindu Polity: A Constitutional History – K.P. Jayaswal – Motilal Banarsidass, 1978; ISBN: 978-8120801448 – भारतीय राज्य-संरचना.
8. भगवद्गीता (मूल संस्कृत + अनुवाद) – Gita Press, Gorakhpur; ISBN: 978-8129301833 – षड्रिपु, इंद्रिय-जय, कर्म-योग.
9. पतंजलि योगसूत्र – Motilal Banarsidass; ISBN: 978-8120804166 – चित्त-वृत्ति-निरोध, ध्यान, प्रत्याहार.
10. योग: इम्मोर्टैलिटी एंड फ्रीडम – Mircea Eliade – Princeton University Press, 1958; ISBN: 978-0691017641 – अकादमिक दृष्टिकोण, योग-दर्शन.
11. Mindfulness-Based Stress Reduction – Kabat-Zinn, J. – Guilford Press, 1990 – ध्यान और तनाव-निवारण पर वैज्ञानिक शोध.
12. Meditation Programs for Psychological Stress – Goyal et al. – JAMA Internal Medicine, 2014; 174(3):357-368 – ध्यान के वैज्ञानिक लाभ, पीयर-रिव्यूड शोध.